Malayalam Almanac

1885

Ci
XIV
130

N12<526908684 021
LS
ubTÜBINGEN

Price 3

# THE
# MALAYALAM ALMANAC
# 1885
# മലയാള
# പഞ്ചാംഗം
# ൧൮൮൫

| January. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 4 | 11 | 18 | 25 |
| M. | — | 5 | 12 | 19 | 26 |
| T. | — | 6 | 13 | 20 | 27 |
| W. | — | 7 | 14 | 21 | 28 |
| T. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| F. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| S. | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |

| February. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | 1 | 8 | 15 | 22 | — |
| M. | 2 | 9 | 16 | 23 | — |
| T. | 3 | 10 | 17 | 24 | — |
| W. | 4 | 11 | 18 | 25 | — |
| T. | 5 | 12 | 19 | 26 | — |
| F. | 6 | 13 | 20 | 27 | — |
| S. | 7 | 14 | 21 | 28 | — |

| March. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| M. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| T. | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |
| W. | 4 | 11 | 18 | 25 | — |
| T. | 5 | 12 | 19 | 26 | — |
| F. | 6 | 13 | 20 | 27 | — |
| S. | 7 | 14 | 21 | 28 | — |

| April. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 5 | 12 | 19 | 26 |
| M. | — | 6 | 13 | 20 | 27 |
| T. | — | 7 | 14 | 21 | 28 |
| W. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| T. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| F. | 3 | 10 | 17 | 24 | — |
| S. | 4 | 11 | 18 | 25 | — |

| May. | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |
| M. | — | 4 | 11 | 18 | 25 | — |
| T. | — | 5 | 12 | 19 | 26 | — |
| W. | — | 6 | 13 | 20 | 27 | — |
| T. | — | 7 | 14 | 21 | 28 | — |
| F. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | — |
| S. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 | — |

| June. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 7 | 14 | 21 | 28 |
| M. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| T. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| W. | 3 | 10 | 17 | 24 | — |
| T. | 4 | 11 | 18 | 25 | — |
| F. | 5 | 12 | 19 | 26 | — |
| S. | 6 | 13 | 20 | 27 | — |

| July. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 5 | 12 | 19 | 26 |
| M. | — | 6 | 13 | 20 | 27 |
| T. | — | 7 | 14 | 21 | 28 |
| W. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| T. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| F. | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |
| S. | 4 | 11 | 18 | 25 | — |

| August. | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| M. | — | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |
| T. | — | 4 | 11 | 18 | 25 | — |
| W. | — | 5 | 12 | 19 | 26 | — |
| T. | — | 6 | 13 | 20 | 27 | — |
| F. | — | 7 | 14 | 21 | 28 | — |
| S. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 | — |

| September. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 6 | 13 | 20 | 27 |
| M. | — | 7 | 14 | 21 | 28 |
| T. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| W. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| T. | 3 | 10 | 17 | 24 | — |
| F. | 4 | 11 | 18 | 25 | — |
| S. | 5 | 12 | 19 | 26 | — |

| October. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 4 | 11 | 18 | 25 |
| M. | — | 5 | 12 | 19 | 26 |
| T. | — | 6 | 13 | 20 | 27 |
| W. | — | 7 | 14 | 21 | 28 |
| T. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| F. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| S. | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |

| November. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| M. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| T. | 3 | 10 | 17 | 24 | — |
| W. | 4 | 11 | 18 | 25 | — |
| T. | 5 | 12 | 19 | 26 | — |
| F. | 6 | 13 | 20 | 27 | — |
| S. | 7 | 14 | 21 | 28 | — |

| December. | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| S. | — | 6 | 13 | 20 | 27 |
| M. | — | 7 | 14 | 21 | 28 |
| T. | 1 | 8 | 15 | 22 | 29 |
| W. | 2 | 9 | 16 | 23 | 30 |
| T. | 3 | 10 | 17 | 24 | 31 |
| F. | 4 | 11 | 18 | 25 | — |
| S. | 5 | 12 | 19 | 26 | — |

MANGALORE
BASEL MISSION BOOK & TRACT DEPOSITORY

Price 3 Annas. വില ൩ അണ.

# മലയാള

# പുസ്തകങ്ങളുടെ പട്ടിക.

## മതസംബന്ധമായ പുസ്തകങ്ങൾ.

ഇവകൾ വിശേഷമായി മൂന്നു വിധം:

൧. കഥാരൂപമായി സദ്ധർമ്മത്തെ പ്രബോധിപ്പിക്കുന്നവ.

൨. സംവാദരൂപേണയും പ്രസംഗരൂപേണയും ഗദ്യപദ്യരൂപേണയും സദ്ധർമ്മത്തെ കുറിച്ചു പ്രബോധിപ്പിക്കുന്ന പുസ്തകങ്ങൾ.

൩. സഹവാസം ഗൃഹകൃത്യം മുതലായവയുടെ സംബന്ധമായ ഹിതോപദേശ പുസ്തകങ്ങൾ.

മേൽ കാണിച്ച മൂന്നു സംഗതികളെ കുറിച്ചുള്ള പുസ്തകങ്ങളുടെ വിവരമായ പട്ടിക മുൻകഴിഞ്ഞ കൊല്ലങ്ങളിലേ പഞ്ചാംഗങ്ങളിൽ നോക്കുക.

൪. ചിത്രത്താലും വാക്കിനാലും വർണ്ണിച്ചിരിക്കുന്ന ദൈവവചനത്തിലേ കഥകൾ.

| | ഉ. | അ. | പൈ. |
|---|---|---|---|
| ൧. നീതിബോധം. ൨. മുടിയനായ പുത്രൻ. ൩. ദാനിയേൽ. ൪. സേനാപതിയായ നയമാൻ...... each | 0 | 0 | 9 |
| ൧. വിശ്വാസപിതാക്കന്മാർ. ൨. മോശചരിത്രം. ൩. ദാവീദിൻ ചരിത്രം. ൪. ഉപമകൾ ൧. ൫. ഉപമകൾ ൨. ൬. സുഭാഷിതങ്ങൾ ൧. ൭. സുഭാഷിതങ്ങൾ ൨. ൮. അതിശയങ്ങൾ...... each | 0 | 1 | 0 |
| മുപ്പത്തുരണ്ടു ചിത്രങ്ങളും അതോടു ഒക്കുന്ന യഥോക്തികളും കൂടിയ യേശുക്രിസ്തുവിന്റെ ചരിത്രം........ | 0 | 6 | 0 |
| താഴെ പറഞ്ഞ പുസ്തകത്തിന്റെ ഓരോ ചിത്രങ്ങൾക്കു... | 0 | 0 | 6 |
| ദായൂദരാജേന കൃതാനി ഗീതാനി ............ | 0 | 0 | 6 |
| വേദോക്തങ്ങൾ ......... | 0 | 0 | 6 |
| ധനവാന്റെ വിരുന്നു.... | 0 | 0 | 1 |
| മാങ്ങകക്കുന്നതു.......... | 0 | 0 | 1 |
| കുട്ടികൾക്കു നല്ലൊരു കത്തു. | 0 | 0 | 1 |
| ബെദുവിമക്കളുടെ വിളക്കു . | 0 | 0 | 1 |
| വാഴത്തോട്ടം .......... | 0 | 0 | 1 |
| മുന്തിരിങ്ങാപ്പഴങ്ങൾ..... | 0 | 0 | 1 |
| ഗണേശൻ .......... | 0 | 0 | 1 |
| നിസ്സാരവാക്കുകൾ .... | 0 | 0 | 1 |
| കള്ളസ്സാക്ഷി .......... | 0 | 0 | 1 |
| ഉത്തമദാസൻ ......... | 0 | 0 | 1 |
| സഞ്ചാരിയുടെ പ്രയാണചരിത്രച്ചുരുക്കം ......... | 0 | 0 | 3 |
| ദമ്പതിധർമ്മം.......... | 0 | 0 | 9 |
| മതവിചാരണ ......... | 0 | 0 | 3 |
| കടമ്പെട്ടിരിക്ക ........ | 0 | 0 | 3 |
| യാക്കോബ് രാമവർമ്മന്റെ ജീവചരിത്രം ......... | 0 | 0 | 6 |
| പൂർവ്വന്മാരുടെ സമ്പ്രദായം .. | 0 | 0 | 1 |
| രണ്ടു ചങ്ങാതികൾ ...... | 0 | 0 | 1 |
| നിത്യവാക്യപ്രബോധിനി . | 0 | 0 | 9 |
| ,, extra bound 0-4-0 & | 0 | 6 | 0 |
| സുവിശേഷ രോമക്കത്തോലിക്കസഭകൾക്കു തമ്മിലുള്ള ഒരുമയും വേറ്പാടും എന്നിവറെറക്കൊണ്ടുള്ള ചോദ്യോത്തരം ........ | 0 | 1 | 6 |
| രണ്ടു പീടികകൾ ....... | 0 | 0 | 1 |
| ധീരശിരസ്സൂൻ എന്ന കുട്ടിയുടെ ചരിത്രം ........ | 0 | 0 | 1 |
| പാഠശാലകളുടെ ഉപയോഗത്തിന്നായിട്ടുള്ള പാട്ടുകൾ | 0 | 4 | 0 |
| പോയിക്കളഞ്ഞവർ..... | 0 | 0 | 1 |
| ദൈവത്തെ ഭയപ്പെടുക... | 0 | 0 | 1 |
| ഒരു വിളി ........... | 0 | 0 | 1 |
| ദുർജ്ജനസംസർഗ്ഗത്താൽ വരുന്ന കഷ്ടം.......... | 0 | 0 | 1 |
| കപിയൊളാനി ........ | 0 | 0 | 1 |
| നീ മോഷ്ടിക്കരുതു ...... | 0 | 0 | 1 |
| പ്രാർത്ഥനാസംഗ്രഹം ..... | 0 | 8 | 0 |
| പ്രസംഗപഞ്ചകം....... | 0 | 1 | 0 |
| ക്രിസ്തൻ ഉണ്ടാക്കിയ നിരപ്പിനെ കുറിച്ചു......... | 0 | 4 | 0 |
| വീണുപോയ മടിശ്ശീല.... | 0 | 0 | 3 |

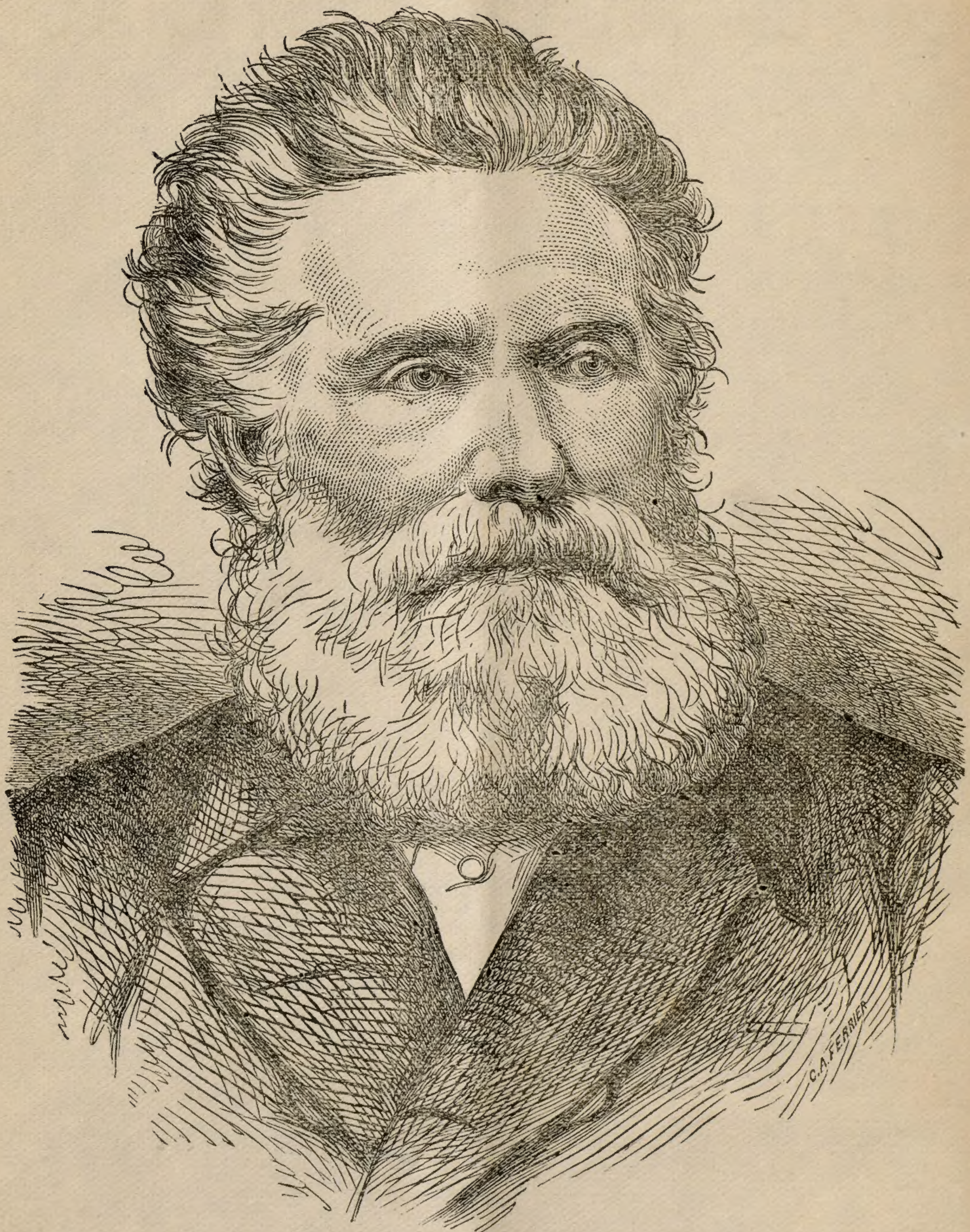


*Rev. Dr. Alexander Duff.*

ഡാക്ടർ അലക്സാന്തർ ഡഫ് ഉപദേഷ്ടാവ്.

# THE
# MALAYALAM ALMANAC

## 1885

# മലയാള
# പഞ്ചാംഗം

## ൧൮൮൫

| | |
|---|---|
| ശാലിവാഹനശകം | ൧൮൦൬—൧൮൦൭ |
| വിക്രമാദിത്യശകം | ൧൯൪൧—൧൯൪൨ |
| കൊല്ലവൎഷം | ൧൦൬൧—൧൦൬൨ |
| മുഹമ്മദീയവൎഷം | ൧൩൦൨—൧൩൦൩ |
| ഫസലിവൎഷം | ൧൨൯൪—൧൨൯൫ |
| യഹൂദവൎഷം | ൫൬൪൫—൫൬൪൬ |
| ചാന്ദ്രമാനവൎഷം | താരണ—പാൎത്ഥിവ |

ക്രിസ്താബ്ദം ൩൬൭ നാൾ

MANGALORE
PRINTED AT THE BASEL MISSION PRESS

UNIV. BIBL. TÜBINGEN

# സ്തുതി.

പാഹി മാം യേശോ സദാ പരിപാഹി മാം യേശോ
പാപമേദുരപാരാവാരപാരദ ചാരുപാദ
വാരിജ സാധുലോകകൌസ്തുഭചന്ദ്ര.
ചരണനതജനശരണ വരഗുണഭരണ ദുൎഗ്ഗുണ
ഹരണനിപുണ. പാഹി മാം യേശോ സദാ
പരിപാഹി മാം യേശോ.
ദീനവത്സല ദോഷഹീന സജ്ജനാധീന
പീനപൌരുഷപരിഹീന സൽക്രിയാലീന
സുജനവനഭവതപന പരിമൃദുവചന
കന്മഷദഹന പാവന. പാഹി മാം യേ
ശോ സദാ പരിപാഹി മാം യേശോ.
യൂദമന്നവഗോത്രജാത കാരുണ്യപാത്ര
പൂതമാനസമിത്ര ദൂതപൂജിതഗാത്ര.
ദുരിതഹര മൃദുചരിത ബഹുജനവിനുത
ഗുരുതരവിഭവചരിത. പാഹി മാം യേ
ശോ സദാ പരിപാഹി മാം യേശോ.
ശിഷ്ടകന്യകാസൂനോ ദുഷ്ടകൈരവഭാനോ
ശ്ലിഷ്ടകാംക്ഷിതധേനോരിഷ്ടപുഷ്ടിദ
തനോ. ഭുവനജനനുതിഭവന മൃതിവ്യ
ഥസഹന ജനിമൃതിവ്യസനദഹന.
പാഹി മാം യേശോ സദാ പരിപാഹി മാം യേശോ.

Ci XIV 130.
~~GK II 119~~

# ചുരുക്കത്തിന്നായി ഇട്ട അടയാളങ്ങളുടെ വിവരം.

## ആഴ്ചകൾ.

| | | | |
|---|---|---|---|
| SUN. | SUNDAY. | ഞ. | ഞായർ. |
| M. | MONDAY. | തി. | തിങ്കൾ. |
| TU. | TUESDAY. | ചൊ. | ചൊവ്വ. |
| W. | WEDNESDAY. | ബു. | ബുധൻ. |
| TH. | THURSDAY. | വ്യ. | വ്യാഴം. |
| F. | FRIDAY. | വെ. | വെള്ളി. |
| S. | SATURDAY. | ശ. | ശനി. |

## നക്ഷത്രങ്ങൾ.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| അ. | അശ്വതി. | മ. | മകം. | മൂ. | മൂലം. |
| ഭ. | ഭരണി. | പൂ. | പൂരം. | പൂ. | പൂരാടം. |
| കാ. | കാൎത്തിക. | ഉ. | ഉത്രം. | ഉ. | ഉത്രാടം. |
| രോ. | രോഹിണി. | അ. | അത്തം. | തി. | തിരുവോണം. |
| മ. | മകയിരം. | ചി. | ചിത്ര. | അ. | അവിട്ടം. |
| തി. | തിരുവാതിര. | ചോ. | ചോതി. | ച. | ചതയം. |
| പു. | പുണൎതം. | വി. | വിശാഖം. | പൂ. | പൂരുരുട്ടാതി. |
| പൂ. | പൂയം. | അ. | അനിഴം. | ഉ. | ഉത്രട്ടാതി. |
| ആ. | ആയില്യം. | തൃ. | തൃക്കേട്ട. | രേ. | രേവതി. |

## തിഥികൾ.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| പ്ര. | പ്രതിപദം. | ഷ. | ഷഷ്ഠി. | ഏ. | ഏകാദശി. |
| ദ്വി. | ദ്വിതീയ. | സ. | സപ്തമി. | ദ്വാ. | ദ്വാദശി. |
| തൃ. | തൃതീയ. | അ. | അഷ്ടമി. | ത്ര. | ത്രയോദശി. |
| ച. | ചതുൎത്ഥി. | ന. | നവമി. | പ. | പതിന്നാങ്ക. |
| പ. | പഞ്ചമി. | ദ. | ദശമി. | വ. | വാവു. |

# JANUARY.

# ജനുവരി.

31 DAYS. — ൩൧ ദിവസം.

പുഷ്യപൌൎണ്ണമാസി ൧-ാംതിയ്യതി. — ധനു — മകരം. — പുഷ്യഅമാവാസി ൧൬-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലിഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൦ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | TH | ൧ | വ്യാ | ൧൯ | ധനു ○ | ൧൩ | റബിലാവൽ | തി | ൧൯ II | വ | ൧൫ |
| 2 | F | ൨ | വെ | ൨൦ | | ൧൪ | | പു | ൧൫ I | പ്ര | ൯ |
| 3 | S | ൩ | ശ | ൨൧ | | ൧൫ | | പൂ | ൧൧ II | ദ്വി | ൩ I |
| 4 | SUN | ൪ | ഞ | ൨൨ | | ൧൬ | | ആ | ൮ II | ച | ൫൯ II |
| 5 | M | ൫ | തി | ൨൩ | | ൧൭ | | മ | ൬ II | പ | ൫൪ II |
| 6 | TU | ൬ | ചൊ | ൨൪ | | ൧൮ | | പൂ | ൫ II | ഷ | ൫൨ |
| 7 | W | ൭ | ബു | ൨൫ | | ൧൯ | | ഉ | ൫ II | സ | ൫൦ II |
| 8 | TH | ൮ | വ്യാ | ൨൬ | | ൨൦ | | അ | ൭ | അ | ൫൦ I |
| 9 | F | ൯ | വെ | ൨൭ | | ൨൧ | | ചി | ൯ II | ന | ൫൧ II |
| 10 | S | ൧൦ | ശ | ൨൮ | | ൨൨ | | ചോ | ൧൨ III | ദ | ൫൩ III |
| 11 | SUN | ൧൧ | ഞ | ൨൯ | | ൨൩ | | വി | ൧൭ I | ഏ | ൫൭ III |
| 12 | M | ൧൨ | തി | ൩൦ | | ൨൪ | | അ | ൨൩ II | ഏ | ൩ III |
| 13 | TU | ൧൩ | ചൊ | ൧ | മകരം | ൨൫ | | തൃ | ൨൮ | ദ്വാ | ൬ |
| 14 | W | ൧൪ | ബു | ൨ | | ൨൬ | | മൂ | ൩൩ III | ത്ര | ൧൦ III |
| 15 | TH | ൧൫ | വ്യാ | ൩ | | ൨൭ | | പൂ | ൩൯ II | പ | ൧൫ II |
| 16 | F | ൧൬ | വെ | ൪ | ● | ൨൮ | | ഉ | ൪൫ | വ | ൨൦ I |
| 17 | S | ൧൭ | ശ | ൫ | | ൨൯ | | തി | ൫൦ | പ്ര | ൨൪ I |
| 18 | SUN | ൧൮ | ഞ | ൬ | | ൧ | ൧൩൦൨ റബിലാഖർ | അ | ൫൪ I | ദ്വി | ൨൭ I |
| 19 | M | ൧൯ | തി | ൭ | | ൨ | | ച | ൫൭ II | തൃ | ൨൯ II |
| 20 | TU | ൨൦ | ചൊ | ൮ | | ൩ | | പൂ | ൫൯ II | ച | ൩൦ I |
| 21 | W | ൨൧ | ബു | ൯ | | ൪ | | പൂ | III | പ | ൩൦ |
| 22 | TH | ൨൨ | വ്യാ | ൧൦ | | ൫ | | ഉ | II | ഷ | ൨൮ III |
| 23 | F | ൨൩ | വെ | ൧൧ | | ൬ | | അ | ൫൯ II | സ | ൨൫ I |
| 24 | S | ൨൪ | ശ | ൧൨ | | ൭ | | ഭ | ൫൭ | അ | ൨൧ |
| 25 | SUN | ൨൫ | ഞ | ൧൩ | | ൮ | | കാ | ൫൩ III | ന | ൧൬ |
| 26 | M | ൨൬ | തി | ൧൪ | | ൯ | | രോ | ൫൦ | ദ | ൧൦ I |
| 27 | TU | ൨൭ | ചൊ | ൧൫ | | ൧൦ | | മ | ൪൫ III | ഏ | ൩ III |
| 28 | W | ൨൮ | ബു | ൧൬ | | ൧൧ | | തി | ൪൧ I | ത്ര | ൫൭ I |
| 29 | TH | ൨൯ | വ്യാ | ൧൭ | | ൧൨ | | പു | ൩൭ | പ | ൫൧ |
| 30 | F | ൩൦ | വെ | ൧൮ | ○ | ൧൩ | | പൂ | ൩൩ | വ | ൪൫ |
| 31 | S | ൩൧ | ശ | ൧൯ | | ൧൪ | | ആ | ൨൯ III | പ്ര | ൩൯ III |

# ജനവരി.

നിത്യജീവൻ എന്നതു, സത്യമായുള്ള ഏകദൈവമാകുന്ന
നിന്നെയും നീ അയച്ച യേശു ക്രിസ്തുവിനെയും അറിയുന്നതു തന്നേ
ആകുന്നു. യോഹ. ൧൭, ൩.

| തീയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | |
| | | | | | ഉച്ചതി. | | രാവിലേ | | |
| ൧ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൧൭ | ൬ | ൨൯ | ആണ്ടുപിറപ്പു്. |
| ൨ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൭ | ൧൦ | ൭ | ൩൪ | കുട്ടച്ചായി തുടങ്ങും. |
| ൩ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൮ | ൧൦ | ൮ | ൨൩ | |
| ൪ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൮ | ൪൬ | ൯ | ൧൧ | |
| ൫ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൯ | ൩൪ | ൯ | ൫൬ | കൊട്ടവായ്യൂർ തേർ ൨ നാൾ. |
| ൬ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൧൦ | ൧൮ | ൧൦ | ൪൦ | പ്രകാശനദിനം. |
| ൭ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൪൦ | ൧൧ | ൨ | ൧൧ | ൨൫ | തൃത്താലയ്യൂട്ടു. |
| ൮ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൪൦ | ൧൧ | ൪൦ | ൦ | ൧൨ | |
| ൯ | ൬ | ൨൦ | ൫ | ൪൦ | രാവിലേ | | ഉച്ചതി. | | |
| ൧൦ | ൬ | ൨൦ | ൫ | ൪൦ | ൧ | ൨൧ | ൧ | ൪൫ | തൃത്താല ഉത്സവം. |
| ൧൧ | ൬ | ൨൦ | ൫ | ൪൧ | ൨ | ൮ | ൨ | ൩൦ | പ്രകാശനദിനത്തിന്നു പിൻ ൧-ാം ഞാ. |
| ൧൨ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൨ | ൫൫ | ൩ | ൧൮ | ൧ നാഴികെക്കു സംക്രമം. ഏകാ. പ്ര. |
| ൧൩ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൩ | ൪൩ | ൪ | ൮ | പ്രദോഷവ്രതം. [ദഗ്ധയോഗം |
| ൧൪ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൪ | ൩൩ | ൪ | ൫൭ | കുട്ടച്ചായി കഴിയും പുഴാതിയമ്പലത്തി |
| ൧൫ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൫ | ൨൨ | ൫ | ൪൬ | അമാവാസിവ്രതം. [ൽ ഉത്സവാരംഭം. |
| ൧൬ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൧ | ൬ | ൨൪ | പുഷ്യാവസാനം. |
| ൧൭ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൫൭ | ൭ | ൧൩ | തിരുവങ്ങാട്ടമ്പലത്തിൽ പട്ടത്താനം. |
| ൧൮ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൭ | ൪൬ | ൮ | ൯ | എടച്ചായി. പ്രകാശനദിനത്തിന്നു |
| ൧൯ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൮ | ൨൦ | ൮ | ൫൬ | പിൻ ൨-ാം ഞാ. |
| ൨൦ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൯ | ൧൬ | ൯ | ൩൮ | ദഗ്ധയോഗം. ചിറക്കൽ പുതിയകാ |
| ൨൧ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൪൨ | ൯ | ൫൯ | ൧൦ | ൧൪ | വിൽ ഉത്സവാരംഭം. |
| ൨൨ | ൬ | ൧൮ | ൫ | ൪൨ | ൧൦ | ൫൦ | ൧൧ | ൧൯ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. എടച്ചായി. ദഗ്ധയോ. |
| ൨൩ | ൬ | ൧൮ | ൫ | ൪൨ | ൧൧ | ൪൩ | രാവിലേ | | ദഗ്ധയോഗം. |
| ൨൪ | ൬ | ൧൮ | ൫ | ൪൩ | ഉച്ചതി. | | ൧ | ൪൯ | ദഗ്ധയോഗം. [ന്നു പിൻ ൩-ാം ഞാ. |
| ൨൫ | ൬ | ൧൭ | ൫ | ൪൩ | ൨ | ൨൯ | ൨ | ൫൦ | പുഴക്കരേത്തുത്സ. പ്രകാശനദിനത്തി |
| ൨൬ | ൬ | ൧൭ | ൫ | ൪൪ | ൩ | ൨൬ | ൩ | ൪൯ | എടച്ചായി. ദഗ്ധ. കടലായി ഉത്സവാ |
| ൨൭ | ൬ | ൧൭ | ൫ | ൪൪ | ൪ | ൨൩ | ൪ | ൪൦ | ഏകാദശിവ്രതം. [രംഭം. |
| ൨൮ | ൬ | ൧൬ | ൫ | ൪൪ | ൫ | ൨൦ | ൫ | ൩൮ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൨൯ | ൬ | ൧൬ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൭ | ൬ | ൨൯ | കുട്ടച്ചായി തുടങ്ങും ൧൨ നാൾ. |
| ൩൦ | ൬ | ൧൬ | ൫ | ൪൫ | ൭ | ൧൦ | ൭ | ൩൪ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. പഴനിത്തേർ. |
| ൩൧ | ൬ | ൧൫ | ൫ | ൪൫ | ൮ | ൧൦ | ൮ | ൨൩ | |

# FEBRUARY.

28 DAYS.

# ഫിബ്രുവരി.

൨൮ ദിവസം.

മാഘപൌൎണ്ണമാസി (ജനുവരി ൩൦-ാം നു.)

മകരം — കുംഭം.

മാഘഅമാവാസി ൧൫-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലീഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൦ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | SUN | ൧ | ഞ | ൨൦ | മകരം | ൧൫ | റബിലാഖർ | മ | ൨൭ | ദ്വി | ൩൫I |
| 2 | M | ൨ | തി | ൨൧ | | ൧൬ | | പൂ | ൨൫II | തൃ | ൩൧III |
| 3 | Tu | ൩ | ചൊ | ൨൨ | | ൧൭ | | ഉ | ൨൫ | ച | ൨൯III |
| 4 | W | ൪ | ബു | ൨൩ | | ൧൮ | | അ | ൨൫II | പ | ൨൮III |
| 5 | Th | ൫ | വ്യ | ൨൪ | | ൧൯ | | ചി | ൨൭II | ഷ | ൨൯I |
| 6 | F | ൬ | വെ | ൨൫ | | ൨൦ | | ചോ | ൩൦I | സ | ൩൧ |
| 7 | S | ൭ | ശ | ൨൬ | | ൨൧ | | വി | ൩൪I | അ | ൩൩II |
| 8 | SUN | ൮ | ഞ | ൨൭ | | ൨൨ | | അ | ൩൯ | ന | ൩൭I |
| 9 | M | ൯ | തി | ൨൮ | | ൨൩ | | തൃ | ൪൪II | ദ | ൪൧II |
| 10 | Tu | ൧൦ | ചൊ | ൨൯ | | ൨൪ | | മൂ | ൫൦ | ഏ | ൪൬II |
| 11 | W | ൧൧ | ബു | ൧ | കുംഭം | ൨൫ | | പൂ | ൫൭I | ദ്വാ | ൫൧I |
| 12 | Th | ൧൨ | വ്യ | ൨ | | ൨൬ | | പൂ | ൧II | ത്ര | ൫൬ |
| 13 | F | ൧൩ | വെ | ൩ | | ൨൭ | | ഉ | ൭ | ത്ര | I |
| 14 | S | ൧൪ | ശ | ൪ | | ൨൮ | | തി | ൧൧II | പ | ൪ |
| 15 | SUN | ൧൫ | ഞ | ൫ | ● | ൨൯ | | അ | ൧൫I | വ | ൬II |
| 16 | M | ൧൬ | തി | ൬ | | ൩൦ | | ച | ൧൮I | പ്ര | ൮ |
| 17 | Tu | ൧൭ | ചൊ | ൭ | | ൧ | ജമാദിലാവൽ ൧൩൦൨ | പൂ | ൧൯III | ദ്വി | ൮I |
| 18 | W | ൧൮ | ബു | ൮ | | ൨ | | ഉ | ൨൦I | തൃ | ൭I |
| 19 | Th | ൧൯ | വ്യാ | ൯ | | ൩ | | രേ | ൧൯III | ച | ൫ |
| 20 | F | ൨൦ | വെ | ൧൦ | | ൪ | | അ | ൧൮ | പ | ൧I |
| 21 | S | ൨൧ | ശ | ൧൧ | | ൫ | | ഭ | ൧൫I | സ | ൫൭ |
| 22 | SUN | ൨൨ | ഞ | ൧൨ | | ൬ | | കാ | ൧൧III | അ | ൫൧I |
| 23 | M | ൨൩ | തി | ൧൩ | | ൭ | | രോ | ൮ | ന | ൪൫II |
| 24 | Tu | ൨൪ | ചൊ | ൧൪ | | ൮ | | മ | ൩II | ദ | ൩൮III |
| 25 | W | ൨൫ | ബു | ൧൫ | | ൯ | | പു | ൫൯ | ഏ | ൩൨I |
| 26 | Th | ൨൬ | വ്യ | ൧൬ | | ൧൦ | | പൂ | ൫൪III | ദ്വാ | ൨൬ |
| 27 | F | ൨൭ | വെ | ൧൭ | | ൧൧ | | ആ | ൫൧ | ത്ര | ൨൦III |
| 28 | S | ൨൮ | ശ | ൧൮ | | ൧൨ | | മ | ൪൮ | പ | ൧൫I |

# ഫി ബ്രു വ രി.

എല്ലാവരും കൈക്കൊള്ളേണ്ടതും വിശ്വാസ്യവുമായ വചനമാവിതു:
ക്രിസ്തുയേശു പാപികളെ രക്ഷിപ്പാൻ ലോകത്തിൽ വന്നു എന്നുള്ളതു തന്നേ;
അവരിൽ ഞാൻ പ്രധാനി ആകുന്നു. ൧ തിമോ. ൧, ൧൫.

| തിയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | |
| | | | | | രാവിലേ | | ഉച്ചതി. | | |
| ൧ | ൬ | ൧൫ | ൫ | ൪൫ | ൭ | ൪൦ | ൮ | ൧൦ | സപ്തതിദിനം. |
| ൨ | ൬ | ൧൫ | ൫ | ൪൫ | ൮ | ൩൦ | ൮ | ൫൮ | |
| ൩ | ൬ | ൧൫ | ൫ | ൪൫ | ൧൦ | ൨ | ൧൦ | ൨൪ | ദഗ്ധയോഗം. കണ്ണാടിപ്പറമ്പത്തൂട്ടു. |
| ൪ | ൬ | ൧൪ | ൫ | ൪൬ | ൧൦ | ൪൦ | ൧൧ | ൧൦ | |
| ൫ | ൬ | ൧൪ | ൫ | ൪൬ | ൧൧ | ൩൪ | ൧൧ | ൫൬ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. ദഗ്ധയോഗം. |
| ൬ | ൬ | ൧൪ | ൫ | ൪൬ | ഉച്ചതി. | | രാവിലേ | | ദഗ്ധയോഗം. മഞ്ഞാക്കാവിലുത്സവം. |
| ൭ | ൬ | ൧൩ | ൫ | ൪൭ | ൧ | ൮ | ൧ | ൩൩ | ദഗ്ധയോഗം. |
| | | | | | | | | | |
| ൮ | ൬ | ൧൩ | ൫ | ൪൭ | ൧ | ൫൮ | ൨ | ൨൧ | ഷഷ്ടിദിനം. അറക്കിലാട്ടുത്സവം. |
| ൯ | ൬ | ൧൩ | ൫ | ൪൭ | ൨ | ൪൬ | ൩ | ൧൩ | ദഗ്ധയോഗം. |
| ൧൦ | ൬ | ൧൨ | ൫ | ൪൮ | ൩ | ൩൮ | ൪ | ൩ | ൨൯ നാഴി. സംക്രമം. ഏകാദശിവ്ര. |
| ൧൧ | ൬ | ൧൨ | ൫ | ൪൮ | ൪ | ൨൯ | ൪ | ൫൪ | പയ്യാവൂരൂട്ടു. [കൂട്ടച്ചാ. കഴി. ഉച്ചാർ. |
| ൧൨ | ൬ | ൧൨ | ൫ | ൪൮ | ൫ | ൨൧ | ൫ | ൪൬ | പ്രദോഷവ്ര. കല്ലാക്കോട്ടത്തുത്സവം. |
| ൧൩ | ൬ | ൧൧ | ൫ | ൪൮ | ൬ | ൧൧ | ൬ | ൩൨ | അണ്ടലൂർക്കാവിൽ പൊന്മുടിയാരംഭം ൫ |
| ൧൪ | ൬ | ൧൧ | ൫ | ൪൯ | ൭ | ൩ | ൭ | ൨൧ | അമാവാസിവ്ര. [നാ. ശിവരാത്രിവ്ര. |
| | | | | | | | | | |
| ൧൫ | ൬ | ൧൧ | ൫ | ൪൯ | ൭ | ൫൩ | ൮ | ൧൧ | എടച്ചായി. മാഘാവ. നോമ്പിന്മുമ്പെ. |
| ൧൬ | ൬ | ൧൦ | ൫ | ൪൯ | ൮ | ൪൬ | ൯ | ൧൩ | ഏച്ചൂർക്കോട്ടത്തു. മത്താ. നോമ്പു ആരം. |
| ൧൭ | ൬ | ൧൦ | ൫ | ൪൯ | ൯ | ൪൦ | ൧൦ | ൭ | വയരളത്തുമണോളിക്കാ. ഉത്സ. ൨നാ. |
| ൧൮ | ൬ | ൧൦ | ൫ | ൪൯ | ൧൦ | ൩൪ | ൧൧ | ൦ | കരൂളിക്കാവിൽ ഉത്സ. അനുതാപ ദി. |
| ൧൯ | ൬ | ൯ | ൫ | ൫൦ | രാവിലേ | | ഉച്ചതി. | | എടച്ചായി. തൃക്കണ്ണ്യാപുരത്തുത്സവം. |
| ൨൦ | ൬ | ൯ | ൫ | ൫൦ | ൧ | ൭ | ൧ | ൩൧ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൨൧ | ൬ | ൯ | ൫ | ൫൦ | ൧ | ൫൪ | ൨ | ൧൭ | |
| | | | | | | | | | |
| ൨൨ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൧ | ൨ | ൪൦ | ൩ | ൪ | എടച്ചായി. നോമ്പിൻ ൧-ാം ഞ. |
| ൨൩ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൧ | ൩ | ൨൬ | ൩ | ൪൮ | തിരുവിലപാമല പട്ടപത്തു ഉത്സ. ൩നാ. |
| ൨൪ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൨ | ൪ | ൧൦ | ൪ | ൩൨ | |
| ൨൫ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൨ | ൪ | ൫൫ | ൫ | ൧൭ | ഏകാദശിവ്ര. കൂട്ടച്ചായി തുട. ൧൨നാ. |
| ൨൬ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൩ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൧ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൨൭ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൩ | ൬ | ൮ | ൬ | ൪൩ | |
| ൨൮ | ൬ | ൬ | ൫ | ൫൪ | ൬ | ൫൯ | ൭ | ൨൦ | പൌർണ്ണമാസിവ്ര. തൃക്കണ്ണ്യാ. ഉത്സ. |

# MARCH.

31 DAYS.

# മാൎച്ച്.

൩൧ ദിവസം.

ഫാല്ഗുനപൌൎണ്ണമാസി ൧-ാംതിയ്യതി.

കുംഭം — മീനം.

ഫാല്ഗുനഅമാവാസി ൧൬-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലീഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൨൯ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | SUN | ൧ | ഞാ | ൧൯ | ○ | ൧൩ | | പൂ | ൪൬ | വ | ൧൧ |
| 2 | M | ൨ | തി | ൨൦ | | ൧൪ | | ഉ | ൪൪III | പ്ര | ൮ |
| 3 | Tu | ൩ | ചൊ | ൨൧ | | ൧൫ | | അ | ൪൪III | ദ്വി | ൬II |
| 4 | W | ൪ | ബു | ൨൨ | | ൧൬ | | ചി | ൪൬ | തൃ | ൬I |
| 5 | Th | ൫ | വ്യാ | ൨൩ | | ൧൭ | | ചോ | ൪൮I | ച | ൭ |
| 6 | F | ൬ | വെ | ൨൪ | | ൧൮ | | വി | ൫൧II | പ | ൯II |
| 7 | S | ൭ | ശ | ൨൫ | കുംഭം | ൧൯ | ജമാദിലാവൽ | അ | ൫൫II | ഷ | ൧൧III |
| 8 | SUN | ൮ | ഞാ | ൨൬ | | ൨൦ | | അ | ൧ | സ | ൧൬I |
| 9 | M | ൯ | തി | ൨൭ | | ൨൧ | | തൃ | ൬II | അ | ൨൦III |
| 10 | Tu | ൧൦ | ചൊ | ൨൮ | | ൨൨ | | മൂ | ൧൨I | ന | ൨൫II |
| 11 | W | ൧൧ | ബു | ൨൯ | | ൨൩ | | പൂ | ൧൮ | ദ | ൩൦I |
| 12 | Th | ൧൨ | വ്യാ | ൩൦ | | ൨൪ | | ഉ | ൨൩II | ഏ | ൩൪III |
| 13 | F | ൧൩ | വെ | ൧ | | ൨൫ | | തി | ൨൮II | ദ്വാ | ൩൮III |
| 14 | S | ൧൪ | ശ | ൨ | | ൨൬ | | അ | ൩൩ | ത്ര | ൪൨ |
| 15 | SUN | ൧൫ | ഞാ | ൩ | | ൨൭ | | ച | ൩൬II | പ | ൪൫I |
| 16 | M | ൧൬ | തി | ൪ | ● | ൨൮ | | പൂ | ൩൮III | വ | ൪൫ |
| 17 | Tu | ൧൭ | ചൊ | ൫ | | ൨൯ | | ഉ | ൪൦ | പ്ര | ൪൪II |
| 18 | W | ൧൮ | ബു | ൬ | | ൩൦ | | രേ | ൪൦ | ദ്വി | ൪൩ |
| 19 | Th | ൧൯ | വ്യാ | ൭ | | ൧ | | അ | ൩൯I | തൃ | ൪൦II |
| 20 | F | ൨൦ | വെ | ൮ | | ൨ | | ഭ | ൩൬II | ച | ൩൫III |
| 21 | S | ൨൧ | ശ | ൯ | | ൩ | ൧൨൭൦ | കാ | ൩൩II | പ | ൩൧ |
| 22 | SUN | ൨൨ | ഞാ | ൧൦ | | ൪ | | രോ | ൨൯III | ഷ | ൨൫ |
| 23 | M | ൨൩ | തി | ൧൧ | മീനം | ൫ | | മ | ൨൫II | സ | ൧൮II |
| 24 | Tu | ൨൪ | ചൊ | ൧൨ | | ൬ | | തി | ൨൧I | അ | ൧൨I |
| 25 | W | ൨൫ | ബു | ൧൩ | | ൭ | | പു | ൧൭ | ന | ൫III |
| 26 | Th | ൨൬ | വ്യാ | ൧൪ | | ൮ | ജമാദിലാഖെർ | പൂ | ൧൧II | ഏ | ൫൯I |
| 27 | F | ൨൭ | വെ | ൧൫ | | ൯ | | ആ | ൯II | ദ്വാ | ൫൪I |
| 28 | S | ൨൮ | ശ | ൧൬ | | ൧൦ | | മ | ൬III | ത്ര | ൪൯II |
| 29 | SUN | ൨൯ | ഞാ | ൧൭ | | ൧൧ | | പൂ | ൩III | പ | ൪൪III |
| 30 | M | ൩൦ | തി | ൧൮ | ○ | ൧൨ | | ഉ | ൪II | വ | ൪൩III |
| 31 | Tu | ൩൧ | ചൊ | ൧൯ | | ൧൩ | | അ | ൫ | പ്ര | ൪൨III |

# മാൎച്ച്.

മഹാദൈവവും നമ്മുടെ രക്ഷിതാവുമായ യേശുക്രിസ്തുവിന്റെ
മഹത്വത്തിൻ പ്രത്യക്ഷതെക്കായിട്ടും
കാത്തുകൊണ്ടു [ജീവിച്ചു പോരേണ്ടതിന്നു] തന്നേ. തീതൊസ് ൨, ൧൪.

| തിയ്യതി | സൂര്യോദയാസ്തമയം മണി | മിനിട്ട് | മണി | മിനിട്ട് | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം മണി | മിനിട്ട് | മണി | മിനിട്ട് | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | ഉച്ചതി. | | രാവിലെ | | |
| ൧ | ൬ | ൬ | ൫ | ൫൪ | ൬ | ൧൭ | ൬ | ൩൨ | നീലേശ്വരത്തുത്സവം. നോ. ൨-ാം ഞ. |
| ൨ | ൬ | ൬ | ൫ | ൫൪ | ൭ | ൧൦ | ൭ | ൩൦ | വെങ്കിടാചലത്തുത്സവം. |
| ൩ | ൬ | ൫ | ൫ | ൫൫ | ൮ | ൯ | ൯ | ൨൩ | ചക്കരക്കുളങ്ങരത്തുത്സവം. |
| ൪ | ൬ | ൫ | ൫ | ൫൫ | ൮ | ൫൬ | ൮ | ൧൦ | തളിപ്പറമ്പത്തുത്സവം. |
| ൫ | ൬ | ൫ | ൫ | ൫൫ | ൯ | ൩൪ | ൯ | ൫൬ | തൃച്ചമ്മരത്തും പുത്തലത്തും ഉത്സവം. |
| ൬ | ൬ | ൪ | ൫ | ൫൫ | ൧൦ | ൧൭ | ൯ | ൪൦ | ചീറുമ്പക്കാവിൽ താലപ്പൊലി. |
| ൭ | ൬ | ൪ | ൫ | ൫൫ | ൧൧ | ൨ | ൧൦ | ൨൫ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. കയിപ്പങ്ങാട്ടു തിറ. |
| ൮ | ൬ | ൪ | ൫ | ൫൬ | ൧൧ | ൪൫ | ൧൧ | ൧൨ | നോമ്പിൻ ൩-ാം ഞ. |
| ൯ | ൬ | ൪ | ൫ | ൫൬ | രാവിലെ | | ഉച്ചതി. | | [താലപ്പൊലി. |
| ൧൦ | ൬ | ൪ | ൫ | ൫൬ | ൧ | ൨൦ | ൦ | ൪൬ | കൂട്ടച്ചായി കഴിയും. പുല്ല്യോട്ടുങ്കാവിൽ |
| ൧൧ | ൬ | ൩ | ൫ | ൫൬ | ൨ | ൮ | ൧ | ൩൦ | |
| ൧൨ | ൬ | ൩ | ൫ | ൫൭ | ൨ | ൫൯ | ൨ | ൨൦ | ൧൭ നാഴികെക്കു സംക്രമം. ഏ. വ്രതം. |
| ൧൩ | ൬ | ൨ | ൫ | ൫൭ | ൩ | ൪൪ | ൩ | ൯ | പുളിക്കോല്ക്കാവിൽ കോലം ധരിക്ക. |
| ൧൪ | ൬ | ൨ | ൫ | ൫൭ | ൪ | ൩൦ | ൪ | ൫൮ | ശനിപ്രദോഷവ്രതം. എടച്ചായി. |
| ൧൫ | ൬ | ൨ | ൫ | ൫൭ | ൫ | ൨൦ | ൪ | ൪൭ | നോമ്പിൻ ൪-ാം ഞ. [നം. |
| ൧൬ | ൬ | ൧ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൧൦ | ൫ | ൨൪ | അമാവാസിവ്രതം. ഫാൽഗുനാവസാ |
| ൧൭ | ൬ | ൧ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൫൯ | ൬ | ൧൪ | ചൈത്രാരംഭം. (മറിയ അറിയിപ്പു). |
| ൧൮ | ൬ | ൧ | ൫ | ൫൮ | ൭ | ൪൭ | ൭ | ൧൫ | എടച്ചായി. ദഗ്ധയോഗം. |
| ൧൯ | ൬ | ൦ | ൫ | ൫൯ | ൮ | ൨൨ | ൮ | ൫൫ | |
| ൨൦ | ൬ | ൦ | ൫ | ൫൯ | ൯ | ൧൮ | ൮ | ൪൦ | കൊടുങ്ങല്ലൂർ മഹാഭരണി. |
| ൨൧ | ൫ | ൫൯ | ൬ | ൦ | ൧൦ | ൩ | ൧൦ | ൨൫ | പൂരം കളിക്കേണ്ടും ദിവസം. |
| ൨൨ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൧ | ൯ | ൨൦ | ൯ | ൪൩ | ഷ. വ്രതം. എടച്ചായി. നോ. ൫-ാംഞ. |
| ൨൩ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൧ | ൯ | ൧൦ | ൧൦ | ൩൬ | പാലോലമ്പലത്തിൽ താലപ്പൊലി. |
| ൨൪ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൧ | ൧൧ | ൯ | ൧൧ | ൨൫ | വെള്ളൂക്കാവിൽ ഉത്സവം. |
| ൨൫ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൨ | ൧൧ | ൪൦ | രാവിലെ | | കൂട്ടച്ചായി തുടങ്ങും. ൧൨നാൾ. മാക്കോ. |
| ൨൬ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൨ | ഉച്ചതി. | | ൧ | ൭ | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൨൭ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൨ | ൧ | ൨൩ | ൧ | ൫൭ | [ളിൽ ഉത്സവങ്ങൾ പൂരം തളി. |
| ൨൮ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൩ | ൨ | ൨൯ | ൨ | ൫൫ | ശനി പ്ര. വ്രതം. ഭഗവതിക്ഷേത്രങ്ങ |
| ൨൯ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൩ | ൩ | ൨൦ | ൩ | ൪൯ | നഗരപ്രവേശനം. |
| ൩൦ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൩ | ൪ | ൨൬ | ൪ | ൪൦ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. |
| ൩൧ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൫ | ൫ | ൨൦ | ൫ | ൪൨ | |

# APRIL.

30 DAYS.

ഏപ്രിൽ.

൩൦ ദിവസം.

ചൈത്രഅമാവാസി — ൧൫-ാംതിയ്യതി.

മീനം — മേടം.

വൈശാ. പൌർണ്ണമാ. — ൨൯-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലീഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൦ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തീയ്യതി | ആഴ്ച | തീയ്യതി | മാസം | തീയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | W | ൧ | ബു | ൨൦ | മീനം | ൧൪ | ജമാദിലാഖർ | ചി | ൬ II | ദ്വി | ൪൩ |
| 2 | TH | ൨ | വ്യാ | ൨൧ | | ൧൫ | | ചോ | ൯ II | തൃ | ൪൩ I |
| 3 | F | ൩ | വെ | ൨൨ | | ൧൬ | | വി | ൧൩ II | ച | ൪൬ |
| 4 | S | ൪ | ശ | ൨൩ | | ൧൭ | | അ | ൧൮ | പ | ൪൯ I |
| 5 | SUN | ൫ | ഞ | ൨൪ | | ൧൮ | | തൃ | ൨൩ I | ഷ | ൫൩ II |
| 6 | M | ൬ | തി | ൨൫ | | ൧൯ | | മൂ | ൨൯ | സ | ൫൮ |
| 7 | TU | ൭ | ചൊ | ൨൬ | | ൨൦ | | പൂ | ൩൪ III | സ | ൨ III |
| 8 | W | ൮ | ബു | ൨൭ | | ൨൧ | | ഉ | ൪൧ | അ | ൨ II |
| 9 | TH | ൯ | വ്യാ | ൨൮ | | ൨൨ | | തി | ൪൬ | ന | ൧൧ III |
| 10 | F | ൧൦ | വെ | ൨൯ | | ൨൩ | | അ | ൫൦ II | ദ | ൧൫ |
| 11 | S | ൧൧ | ശ | ൩൦ | | ൨൪ | | ച | ൫൪ II | ഏ | ൧൭ III |
| 12 | SUN | ൧൨ | ഞ | ൧ | മേടം | ൨൫ | | പൂ | ൫൭ II | ദ്വാ | ൧൯ I |
| 13 | M | ൧൩ | തി | ൨ | | ൨൬ | | ഉ | ൫൯ II | ത്ര | ൧൯ II |
| 14 | TU | ൧൪ | ചൊ | ൩ | | ൨൭ | | ഉ | ൧ | പ | ൧൮ I |
| 15 | W | ൧൫ | ബു | ൪ | ● | ൨൮ | | അ | ൫൯ II | വ | ൧൬ |
| 16 | TH | ൧൬ | വ്യാ | ൫ | | ൨൯ | | ഭ | ൫൭ II | പ്ര | ൧൩ II |
| 17 | F | ൧൭ | വെ | ൬ | | ൧ | ൧൩൦൨ റജബ് | കാ | ൫൫ I | ദ്വി | ൭ III |
| 18 | S | ൧൮ | ശ | ൭ | | ൨ | | രോ | ൫൧ III | തൃ | ൨ I |
| 19 | SUN | ൧൯ | ഞ | ൮ | | ൩ | | മ | ൪൮ | പ | ൫൧ I |
| 20 | M | ൨൦ | തി | ൯ | | ൪ | | തി | ൪൩ II | ഷ | ൪൯ I |
| 21 | TU | ൨൧ | ചൊ | ൧൦ | | ൫ | | പു | ൩൯ | സ | ൪൨ III |
| 22 | W | ൨൨ | ബു | ൧൧ | | ൬ | | പൂ | ൩൫ | അ | ൩൬ |
| 23 | TH | ൨൩ | വ്യാ | ൧൨ | | ൭ | | ആ | ൩൩ I | ന | ൩൦ I |
| 24 | F | ൨൪ | വെ | ൧൩ | | ൮ | | മ | ൨൮ | ദ | ൨൫ |
| 25 | S | ൨൫ | ശ | ൧൪ | | ൯ | | പൂ | ൨൫ III | ഏ | ൨൦ II |
| 26 | SUN | ൨൬ | ഞ | ൧൫ | | ൧൦ | | ഉ | ൨൪ II | ദ്വാ | ൨൧ II |
| 27 | M | ൨൭ | തി | ൧൬ | | ൧൧ | | അ | ൨൪ II | ത്ര | ൧൫ I |
| 28 | TU | ൨൮ | ചൊ | ൧൭ | | ൧൨ | | ചി | ൨൫ II | പ | ൧൫ |
| 29 | W | ൨൯ | ബു | ൧൮ | ○ | ൧൩ | | ചോ | ൨൭ II | വ | ൧൫ |
| 30 | TH | ൩൦ | വ്യാ | ൧൯ | | ൧൪ | | വി | ൩൧ | പ്ര | ൧൭ |

# ഏപ്രിൽ.

നമ്മുടെ കൎത്താവായ യേശുവെ മരിച്ചവരിൽനിന്നു ഉയിൎപ്പിച്ചവങ്കൽ വിശ്വസിക്കുന്നവരായ നമുക്കും എണ്ണപ്പെട്ടുവാനുള്ളതാകയാൽ നമ്മുടെ നിമിത്തവും കൂടെ [അതു എഴുതപ്പെട്ടതാകുന്നു]. റോമ. ൪, ൨൫.

| തിയ്യതി | സൂര്യോദയാസ്തമയം മണി | മിനിട്ട് | മണി | മിനിട്ട് | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം മണി | മിനിട്ട് | മണി | മിനിട്ട് | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | രാവിലെ | | ഉച്ചതി. | | |
| ൧ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൫ | ൭ | ൩൬ | ൮ | ൧ | ചാലമോലേടത്തും പരിമഠത്തിലും ഉ |
| ൨ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൫ | ൮ | ൨൭ | ൮ | ൫൩ | തിരുവ്യാഴാഴ്ച.. [ത്സവം ൭ നാൾ. |
| ൩ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൫ | ൯ | ൧൮ | ൯ | ൪൫ | തിരുവെള്ളിയാഴ്ച. |
| ൪ | ൫ | ൫൫ | ൬ | ൬ | ൧൦ | ൮ | ൧൦ | ൩൩ | |
| ൫ | ൫ | ൫൫ | ൬ | ൬ | ൧൦ | ൪൦ | ൧൧ | ൧൦ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. പുനരുത്ഥാനനാൾ. |
| ൬ | ൫ | ൫൫ | ൬ | ൬ | ൧൧ | ൩൪ | ൧൧ | ൫൭ | ക്രൂട്ടച്ഛായി കഴിയും. |
| ൭ | ൫ | ൫൪ | ൬ | ൬ | ഉച്ചതി. | | രാവിലെ | | |
| ൮ | ൫ | ൫൪ | ൬ | ൭ | ൧ | ൫ | ൧ | ൩൦ | |
| ൯ | ൫ | ൫൪ | ൬ | ൭ | ൧ | ൫൮ | ൨ | ൨൪ | |
| ൧൦ | ൫ | ൫൪ | ൬ | ൭ | ൨ | ൫൦ | ൩ | ൧൫ | എടച്ചായി. [ഞ്ഞാട്ടു. വിഷുവിളക്കാരം. |
| ൧൧ | ൫ | ൫൩ | ൬ | ൭ | ൩ | ൪൧ | ൪ | ൬ | ൩൮ നാ. സങ്ക്ര. ഏകാ. വ്ര. തിരുവ |
| ൧൨ | ൫ | ൫൩ | ൬ | ൭ | ൪ | ൩൧ | ൪ | ൫൫ | പ്രദോഷവ്രതം. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൩ | ൫ | ൫൨ | ൬ | ൮ | ൫ | ൨൦ | ൫ | ൪൪ | മാവിലാക്കാവിൽ അടി. |
| ൧൪ | ൫ | ൫൨ | ൬ | ൮ | ൬ | ൯ | ൬ | ൩൩ | അമാവാസിവ്രതം. എടച്ചായി. |
| ൧൫ | ൫ | ൫൧ | ൬ | ൮ | ൬ | ൫൮ | ൭ | ൨൨ | ചൈത്രാവസാനം. മാവിലാക്ക. അടി. |
| ൧൬ | ൫ | ൫൧ | ൬ | ൯ | ൭ | ൪൭ | ൮ | ൧൦ | വൈശാഖസ്നാനാരംഭം ൩൦ നാൾ. |
| ൧൭ | ൫ | ൫൧ | ൬ | ൯ | ൮ | ൩൩ | ൮ | ൫൫ | വിഷുവിളക്ക് അവസാനം. ആറാട്ടു. |
| ൧൮ | ൫ | ൫൦ | ൬ | ൯ | ൯ | ൧൮ | ൯ | ൪൦ | എടച്ചായി. |
| ൧൯ | ൫ | ൫൦ | ൬ | ൯ | ൧൦ | ൨ | ൧൦ | ൨൭ | |
| ൨൦ | ൫ | ൫൦ | ൬ | ൯ | ൧൦ | ൫൦ | ൧൧ | ൨ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൨൧ | ൫ | ൪൯ | ൬ | ൧൦ | ൧൧ | ൩൬ | ഉച്ചതി. | | ക്രൂട്ടച്ഛായി തുടങ്ങും ൧൨ നാൾ. |
| ൨൨ | ൫ | ൪൯ | ൬ | ൧൦ | രാവിലെ | | ൦ | ൪൧ | |
| ൨൩ | ൫ | ൪൯ | ൬ | ൧൦ | ൧ | ൧൨ | ൧ | ൩൬ | |
| ൨൪ | ൫ | ൪൮ | ൬ | ൧൧ | ൧ | ൫൯ | ൨ | ൨൩ | മുണ്ടയാമ്പറമ്പിൽ ഉത്സവം ൨ നാൾ. |
| ൨൫ | ൫ | ൪൮ | ൬ | ൧൧ | ൨ | ൪൭ | ൩ | ൧൧ | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൨൬ | ൫ | ൪൮ | ൬ | ൧൧ | ൩ | ൩൪ | ൩ | ൫൮ | പ്രദോഷവ്രതം. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൭ | ൫ | ൪൭ | ൬ | ൧൨ | ൪ | ൨൨ | ൪ | ൪൬ | |
| ൨൮ | ൫ | ൪൭ | ൬ | ൧൨ | ൫ | ൯ | ൫ | ൩൩ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. |
| ൨൯ | ൫ | ൪൭ | ൬ | ൧൨ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൨൧ | കിഴക്കോട്ടുത്സവാരംഭം ൨൮ നാൾ. |
| ൩൦ | ൫ | ൪൬ | ൬ | ൧൩ | ൬ | ൪൪ | ൭ | ൯ | |

# MAY.

31 DAYS.

# മേയി.

൩൧ ദിവസം.

വൈശാഖഅമാവാസി ൧൪-ാംതിയ്യതി.

മേടം—ഇടവം.

ജ്യേഷ്ഠ പൌൎണ്ണമാസി ൨൮-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലീഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൦ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | F | ൧ | വെ | ൨൦ | മേടമാസം | ൧൫ | റജബ് | അ | ൩൫ I | ദ്വി | ൨൦ |
| 2 | S | ൨ | ശ | ൨൧ | | ൧൬ | | തൃ | ൪൦ | തൃ | ൨൩ II |
| 3 | SUN | ൩ | ഞ | ൨൨ | | ൧൭ | | മൂ | ൪൩ II | ച | ൨൮ |
| 4 | M | ൪ | തി | ൨൩ | | ൧൮ | | പൂ | ൫൧ II | പ | ൩൨ III |
| 5 | Tu | ൫ | ചൊ | ൨൪ | | ൧൯ | | ഉ | ൫൭ I | ഷ | ൩൭ II |
| 6 | W | ൬ | ബു | ൨൫ | | ൨൦ | | ഉ | ൨ III | സ | ൪൧ II |
| 7 | Th | ൭ | വ്യ | ൨൬ | | ൨൧ | | തി | ൮ | അ | ൪൩ II |
| 8 | F | ൮ | വെ | ൨൭ | | ൨൨ | | അ | ൧൩ I | ന | ൪൮ II |
| 9 | S | ൯ | ശ | ൨൮ | | ൨൩ | | ച | ൧൨ III | ദ | ൫൦ |
| 10 | SUN | ൧൦ | ഞ | ൨൯ | | ൨൪ | | പൂ | ൧൮ III | ഏ | ൫൧ II |
| 11 | M | ൧൧ | തി | ൩൦ | | ൨൫ | | ഉ | ൧൯ II | ദ്വാ | ൫൧ |
| 12 | Tu | ൧൨ | ചൊ | ൩൧ | | ൨൬ | | രേ | ൧൯ II | ത്ര | ൪൯ II |
| 13 | W | ൧൩ | ബു | ൧ | ഇടവം | ൨൭ | | അ | ൧൮ III | പ | ൪൬ I |
| 14 | Th | ൧൪ | വ്യ | ൨ | 🌑 | ൨൮ | | ഭ | ൧൬ III | വ | ൪൩ II |
| 15 | F | ൧൫ | വെ | ൩ | | ൨൯ | | കാ | ൧൩ III | പ്ര | ൩൭ I |
| 16 | S | ൧൬ | ശ | ൪ | | ൧ | ൧൩൦൨ ശാബാൻ | രോ | ൧൦ | ദ്വി | ൩൧ |
| 17 | SUN | ൧൭ | ഞ | ൫ | | ൨ | | മ | ൬ | തൃ | ൨൪ III |
| 18 | M | ൧൮ | തി | ൬ | | ൩ | | തി | ൧ II | ച | ൧൮ |
| 19 | Tu | ൧൯ | ചൊ | ൭ | | ൪ | | പു | ൫൭ | പ | ൧൧ I |
| 20 | W | ൨൦ | ബു | ൮ | | ൫ | | ആ | ൫൩ | ഷ | ൧൪ III |
| 21 | Th | ൨൧ | വ്യ | ൯ | | ൬ | | മ | ൪൯ II | അ | ൫൯ |
| 22 | F | ൨൨ | വെ | ൧൦ | | ൭ | | പൂ | ൪൬ III | ന | ൫൪ |
| 23 | S | ൨൩ | ശ | ൧൧ | | ൮ | | ഉ | ൪൪ III | ദ | ൫൦ |
| 24 | SUN | ൨൪ | ഞ | ൧൨ | | ൯ | | അ | ൪൪ I | ഏ | ൪൭ II |
| 25 | M | ൨൫ | തി | ൧൩ | | ൧൦ | | ചി | ൪൪ II | ദ്വാ | ൪൧ |
| 26 | Tu | ൨൬ | ചൊ | ൧൪ | | ൧൧ | | ചോ | ൪൬ I | ത്ര | ൪൫ III |
| 27 | W | ൨൭ | ബു | ൧൫ | | ൧൨ | | വി | ൪൯ | പ | ൪൭ |
| 28 | Th | ൨൮ | വ്യ | ൧൬ | 🌕 | ൧൩ | | അ | ൪൨ II | വ | ൪൯ I |
| 29 | F | ൨൯ | വെ | ൧൭ | | ൧൪ | | തൃ | ൪൭ | പ്ര | ൫൨ I |
| 30 | S | ൩൦ | ശ | ൧൮ | | ൧൫ | | തൃ | ൨ I | ദ്വി | ൫൬ I |
| 31 | SUN | ൩൧ | ഞ | ൧൯ | | ൧൬ | | മൂ | ൮ | ദ്വി | III |

# മേയി.

സ്നാനത്തിങ്കൽ അവനോടു കൂടെ അടക്കപ്പെട്ടിട്ടു,
അവനെ മരിച്ചവരിൽനിന്നു ഉയിൎപ്പിച്ച ദൈവത്തിന്റെ സാദ്ധ്യ
ശക്തിയിൻ വിശ്വാസത്താൽ അവനിൽ നിങ്ങളും കൂടെ
ഉയിൎപ്പിക്കപ്പെട്ടു. കൊലൊ. ൨, ൧൨.

| തിയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | |
| | | | | | ഉച്ചതി. | | രാവിലേ | | |
| ൧ | ൫ | ൪൬ | ൬ | ൧൩ | ൭ | ൫൨ | ൮ | ൧൭ | |
| ൨ | ൫ | ൪൬ | ൬ | ൧൩ | ൮ | ൪൩ | ൯ | ൮ | |
| ൩ | ൫ | ൪൬ | ൬ | ൧൩ | ൯ | ൩൪ | ൯ | ൫൯ | കൂട്ടച്ചായി കഴിയും. |
| ൪ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൪ | ൧൦ | ൨൫ | ൧൦ | ൫൧ | |
| ൫ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൪ | ൧൧ | ൧൬ | ൧൧ | ൪൨ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൬ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൪ | രാവിലേ | | ഉച്ചതി. | | |
| ൭ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൫ | ൦ | ൫൯ | ൧ | ൨൫ | എടച്ചായി. |
| ൮ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൫ | ൧ | ൫൨ | ൨ | ൪൯ | |
| ൯ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൫ | ൧ | ൩൮ | ൩ | ൧ | |
| ൧൦ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൧൬ | ൨ | ൩൩ | ൩ | ൫൭ | ഏകാദശിവ്രതം. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൧ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൨൦ | ൩ | ൧൦ | ൪ | ൨൦ | |
| ൧൨ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൨൦ | ൩ | ൫൭ | ൫ | ൮ | ൩൪ നാഴികെക്കു സങ്ക്രമം. പ്രദോഷ |
| ൧൩ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൨൦ | ൪ | ൪൪ | ൫ | ൫൮ | വ്രതം. എടച്ചായി. |
| ൧൪ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൩൩ | ൬ | ൪൭ | അമാവാസിവ്ര. വൈശാഖസ്നാനാവ |
| ൧൫ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൯ | ൬ | ൨൩ | ൭ | ൩൬ | എടച്ചായി. [സാനം. സ്വൎഗ്ഗാ. നാൾ. |
| ൧൬ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൯ | ൭ | ൧൨ | ൮ | ൨൫ | |
| ൧൭ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൯ | ൮ | ൧ | ൯ | ൧൪ | |
| ൧൮ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൯ | ൮ | ൫൦ | ൧൦ | ൩ | കൂട്ടച്ചായി തുടങ്ങും ൧൨ നാൾ. |
| ൧൯ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൮ | ൯ | ൩൯ | ൧൧ | ൫൪ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൦ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൮ | ൧൦ | ൪൮ | ൧൧ | ൪൫ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൨൧ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൮ | ൧൧ | ൫൦ | ൧൨ | ൩൩ | |
| ൨൨ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൮ | ഉച്ചതി. | | രാവിലേ | | |
| ൨൩ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൮ | ൧ | ൩൪ | ൨ | ൧൧ | |
| ൨൪ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൯ | ൨ | ൨൪ | ൨ | ൪൭ | പെന്തകൊസ്ത് നാൾ. ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൨൫ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൯ | ൩ | ൧൧ | ൩ | ൩൪ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൬ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൯ | ൩ | ൫൭ | ൪ | ൨൦ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൨൭ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൧൯ | ൪ | ൪൩ | ൫ | ൫ | |
| ൨൮ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൧൯ | ൫ | ൨൮ | ൫ | ൫൦ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. |
| ൨൯ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൧൯ | ൬ | ൧൨ | ൬ | ൩൬ | |
| ൩൦ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൨൦ | ൭ | ൧ | ൭ | ൨൬ | |
| ൩൧ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൭ | ൫൨ | ൮ | ൧൭ | ത്രിത്വനാൾ കൂട്ടച്ചായി കഴിയും. |

# JUNE.

# ജൂൻ.

30 DAYS.

൩൦ ദിവസം.

ജ്യേഷ്ഠ അമാവാസി ൧൩-ാം തിയ്യതി.

ഇടവം — മിഥുനം.

ആഷാ. പൌൎണ്ണമാസി ൨൭-ാം തിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലിഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൦ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | M | ൧ | തി | ൨൦ | ഇടവം | ൧൭ | ശവ്വാൽ | പൂ | ൧൪ | തൃ | ൫ I |
| 2 | Tu | ൨ | ചൊ | ൨൧ | | ൧൮ | | ഉ | ൧൯ II | ച | ൯ I |
| 3 | W | ൩ | ബു | ൨൨ | | ൧൯ | | തി | ൨൫ | പ | ൧൪ |
| 4 | Th | ൪ | വ്യാ | ൨൩ | | ൨൦ | | അ | ൩൦ | ഷ | ൧൭ II |
| 5 | F | ൫ | വെ | ൨൪ | | ൨൧ | | ച | ൩൪ | സ | ൨൦ |
| 6 | S | ൬ | ശ | ൨൫ | | ൨൨ | | പൂ | ൩൭ | അ | ൨൧ II |
| 7 | SUN | ൭ | ഞ | ൨൬ | | ൨൩ | | ഉ | ൩൯ | ന | ൨൧ III |
| 8 | M | ൮ | തി | ൨൭ | | ൨൪ | | രേ | ൩൯ III | ദ | ൨൦ II |
| 9 | Tu | ൯ | ചൊ | ൨൮ | | ൨൫ | | അ | ൩൯ I | ഏ | ൧൮ I |
| 10 | W | ൧൦ | ബു | ൨൯ | | ൨൬ | | ഭ | ൩൭ III | ദ്വാ | ൧൪ III |
| 11 | Th | ൧൧ | വ്യാ | ൩൦ | | ൨൭ | | കാ | ൩൫ | ത്ര | ൧൦ |
| 12 | F | ൧൨ | വെ | ൩൧ | | ൨൮ | | രോ | ൩൨ | പ | ൪ I |
| 13 | S | ൧൩ | ശ | ൧ | ● | ൨൯ | | മ | ൨൮ | വ | I |
| 14 | SUN | ൧൪ | ഞ | ൨ | മിഥുനം | ൩൦ | | തി | ൨൩ III | ദ്വി | ൫൧ I |
| 15 | M | ൧൫ | തി | ൩ | | ൧ | ദുൽഖാദ് | പു | ൧൯ I | തൃ | ൪൪ II |
| 16 | Tu | ൧൬ | ചൊ | ൪ | | ൨ | | പൂ | ൧൫ | ച | ൩൮ |
| 17 | W | ൧൭ | ബു | ൫ | | ൩ | | ആ | ൧൧ I | പ | ൩൧ III |
| 18 | Th | ൧൮ | വ്യാ | ൬ | | ൪ | | മ | ൮ | ഷ | ൨൬ I |
| 19 | F | ൧൯ | വെ | ൭ | | ൫ | | പൂ | ൫ II | സ | ൨൧ III |
| 20 | S | ൨൦ | ശ | ൮ | | ൬ | | ഉ | ൪ I | അ | ൧൮ I |
| 21 | SUN | ൨൧ | ഞ | ൯ | | ൭ | | അ | ൪ | ന | ൧൬ |
| 22 | M | ൨൨ | തി | ൧൦ | | ൮ | | ചി | ൫ | ദ | ൧൫ |
| 23 | Tu | ൨൩ | ചൊ | ൧൧ | | ൯ | | ചോ | ൭ | ഏ | ൧൫ II |
| 24 | W | ൨൪ | ബു | ൧൨ | | ൧൦ | | വി | ൧൦ I | ദ്വാ | ൧൭ I |
| 25 | Th | ൨൫ | വ്യാ | ൧൩ | | ൧൧ | | അ | ൧൪ II | ത്ര | ൧൯ III |
| 26 | F | ൨൬ | വെ | ൧൪ | | ൧൨ | | തൃ | ൧൯ I | പ | ൨൩ II |
| 27 | S | ൨൭ | ശ | ൧൫ | ☺ | ൧൩ | | മൂ | ൨൪ II | വ | ൨൭ II |
| 28 | SUN | ൨൮ | ഞ | ൧൬ | | ൧൪ | | പൂ | ൩൦ II | പ്ര | ൩൨ |
| 29 | M | ൨൯ | തി | ൧൭ | | ൧൫ | | ഉ | ൩൬ I | ദ്വി | ൩൬ II |
| 30 | Tu | ൩൦ | ചൊ | ൧൮ | | ൧൬ | | തി | ൪൨ | തൃ | ൪൦ III |

# ജൂൻ.

എന്നാൽ നിങ്ങൾ ക്രിസ്തുവിനോട കൂടെ ഉയിൎപ്പിക്കപ്പെട്ടു എങ്കിൽ
ക്രിസ്തു ദൈവത്തിൻ വലഭാഗത്തു ഇരിക്കുന്നേടത്തു മേലുള്ളവ അന്വേഷിപ്പിൻ;
ഭൂമിയിലുള്ളവ അല്ല മേലുള്ളവ തന്നേ വിചാരിപ്പിൻ.

കൊലൊ. ൩, ൧. ൨.

| തീയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം<br>മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം<br>മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | ഉച്ചതി. | | രാവിലേ | | |
| ൧ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൭ | ൪൭ | ൮ | ൪൫ | |
| ൨ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൮ | ൩൩ | ൯ | ൪൦ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൩ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൯ | ൧൮ | ൧൦ | ൨൭ | എടച്ചായി. |
| ൪ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൦ | ൧൦ | ൨ | ൧൧ | ൧൨ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൫ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൦ | ൧൦ | ൫൦ | ഉച്ചതി. | | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൬ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൦ | ൧൧ | ൩൬ | ൦ | ൪൮ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൭ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൦ | രാവിലേ | | ൧ | ൨൫ | എടച്ചായി. ത്രിത്വ. പിൻ ൧-ാം ഞ. |
| ൮ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൦ | ൧ | ൩൦ | ൨ | ൧൨ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൯ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൦ | ൨ | ൧൯ | ൩ | ൨ | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൧൦ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൦ | ൩ | ൧൦ | ൩ | ൫൮ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൧൧ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൦ | ൪ | ൨ | ൪ | ൪൫ | എടച്ചായി. |
| ൧൨ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൪ | ൫൭ | ൫ | ൫ | ൫൭നാ. സങ്ക്ര. അമാവാസിവ്രതം. |
| ൧൩ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൨൦ | ൫ | ൫൦ | ജ്യേഷ്ഠാവസാനം. [പിൻ ൨-ാം ഞ. |
| ൧൪ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൬ | ൧൦ | ൬ | ൩൦ | കൂട്ടച്ചാ. തുടങ്ങും ൧൨ നാൾ. ത്രിത്വ. |
| ൧൫ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൭ | ൨ | ൭ | ൧൦ | |
| ൧൬ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൭ | ൫൫ | ൭ | ൫൮ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൭ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൮ | ൪൯ | ൮ | ൩൫ | |
| ൧൮ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൯ | ൩൩ | ൯ | ൩൦ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൯ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൧൦ | ൧൧ | ൧൦ | ൨൪ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൦ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൧൧ | ൪ | ൧൧ | ൫ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൧൧ | ൩൦ | രാവിലേ | | ത്രിത്വത്തിൻ പിൻ ൩-ാം ഞ. |
| ൨൨ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ഉച്ചതി. | | ൧ | ൩൦ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൩ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൧ | ൫ | ൨ | ൨൪ | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൨൪ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൨ | ൫൮ | ൩ | ൧൫ | പ്രദോഷവ്രതം. യോഹന്നാ. ബപ്തി. |
| ൨൫ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൩ | ൫൦ | ൪ | ൬ | |
| ൨൬ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൪ | ൫൧ | ൪ | ൫൫ | കൂട്ടച്ചായി കഴിയും. |
| ൨൭ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൧ | ൫ | ൪൪ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. |
| ൨൮ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൬ | ൨൦ | ൬ | ൩൧ | ത്രിത്വത്തിൻ പിൻ ൪-ാം ഞ. |
| ൨൯ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൬ | ൯ | ൭ | ൨൨ | |
| ൩൦ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൬ | ൫൮ | ൮ | ൧൦ | എടച്ചായി. |

# JULY.

31 DAYS.

# ജൂലായി.

൩൧ ദിവസം.

ആഷാഢഅമാവാസി — ശ്രാവണപൌർണ്ണമാ.

൧൨-ാംതിയ്യതി. മിഥുനം — കർക്കിടകം. ൨൭-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലീഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൦ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | W | ൧ | ബു | ൧൯ | മിഥുനം | ൧൭ | റംജാൻ | അ | ൪൭ | ച | ൪൨ II |
| 2 | TH | ൨ | വ്യാ | ൨൦ | | ൧൮ | | ച | ൫൧ II | പ | ൪൨ |
| 3 | F | ൩ | വെ | ൨൧ | | ൧൯ | | പൂ | ൫൫ | ഷ | ൪൯ III |
| 4 | S | ൪ | ശ | ൨൨ | | ൨൦ | | ഉ | ൫൭ II | സ | ൫൦ II |
| 5 | SUN | ൫ | ഞ | ൨൩ | | ൨൧ | | രേ | ൫൯ | അ | ൫൦ I |
| 6 | M | ൬ | തി | ൨൪ | | ൨൨ | | അ | ൫൯ I | ന | ൪൮ II |
| 7 | TU | ൭ | ചൊ | ൨൫ | | ൨൩ | | ഭ | ൫൮ II | ദ | ൪൫ II |
| 8 | W | ൮ | ബു | ൨൬ | | ൨൪ | | കാ | ൫൬ II | ഏ | ൪൧ II |
| 9 | TH | ൯ | വ്യാ | ൨൭ | | ൨൫ | | രോ | ൫൩ II | ദ്വാ | ൩൬ I |
| 10 | F | ൧൦ | വെ | ൨൮ | | ൨൬ | | മ | ൫൦ | ത്ര | ൩൦ II |
| 11 | S | ൧൧ | ശ | ൨൯ | | ൨൭ | | തി | ൪൫ III | പ | ൨൪ |
| 12 | SUN | ൧൨ | ഞ | ൩൦ | ● | ൨൮ | | പു | ൪൧ II | വ | ൧൭ |
| 13 | M | ൧൩ | തി | ൩൧ | | ൨൯ | | പൂ | ൩൭ | പ്ര | ൧൦ II |
| 14 | TU | ൧൪ | ചൊ | ൩൨ | | ൧ | ശവ്വാൽ ൧൩൦൨ | ആ | ൩൩ | ദ്വി | ൪ |
| 15 | W | ൧൫ | ബു | ൧ | കർക്കിടകം | ൨ | | മ | ൨൯ I | ച | ൫൮ |
| 16 | TH | ൧൬ | വ്യാ | ൨ | | ൩ | | പൂ | ൨൬ II | പ | ൫൩ |
| 17 | F | ൧൭ | വെ | ൩ | | ൪ | | ഉ | ൨൪ II | ഷ | ൪൮ III |
| 18 | S | ൧൮ | ശ | ൪ | | ൫ | | അ | ൨൩ I | സ | ൪൬ |
| 19 | SUN | ൧൯ | ഞ | ൫ | | ൬ | | ചി | ൨൩ III | അ | ൪൪ I |
| 20 | M | ൨൦ | തി | ൬ | | ൭ | | ചോ | ൨൫ I | ന | ൪൪ |
| 21 | TU | ൨൧ | ചൊ | ൭ | | ൮ | | വി | ൨൭ III | ദ | ൪൪ I |
| 22 | W | ൨൨ | ബു | ൮ | | ൯ | | അ | ൩൦ II | ഏ | ൪൭ |
| 23 | TH | ൨൩ | വ്യാ | ൯ | | ൧൦ | | തൃ | ൩൫ III | ദ്വാ | ൫൦ |
| 24 | F | ൨൪ | വെ | ൧൦ | | ൧൧ | | മൂ | ൪൧ | ത്ര | ൫൩ III |
| 25 | S | ൨൫ | ശ | ൧൧ | | ൧൨ | | പൂ | ൪൬ II | പ | ൫൮ I |
| 26 | SUN | ൨൬ | ഞ | ൧൨ | | ൧൩ | | ഉ | ൫൨ II | വ | ൨ III |
| 27 | M | ൨൭ | തി | ൧൩ | ☺ | ൧൪ | | തി | ൫൮ I | വ | ൭ I |
| 28 | TU | ൨൮ | ചൊ | ൧൪ | | ൧൫ | | തി | ൩ II | പ്ര | ൧൧ I |
| 29 | W | ൨൯ | ബു | ൧൫ | | ൧൬ | | അ | ൮ II | ദ്വി | ൧൫ |
| 30 | TH | ൩൦ | വ്യാ | ൧൬ | | ൧൭ | | ച | ൧൨ II | തൃ | ൧൭ II |
| 31 | F | ൩൧ | വെ | ൧൭ | | ൧൮ | | പൂ | ൧൫ III | ച | ൧൯ I |

# ജൂലായി.

ഗലീലപുരുഷന്മാരേ, നിങ്ങൾ വാനത്തേക്കു
നോക്കി നില്ക്കുന്നതു എന്തു? നിങ്ങളിൽനിന്നു സ്വൎഗ്ഗത്തേക്കു
എടുക്കപ്പെട്ട ഈ യേശു സ്വൎഗ്ഗത്തേക്കു പോകുന്നവനായി നിങ്ങൾ അവനെ
കണ്ട ഈ വിധത്തിൽ തന്നേ വരും, എന്നു പറകയും ചെയ്തു. അപ്പൊ. ൧, ൧൧.

| തിയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | |
| | | | | | ഉച്ചതി. | | രാവിലേ | | |
| ൧ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൮ | ൮ | ൯ | ൩൨ | |
| ൨ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൮ | ൫൯ | ൧൦ | ൩൦ | ദൎശയോഗം. |
| ൩ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൯ | ൪൪ | ൧൧ | ൧൭ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൪ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൧൦ | ൫൮ | ഉച്ചതി. | | എടച്ചായി. |
| ൫ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൨൧ | ൧൧ | ൧൧ | ൧ | ൧ | ത്രിതപം പിൻ ൫-ാം ഞ. |
| ൬ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൧ | രാവിലേ | | ൧ | ൫൭ | |
| ൭ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൧ | ൧ | ൪൮ | ൨ | ൩൬ | |
| ൮ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൧ | ൨ | ൪൦ | ൩ | ൧൫ | എടച്ചായി. ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൯ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൧ | ൩ | ൩൩ | ൩ | ൫൮ | |
| ൧൦ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൧ | ൪ | ൨൭ | ൪ | ൪൩ | പ്രദോഷവ്രതം. [൧൨ നാൾ. |
| ൧൧ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൨൦ | ൫ | ൨൩ | ൫ | ൩൮ | അമാവാസിവ്രതം. ക്രുട്ടച്ചായി തുടങ്ങും |
| ൧൨ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൬ | ൫ | ൬ | ൩൦ | ആഷാഢാവസാനം. ത്രിതപത്തിൻ പിൻ ൬-ാം ഞ. |
| ൧൩ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൬ | ൫൪ | ൭ | ൧൮ | |
| ൧൪ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൭ | ൪൨ | ൮ | ൯ | ൩॥ നാഴികെക്കു സങ്ക്രമം. |
| ൧൫ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൮ | ൩൦ | ൮ | ൫൩ | |
| ൧൬ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൯ | ൧൫ | ൯ | ൩൬ | ദൎശയോഗം. |
| ൧൭ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൨൦ | ൧൦ | ൦ | ൧൦ | ൨൪ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൧൮ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൯ | ൧൦ | ൪൭ | ൧൧ | ൧൦ | |
| ൧൯ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൯ | ൧൧ | ൩൬ | ൧൨ | ൧ | ത്രിതപത്തിൻ പിൻ ൭-ാം ഞ. |
| ൨൦ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൯ | ഉച്ചതി. | | രാവിലേ | | |
| ൨൧ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൮ | ൧ | ൩൫ | ൧ | ൧൯ | |
| ൨൨ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൮ | ൨ | ൧൯ | ൨ | ൩൦ | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൨൩ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൧൮ | ൩ | ൧൪ | ൩ | ൪൫ | ക്രുട്ടച്ചായി കഴിയും. |
| ൨൪ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൧൮ | ൪ | ൨ | ൪ | ൪൦ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൨൫ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൮ | ൪ | ൫൫ | ൫ | ൩൦ | യാക്കോബ്. [൮-ാം ഞ. |
| ൨൬ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൭ | ൫ | ൨൨ | ൬ | ൧൧ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. ത്രിത. പിൻ |
| ൨൭ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൭ | ൬ | ൩ | ൭ | ൪ | എടച്ചായി. |
| ൨൮ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൭ | ൬ | ൫൦ | ൭ | ൫൮ | |
| ൨൯ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൭ | ൭ | ൩൮ | ൮ | ൨൧ | ദൎശയോഗം. |
| ൩൦ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൭ | ൮ | ൮ | ൯ | ൩൨ | |
| ൩൧ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൧൬ | ൮ | ൫൯ | ൧൦ | ൩൦ | |

# AUGUST.

31 DAYS.

# അഗുസ്റ്റ്.

൩൧ ദിവസം.

ശ്രാവണഅമാവാസി ൧൦-ാംതിയ്യതി.

ഭാദ്രപദപൌൎണ്ണമാ. ൨൫-ാംതിയ്യതി.

കൎക്കിടകം — ചിങ്ങം.

| ഇംഗ്ലിഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൧ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | S | ൧ | ശ | ൧൮ | കൎക്കിടകം | ൧൯ | ശവ്വാൽ | ഉ | ൧൭III | പ | ൧൯II |
| 2 | SUN | ൨ | ഞ | ൧൯ | | ൨൦ | | രേ | ൧൮III | ഷ | ൧൮III |
| 3 | M | ൩ | തി | ൨൦ | | ൨൧ | | അ | ൧൮II | സ | ൧൭II |
| 4 | Tu | ൪ | ചൊ | ൨൧ | | ൨൨ | | ഭ | ൧൭ | അ | ൧൩ |
| 5 | W | ൫ | ബു | ൨൨ | | ൨൩ | | കാ | ൧൪III | ന | ൮II |
| 6 | Th | ൬ | വ്യാ | ൨൩ | | ൨൪ | | രോ | ൧൧II | ദ | ൩ |
| 7 | F | ൭ | വെ | ൨൪ | | ൨൫ | | മ | ൭II | ദ്വാ | ൫൬II |
| 8 | S | ൮ | ശ | ൨൫ | | ൨൬ | | തി | ൩I | ത്ര | ൪൯III |
| 9 | SUN | ൯ | ഞ | ൨൬ | | ൨൭ | | പൂ | ൫൯ | പ | ൪൩I |
| 10 | M | ൧൦ | തി | ൨൭ | ● | ൨൮ | | ആ | ൫൪II | വ | ൩൬I |
| 11 | Tu | ൧൧ | ചൊ | ൨൮ | | ൨൯ | | മ | ൫൦II | പ്ര | ൩൦I |
| 12 | W | ൧൨ | ബു | ൨൯ | | ൧ | ൧൩൦൨ | പൂ | ൪൬I | ദ്വി | ൨൫ |
| 13 | Th | ൧൩ | വ്യാ | ൩൦ | | ൨ | | ഉ | ൪൩III | തൃ | ൨൦ |
| 14 | F | ൧൪ | വെ | ൩൧ | | ൩ | | അ | ൪൩I | ച | ൧൬II |
| 15 | S | ൧൫ | ശ | ൩൨ | | ൪ | | ചി | ൪൩ | പ | ൧൫ |
| 16 | SUN | ൧൬ | ഞ | ൧ | ചിങ്ങം | ൫ | | ചോ | ൪൩II | ഷ | ൧൩ |
| 17 | M | ൧൭ | തി | ൨ | | ൬ | | വി | ൪൫II | സ | ൧൩III |
| 18 | Tu | ൧൮ | ചൊ | ൩ | | ൭ | | അ | ൪൮II | അ | ൧൫I |
| 19 | W | ൧൯ | ബു | ൪ | | ൮ | | തൃ | ൫൨II | ന | ൧൭III |
| 20 | Th | ൨൦ | വ്യാ | ൫ | | ൯ | | മൂ | ൫൭II | ദ | ൨൧I |
| 21 | F | ൨൧ | വെ | ൬ | | ൧൦ | | മൂ | ൨III | ഏ | ൨൪I |
| 22 | S | ൨൨ | ശ | ൭ | | ൧൧ | | പൂ | ൮II | ദ്വാ | ൨൯III |
| 23 | SUN | ൨൩ | ഞ | ൮ | | ൧൨ | ദുല്ക്കാദ് | ഉ | ൧൪I | ത്ര | ൩൪II |
| 24 | M | ൨൪ | തി | ൯ | | ൧൩ | | തി | ൨൦ | പ | ൩൮III |
| 25 | Tu | ൨൫ | ചൊ | ൧൦ | ○ | ൧൪ | | അ | ൨൫I | വ | ൪൨III |
| 26 | W | ൨൬ | ബു | ൧൧ | | ൧൫ | | ച | ൨൯III | പ്ര | ൪൬ |
| 27 | Th | ൨൭ | വ്യാ | ൧൨ | | ൧൬ | | പൂ | ൩൩II | ദ്വി | ൪൮I |
| 28 | F | ൨൮ | വെ | ൧൩ | | ൧൭ | | ഉ | ൩൬ | തൃ | ൪൯I |
| 29 | S | ൨൯ | ശ | ൧൪ | | ൧൮ | | രേ | ൩൭II | ച | ൪൯I |
| 30 | SUN | ൩൦ | ഞ | ൧൫ | | ൧൯ | | അ | ൩൮ | പ | ൪൭III |
| 31 | M | ൩൧ | തി | ൧൬ | | ൨൦ | | ഭ | ൩൭I | ഷ | ൪൫III |

# അഗുസ്തു്.

അറിയായ്മയുടെ കാലങ്ങളെ ദൈവം കുറിക്കൊള്ളാതെ ഇരുന്നു, ഇപ്പോഴോ
എല്ലായിടത്തും സകല മനുഷ്യരോടും മാനസാന്തരപ്പെടുവാൻ കല്പിക്കുന്നു. എന്തെന്നാൽ
താൻ നിയമിച്ച പുരുഷനെ കൊണ്ടു ലോകത്തെ നീതിയിൽ
ന്യായം വിധിപ്പിപ്പാൻ അവൻ ഒരു ദിവസത്തെ നിശ്ചയിച്ചു, അവനെ
മരിച്ചവരിൽനിന്നു എഴുന്നീല്പിച്ചതിനാൽ എല്ലാവൎക്കും അതിന്റെ
ഉറപ്പു നല്കിയുമിരിക്കുന്നു. അപ്പൊ. ൧൭, ൩൦. ൩൧.

| തിയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | |
| | | | | | ഉച്ചതി. | | രാവിലെ | | |
| ൧ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൧൬ | ൮ | ൪൦ | ൯ | ൫ | എടച്ചായി. |
| ൨ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൧൬ | ൯ | ൩൦ | ൯ | ൫൭ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. ത്രിതപ. പിൻ ൯-ാം ഞ. |
| ൩ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൧൬ | ൧൦ | ൨൩ | ൧൦ | ൪൯ | |
| ൪ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൫ | ൧൧ | ൧൪ | ൧൧ | ൪൦ | |
| ൫ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൫ | രാവിലെ | | ഉച്ചതി. | | എടച്ചായി. |
| ൬ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൫ | ൦ | ൫൭ | ൧ | ൨൩ | |
| ൭ | ൫ | ൪൧ | ൬ | ൧൪ | ൧ | ൫൦ | ൨ | ൮ | ഏകാദശിവ്രതം. [ങ്ങും ൧൨ നാൾ. |
| ൮ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൧൪ | ൧ | ൮ | ൧ | ൩൨ | ശനിപ്രദോഷവ്രതം. കുട്ടച്ചായി തുട |
| ൯ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൧൪ | ൧ | ൫൫ | ൨ | ൧൮ | ത്രിതപത്തിൻ പിൻ ൧൦-ാം ഞ. |
| ൧൦ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൧൪ | ൨ | ൪൩ | ൩ | ൮ | അമാവാസിവ്രതം. ശ്രാവണാവസാ |
| ൧൧ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൧൪ | ൩ | ൩൦ | ൩ | ൫൧ | നം. ഊട്ടേണ്ടും വാവു. |
| ൧൨ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൧൩ | ൪ | ൧൮ | ൪ | ൪൬ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൩ | ൫ | ൪൩ | ൬ | ൧൩ | ൫ | ൫ | ൫ | ൩൦ | |
| ൧൪ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൧൩ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൨൦ | |
| ൧൫ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൨ | ൬ | ൪൩ | ൭ | ൮ | ൨ നാഴികെക്കു സങ്ക്രമം. |
| ൧൬ | ൫ | ൪൮ | ൬ | ൧൨ | ൭ | ൩൪ | ൮ | ൧ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. ത്രിതപത്തിൻ പിൻ |
| ൧൭ | ൫ | ൪൮ | ൬ | ൧൧ | ൮ | ൨൭ | ൮ | ൫൩ | ൧൧-ാം ഞ. |
| ൧൮ | ൫ | ൪൮ | ൬ | ൧൧ | ൯ | ൧൬ | ൯ | ൪൩ | |
| ൧൯ | ൫ | ൪൯ | ൬ | ൧൧ | ൧൦ | ൬ | ൧൦ | ൩൧ | കുട്ടച്ചായി കഴിയും. |
| ൨൦ | ൫ | ൪൯ | ൬ | ൧൦ | ൧൦ | ൫൭ | ൧൧ | ൨൦ | |
| ൨൧ | ൫ | ൪൯ | ൬ | ൧൦ | ഉച്ചതി. | | രാവിലെ | | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൨൨ | ൫ | ൫൦ | ൬ | ൧൦ | ൧ | ൭ | ൧ | ൩൩ | [ത്രിതപ. പിൻ ൧൨-ാം ഞ. |
| ൨൩ | ൫ | ൫൦ | ൬ | ൧൦ | ൨ | ൧൦ | ൨ | ൨൪ | പ്രദോഷവ്രതം. ഊട്ടേണ്ടും ഉത്രാടം. |
| ൨൪ | ൫ | ൫൦ | ൬ | ൧൦ | ൨ | ൨൪ | ൨ | ൪൫ | എടച്ചായി. ഊട്ടേണ്ടും തിരുവോണം. |
| ൨൫ | ൫ | ൫൦ | ൬ | ൯ | ൩ | ൯ | ൩ | ൩൧ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. |
| ൨൬ | ൫ | ൫൧ | ൬ | ൯ | ൩ | ൫ | ൪ | ൧൬ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൭ | ൫ | ൫൨ | ൬ | ൮ | ൪ | ൪൦ | ൫ | ൩ | |
| ൨൮ | ൫ | ൫൩ | ൬ | ൮ | ൫ | ൨൭ | ൫ | ൪൯ | എടച്ചായി. |
| ൨൯ | ൫ | ൫൪ | ൬ | ൭ | ൬ | ൧൨ | ൬ | ൩൫ | |
| ൩൦ | ൫ | ൫൫ | ൬ | ൭ | ൭ | ൦ | ൭ | ൩൫ | ത്രിതപത്തിൻ പിൻ ൧൩-ാം ഞ. |
| ൩൧ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൬ | ൭ | ൪൯ | ൮ | ൧൫ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |

# SEPTEMBER.

30 DAYS.

ഭാദ്രപദഅമാവാസി

൮-ാം തിയ്യതി.

# സെപ്തംബർ.

൩൦ ദിവസം.

ആശ്വയുജപൌൎണ്ണ്യ.

൨൪-ാം തിയ്യതി.

ചിങ്ങം — കന്നി.

| ഇംഗ്ലിഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൧ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | Tu | ൧ | ചൊ | ൧൭ | ചിങ്ങം | ൨൧ | ജില്ഹായദ് | കാ | ൩൫II | സ | ൪൧I |
| 2 | W | ൨ | ബു | ൧൮ | | ൨൨ | | രോ | ൩൨II | അ | ൩൬I |
| 3 | Th | ൩ | വ്യ | ൧൯ | | ൨൩ | | മ | ൨൯ | ന | ൩൦II |
| 4 | F | ൪ | വെ | ൨൦ | | ൨൪ | | തി | ൨൫ | ദ | ൨൪II |
| 5 | S | ൫ | ശ | ൨൧ | | ൨൫ | | പു | ൨൦II | ഏ | ൧൭II |
| 6 | SUN | ൬ | ഞ | ൨൨ | | ൨൬ | | പൂ | ൧൬ | ദ്വാ | ൧൦II |
| 7 | M | ൭ | തി | ൨൩ | | ൨൭ | | ആ | ൧൨ | ത്ര | ൪I |
| 8 | Tu | ൮ | ചൊ | ൨൪ | ● | ൨൮ | | മ | ൮I | വ | ൫൮I |
| 9 | W | ൯ | ബു | ൨൫ | | ൨൯ | | പൂ | ൫I | പ്ര | ൫൩I |
| 10 | Th | ൧൦ | വ്യ | ൨൬ | | ൩൦ | | ഉ | ൩I | ദ്വി | ൪൯ |
| 11 | F | ൧൧ | വെ | ൨൭ | | ൧ | ജില്ഹജ്ജ് ൧൩൦൨ | അ | ൨I | തൃ | ൪൬I |
| 12 | S | ൧൨ | ശ | ൨൮ | | ൨ | | ചി | ൨I | ച | ൪൪II |
| 13 | SUN | ൧൩ | ഞ | ൨൯ | | ൩ | | ചോ | ൩II | പ | ൪൪ |
| 14 | M | ൧൪ | തി | ൩൦ | | ൪ | | വി | ൬ | ഷ | ൪൫ |
| 15 | Tu | ൧൫ | ചൊ | ൩൧ | | ൫ | | അ | ൯II | സ | ൪൭ |
| 16 | W | ൧൬ | ബു | ൧ | കന്നി ൧൦൬൧ | ൬ | | തൃ | ൧൪ | അ | ൫൦ |
| 17 | Th | ൧൭ | വ്യ | ൨ | | ൭ | | മൂ | ൨൧ | ന | ൫൬II |
| 18 | F | ൧൮ | വെ | ൩ | | ൮ | | പൂ | ൨൪II | ദ | ൫൮I |
| 19 | S | ൧൯ | ശ | ൪ | | ൯ | | ഉ | ൩൦I | ദ | ൩ |
| 20 | SUN | ൨൦ | ഞ | ൫ | | ൧൦ | | തി | ൩൬ | ഏ | ൭II |
| 21 | M | ൨൧ | തി | ൬ | | ൧൧ | | അ | ൪൧II | ദ്വാ | ൧൨ |
| 22 | Tu | ൨൨ | ചൊ | ൭ | | ൧൨ | | ച | ൪൬II | ത്ര | ൧൫II |
| 23 | W | ൨൩ | ബു | ൮ | | ൧൩ | | പൂ | ൫൦II | ച | ൧൮II |
| 24 | Th | ൨൪ | വ്യ | ൯ | ○ | ൧൪ | | ഉ | ൫൪ | വ | ൨൦II |
| 25 | F | ൨൫ | വെ | ൧൦ | | ൧൫ | | രേ | ൫൬ | പ്ര | ൨൧ |
| 26 | S | ൨൬ | ശ | ൧൧ | | ൧൬ | | അ | ൫൭I | ദ്വി | ൨൦II |
| 27 | SUN | ൨൭ | ഞ | ൧൨ | | ൧൭ | | ഭ | ൫൭ | തൃ | ൧൮II |
| 28 | M | ൨൮ | തി | ൧൩ | | ൧൮ | | കാ | ൫൫II | ച | ൧൫I |
| 29 | Tu | ൨൯ | ചൊ | ൧൪ | | ൧൯ | | രോ | ൫൩I | പ | ൧൧ |
| 30 | W | ൩൦ | ബു | ൧൫ | | ൨൦ | | മ | ൫൦I | ഷ | ൫III |

# സെപ്തംബർ.

നിങ്ങൾ മാനസാന്തരപ്പെട്ടു,
ഓരോരുത്തൻ പാപമോചനത്തിന്നായി യേശുക്രിസ്തുവിന്റെ നാമത്തിൽ
സ്നാനപ്പെടുക. അപ്പൊ. ൨, ൩൮.

| തിയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | |
| ൧ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൬ | ൧൦ | ൧൮ | ഉച്ചതി. | | എടച്ചായി. അഷ്ട. രോഹിണി നോല്ക്കേണ്ടും ദിവസം. |
| ൨ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൬ | രാവിലേ | | ൧ | ൨൭ | |
| ൩ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൬ | ൧ | ൦ | ൨ | ൧൬ | |
| ൪ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൬ | ൧ | ൫൨ | ൩ | ൭ | കൂട്ടച്ചായി തുടങ്ങും ൧൨ നാൾ. |
| ൫ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൬ | ൨ | ൪൩ | ൩ | ൫൮ | ഏകാദശിവ്രതം. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൬ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൫ | ൩ | ൩൦ | ൪ | ൪൫ | പ്ര. വ്ര. ദഗ്ദ്ധ. ത്രിത്വ. പി. ൧൪-ാം ഞ. |
| ൭ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൫ | ൪ | ൧൭ | ൫ | ൨൮ | ഊട്ടേണ്ടുംആയില്യം മകം. |
| ൮ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൪ | ൫ | ൩ | ൬ | ൧൯ | അമാവാ. വ്ര. ഭാദ്രപദാവസാനം. |
| ൯ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൪ | ൫ | ൫൪ | ൭ | ൦ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. ആയുധപൂജാരംഭം. |
| ൧൦ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൪ | ൬ | ൪൩ | ൭ | ൪൬ | |
| ൧൧ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൪ | ൭ | ൩൩ | ൮ | ൩൪ | വജ്ജിക്കേണ്ടും അത്തം ചതുൎത്ഥി. |
| ൧൨ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൪ | ൮ | ൨൦ | ൯ | ൧൮ | |
| ൧൩ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൩ | ൯ | ൧൧ | ൧൦ | ൦ | ത്രിത്വത്തിൻ പിൻ ൧൫-ാം ഞ. |
| ൧൪ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൩ | ൧൦ | ൦ | ൧൦ | ൫൪ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൧൫ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൩ | ൧൦ | ൪൯ | ൧൧ | ൪൩ | കൊല്ലം പിറ. സങ്ക്ര. ൪ നാഴികെ. |
| ൧൬ | ൫ | ൫൭ | ൬ | ൨ | ൧൧ | ൩൮ | രാവിലേ | | കൂട്ടച്ചായി കഴിയും. കൊല്ലപ്പകച്ച്. |
| ൧൭ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൨ | ഉച്ചതി. | | ൧ | ൨൧ | സരസ്വതിപൂജാവസാനമഹാനവമി. |
| ൧൮ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൩ | ൦ | ൧൮ | ൨ | ൧൦ | വിദ്യാരംഭദിനം. |
| ൧൯ | ൫ | ൫൮ | ൬ | ൩ | ൧ | ൧൨ | ൨ | ൮ | |
| ൨൦ | ൫ | ൫൯ | ൬ | ൪ | ൨ | ൯ | ൨ | ൫൯ | ഏകാ. വ്ര. ദഗ്ദ്ധയോഗം. എടച്ചായി. ത്രിത്വ. പിൻ ൧൬-ാം ഞ. |
| ൨൧ | ൫ | ൫൯ | ൬ | ൪ | ൨ | ൩൮ | ൩ | ൫൮ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൨൨ | ൫ | ൫൯ | ൬ | ൪ | ൩ | ൩൨ | ൪ | ൫൩ | |
| ൨൩ | ൬ | ൦ | ൬ | ൩ | ൪ | ൨൬ | ൫ | ൪൭ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. |
| ൨൪ | ൬ | ൦ | ൬ | ൨ | ൫ | ൨൧ | ൬ | ൪൧ | എടച്ചായി. |
| ൨൫ | ൬ | ൧ | ൫ | ൫൯ | ൬ | ൧൬ | ൭ | ൩൫ | |
| ൨൬ | ൬ | ൨ | ൫ | ൫൮ | ൭ | ൦ | ൮ | ൨൩ | |
| ൨൭ | ൬ | ൩ | ൫ | ൫൭ | ൭ | ൫൦ | ൯ | ൧൪ | ത്രിത്വത്തിൻ പിൻ ൧൭-ാം ഞ. |
| ൨൮ | ൬ | ൪ | ൫ | ൫൭ | ൮ | ൪൧ | ൧൦ | ൪ | എടച്ചായി. |
| ൨൯ | ൬ | ൫ | ൫ | ൫൬ | ൯ | ൩൮ | ൧൦ | ൫൮ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. മിഖയേൽ. |
| ൩൦ | ൬ | ൬ | ൫ | ൫൬ | ൧൦ | ൨൯ | ൧൧ | ൪൯ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |

# OCTOBER.

31 DAYS.

ആശ്വയുജഅമാവാ.

൮-ാംതിയ്യതി.

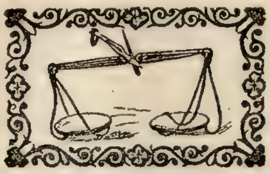

കന്നി—തുലാം.

# ഒക്തോബർ.

൩൧ ദിവസം.

കാൎത്തികപൌൎണ്ണമാ.

൨൩-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലിഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൧ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | TH | ൧ | വ്യാ | ൧൬ | കന്നി | ൨൧ | ദുൽഹജ്ജ് | തി | ൪൬II | അ | ൫൯III |
| 2 | F | ൨ | വെ | ൧൭ | | ൨൨ | | പു | ൪൨ | ന | ൫൩I |
| 3 | S | ൩ | ശ | ൧൮ | | ൨൩ | | പൂ | ൩൭III | ദ | ൪൬III |
| 4 | SUN | ൪ | ഞ | ൧൯ | | ൨൪ | | ആ | ൩൩II | ഏ | ൪൦I |
| 5 | M | ൫ | തി | ൨൦ | | ൨൫ | | മ | ൨൯II | ദ്വാ | ൩൪ |
| 6 | TU | ൬ | ചൊ | ൨൧ | | ൨൬ | | പൂ | ൨൬ | ത്ര | ൨൮II |
| 7 | W | ൭ | ബു | ൨൨ | | ൨൭ | | ഉ | ൨൩I | പ | ൨൩III |
| 8 | TH | ൮ | വ്യാ | ൨൩ | ● | ൨൮ | | അ | ൨൧III | വ | ൨൦I |
| 9 | F | ൯ | വെ | ൨൪ | | ൨൯ | | ചി | ൨൧ | പ്ര | ൧൭III |
| 10 | S | ൧൦ | ശ | ൨൫ | | ൧ | ൧൩൦൩ മുഹറം | ചൊ | ൨൧III | ദ്വി | ൧൬III |
| 11 | SUN | ൧൧ | ഞ | ൨൬ | | ൨ | | വി | ൨൩II | തൃ | ൧൭II |
| 12 | M | ൧൨ | തി | ൨൭ | | ൩ | | അ | ൨൬II | ച | ൧൮III |
| 13 | TU | ൧൩ | ചൊ | ൨൮ | | ൪ | | തൃ | ൩൦II | പ | ൨൧I |
| 14 | W | ൧൪ | ബു | ൨൯ | | ൫ | | മൂ | ൩൫ | ഷ | ൨൪III |
| 15 | TH | ൧൫ | വ്യാ | ൩൦ | | ൬ | | പൂ | ൪൦II | സ | ൨൯II |
| 16 | F | ൧൬ | വെ | ൧ | തുലാം | ൭ | | ഉ | ൪൬ | അ | ൩൩III |
| 17 | S | ൧൭ | ശ | ൨ | | ൮ | | തി | ൫൧III | ന | ൩൮II |
| 18 | SUN | ൧൮ | ഞ | ൩ | | ൯ | | അ | ൫൭II | ദ | ൪൩ |
| 19 | M | ൧൯ | തി | ൪ | | ൧൦ | | അ | ൨II | ഏ | ൪൭I |
| 20 | TU | ൨൦ | ചൊ | ൫ | | ൧൧ | | ച | ൭II | ദ്വാ | ൪൫III |
| 21 | W | ൨൧ | ബു | ൬ | | ൧൨ | | പൂ | ൧൧I | ത്ര | ൪൮I |
| 22 | TH | ൨൨ | വ്യാ | ൭ | | ൧൩ | | ഉ | ൧൪ | പ | ൪൯III |
| 23 | F | ൨൩ | വെ | ൮ | ○ | ൧൪ | | രേ | ൧൫III | വ | ൫൫ |
| 24 | S | ൨൪ | ശ | ൯ | | ൧൫ | | അ | ൧൬I | പ്ര | ൫൩III |
| 25 | SUN | ൨൫ | ഞ | ൧൦ | | ൧൬ | | ഭ | ൧൫III | ദ്വി | ൫൧III |
| 26 | M | ൨൬ | തി | ൧൧ | | ൧൭ | | കാ | ൧൪ | തൃ | ൪൮ |
| 27 | T | ൨൭ | ചൊ | ൧൨ | | ൧൮ | | രോ | ൧൧ | ച | ൪൩III |
| 28 | W | ൨൮ | ബു | ൧൩ | | ൧൯ | | മ | ൭II | പ | ൩൭III |
| 29 | TH | ൨൯ | വ്യാ | ൧൪ | | ൨൦ | | തി | ൩II | ഷ | ൩൧II |
| 30 | F | ൩൦ | വെ | ൧൫ | | ൨൧ | | പൂ | ൫൯I | സ | ൨൫ |
| 31 | S | ൩൧ | ശ | ൧൬ | | ൨൨ | | ആ | ൫൪III | അ | ൧൮ |

# ഒക്തൊബർ.

എന്നോടു കൎത്താവേ, കൎത്താവേ, എന്നു പറയുന്നവൻ എല്ലാം
സ്വൎഗ്ഗരാജ്യത്തിൽ കടക്കയില്ല, സ്വൎഗ്ഗസ്ഥനായ എൻ പിതാവിന്റെ ഇഷ്ടം
ചെയ്യുന്നവനത്രേ. മത്ത. ൭, ൨൧.

| തിയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനിട്ട് | മണി | മിനിട്ട് | മണി | മിനിട്ട് | മണി | മിനിട്ട് | |
| | | | | | രാവിലെ | | ഉച്ചതി. | | |
| ൧ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൬ | ൦ | ൫൮ | | | കൂട്ടച്ചായി തുടങ്ങും ൧൨ നാൾ. |
| ൨ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൬ | ൧ | ൪൯ | ൧ | ൫൩ | |
| ൩ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൬ | ൨ | ൩൭ | ൨ | ൪൮ | |
| ൪ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൬ | ൩ | ൨൨ | ൩ | ൪൪ | ഏകാദശിവ്ര. ദഗ്ദ്ധയോഗം. ത്രിത്വ. |
| ൫ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൬ | ൪ | ൭ | ൪ | ൨൮ | പ്രദോഷവ്രതം. [പിൻ ൧൮-ാം ഞ. |
| ൬ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൬ | ൪ | ൫൦ | ൫ | ൧൨ | |
| ൭ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൬ | ൫ | ൩൪ | ൫ | ൫൬ | അമാവാസിവ്രതം. |
| ൮ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൬ | ൬ | ൨൦ | ൬ | ൪൩ | ആശ്വയുജാവസാനം. |
| ൯ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൬ | ൭ | ൮ | ൭ | ൩൨ | |
| ൧൦ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൬ | ൭ | ൫൭ | ൮ | ൨൧ | |
| ൧൧ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൬ | ൮ | ൪൯ | ൯ | ൧൭ | ത്രിത്വത്തിൻ പിൻ ൧൯-ാം ഞ. |
| ൧൨ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൬ | ൯ | ൪൧ | ൧൦ | ൧൦ | |
| ൧൩ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൫ | ൧൦ | ൩൭ | ൧൧ | ൪ | കൂട്ടച്ചായി കഴിയും. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൪ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൪ | ൧൧ | ൩൨ | ൧൧ | ൫൯ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൧൫ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൩ | ഉച്ചതി. | | രാവിലെ | | ൩൧ നാഴികെക്കു സംക്രമം. |
| ൧൬ | ൬ | ൭ | ൫ | ൫൨ | ൧ | ൧൮ | ൧ | ൪൪ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൭ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൧ | ൨ | ൧൧ | ൨ | ൩൭ | എടച്ചായി. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൮ | ൬ | ൮ | ൫ | ൫൦ | ൩ | ൩ | ൩ | ൩൧ | ത്രിത്വ. പിൻ ൨൦-ാം ഞ. ലൂക്കോസ്സ്. |
| ൧൯ | ൬ | ൯ | ൫ | ൫൦ | ൩ | ൫൬ | ൪ | ൨൨ | ഏകാദശിവ്രതം. ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൦ | ൬ | ൯ | ൫ | ൫൦ | ൪ | ൪൯ | ൫ | ൧൪ | |
| ൨൧ | ൬ | ൯ | ൫ | ൫൦ | ൪ | ൩൪ | ൫ | ൩൦ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൨൨ | ൬ | ൧൦ | ൫ | ൪൯ | ൫ | ൨൩ | ൬ | ൬ | എടച്ചായി. |
| ൨൩ | ൬ | ൧൦ | ൫ | ൪൯ | ൭ | ൧൦ | ൬ | ൫൮ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. |
| ൨൪ | ൬ | ൧൦ | ൫ | ൪൯ | ൮ | ൧ | ൭ | ൪൯ | [ഗുരുജനപ്രസാ. വരുത്തേ. മി. ൨നാ. |
| ൨൫ | ൬ | ൧൧ | ൫ | ൪൯ | ൮ | ൫൩ | ൮ | ൩൯ | ത്രിത്വ. പിൻ ൨൧-ാം ഞ. തുലാപ്പത്തു |
| ൨൬ | ൬ | ൧൧ | ൫ | ൪൯ | ൯ | ൪൧ | ൯ | ൨൯ | എടച്ചായി. |
| ൨൭ | ൬ | ൧൧ | ൫ | ൪൮ | ൧൦ | ൩൦ | ൧൦ | ൧൮ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൮ | ൬ | ൧൧ | ൫ | ൪൮ | ൧൧ | ൨൯ | ൧൧ | ൨ | [ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൨൯ | ൬ | ൧൨ | ൫ | ൪൮ | രാവിലെ | | ൧൧ | ൫൭ | കൂട്ടച്ചായി തുട. ൧൨ നാ. ദഗ്ദ്ധയോ. |
| ൩൦ | ൬ | ൧൨ | ൫ | ൪൮ | ൦ | ൫൮ | ഉച്ചതി. | | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൩൧ | ൬ | ൧൨ | ൫ | ൪൮ | ൧ | ൪൯ | ൧ | ൫൩ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |

# NOVEMBER.

30 DAYS.

കാൎത്തിക അമാവാസി ൬-ാംതിയ്യതി.

തുലാം — വൃശ്ചികം.

# നവെംബർ.

൩൦ ദിവസം.

മാൎഗ്ഗശിരപൌൎണ്ണമാ. ൨൨-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലിഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൧ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | SUN | ൧ | ഞ | ൧൭ | തുലാം | ൨൩ | മുഹറം | മ | ൫൦ II | ന | ൧൨ II |
| 2 | M | ൨ | തി | ൧൮ | | ൨൪ | | പൂ | ൪൬ III | ദ | ൬ III |
| 3 | Tu | ൩ | ചൊ | ൧൯ | | ൨൫ | | ഉ | ൪൩ III | ഏ | ൨ I |
| 4 | W | ൪ | ബു | ൨൦ | | ൨൬ | | അ | ൪൧ II | ത്ര | ൫൮ I |
| 5 | Th | ൫ | വ്യാ | ൨൧ | | ൨൭ | | ചി | ൪൦ II | ച | ൫൫ II |
| 6 | F | ൬ | വെ | ൨൨ | ● | ൨൮ | | ചോ | ൪൦ I | വ | ൫൪ |
| 7 | S | ൭ | ശ | ൨൩ | | ൨൯ | | വി | ൪൧ II | പ്ര | ൫൪ |
| 8 | SUN | ൮ | ഞ | ൨൪ | | ൩൦ | | അ | ൪൪ | ദി | ൫൨ II |
| 9 | M | ൯ | തി | ൨൫ | | ൧ | ൧൩൦൩ | തൃ | ൪൭ | തൃ | ൫൫ |
| 10 | Tu | ൧൦ | ചൊ | ൨൬ | | ൨ | | മൂ | ൫൧ II | ച | ൫൮ |
| 11 | W | ൧൧ | ബു | ൨൭ | | ൩ | | പൂ | ൫൬ II | ച | ൨ I |
| 12 | Th | ൧൨ | വ്യാ | ൨൮ | | ൪ | | പൂ | ൨ | പ | ൭ |
| 13 | F | ൧൩ | വെ | ൨൯ | | ൫ | | ഉ | ൭ III | ഷ | ൧൧ II |
| 14 | S | ൧൪ | ശ | ൩൦ | | ൬ | | തി | ൧൧ II | സ | ൧൬ I |
| 15 | SUN | ൧൫ | ഞ | ൧ | വൃശ്ചികം | ൭ | | അ | ൧൯ | അ | ൨൧ |
| 16 | M | ൧൬ | തി | ൨ | | ൮ | | ച | ൨൪ | ന | ൨൪ I |
| 17 | Tu | ൧൭ | ചൊ | ൩ | | ൯ | | പൂ | ൨൮ I | ദ | ൨൭ III |
| 18 | W | ൧൮ | ബു | ൪ | | ൧൦ | | ഉ | ൩൧ I | ഏ | ൨൯ II |
| 19 | Th | ൧൯ | വ്യാ | ൫ | | ൧൧ | | രേ | ൩൪ II | ദ്വാ | ൩൧ I |
| 20 | F | ൨൦ | വെ | ൬ | | ൧൨ | | അ | ൩൫ I | ത്ര | ൩൦ II |
| 21 | S | ൨൧ | ശ | ൭ | | ൧൩ | | ഭ | ൫൫ I | ച | ൨൯ |
| 22 | SUN | ൨൨ | ഞ | ൮ | ○ | ൧൪ | സഫർ | കാ | ൩൪ II | വ | ൨൬ II |
| 23 | M | ൨൩ | തി | ൯ | | ൧൫ | | രോ | ൩൧ III | പ്ര | ൨൨ |
| 24 | Tu | ൨൪ | ചൊ | ൧൦ | | ൧൬ | | മ | ൨൮ III | ദി | ൧൭ |
| 25 | W | ൨൫ | ബു | ൧൧ | | ൧൭ | | തി | ൨൫ | തൃ | ൧൧ I |
| 26 | Th | ൨൬ | വ്യാ | ൧൨ | | ൧൮ | | പു | ൨൧ I | ച | ൫ II |
| 27 | F | ൨൭ | വെ | ൧൩ | | ൧൯ | | പൂ | ൧൬ I | ഷ | ൫൮ I |
| 28 | S | ൨൮ | ശ | ൧൪ | | ൨൦ | | ആ | ൧൧ III | സ | ൫൨ |
| 29 | SUN | ൨൯ | ഞ | ൧൫ | | ൨൧ | | മ | ൮ | അ | ൪൬ |
| 30 | M | ൩൦ | തി | ൧൬ | | ൨൨ | | പൂ | ൪ II | ന | ൪൮ |

# നവെംബർ.

അധൎമ്മങ്ങൾ മോചിച്ചും പാപങ്ങൾ മറെച്ചും കിട്ടിയവർ ഭാഗ്യവാന്മാർ.
കൎത്താവു പാപത്തെ ഒട്ടും എണ്ണാത്ത ആൾ ഭാഗ്യവാൻ.
റോമക്കാർ ൪, ൭. ൮.

| തിത്ഥി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | |
| | | | | | രാവിലേ | | ഉച്ചതി. | | |
| ൧ | ൬ | ൧൪ | ൫ | ൪൬ | ൧ | ൩൩ | ൧ | ൫൪ | ത്രിതപത്തിൻ പിൻ ൨൨-ാം ഞ. |
| ൨ | ൬ | ൧൪ | ൫ | ൪൬ | ൨ | ൧൬ | ൨ | ൩൭ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൩ | ൬ | ൧൪ | ൫ | ൪൬ | ൩ | ൧ | ൩ | ൨൨ | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൪ | ൬ | ൧൪ | ൫ | ൪൬ | ൩ | ൪൮ | ൪ | ൮ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൫ | ൬ | ൧൫ | ൫ | ൪൫ | ൪ | ൩൩ | ൪ | ൫൪ | |
| ൬ | ൬ | ൧൫ | ൫ | ൪൫ | ൫ | ൨൦ | ൫ | ൪൪ | അമാവാസിവ്ര. കാൎത്തികാവസാനം. |
| ൭ | ൬ | ൧൫ | ൫ | ൪൫ | ൬ | ൧൦ | ൬ | ൩൬ | |
| ൮ | ൬ | ൧൫ | ൫ | ൪൪ | ൭ | ൩ | ൭ | ൨൯ | ത്രിതപത്തിൻ പിൻ ൨൩-ാം ഞ. |
| ൯ | ൬ | ൧൬ | ൫ | ൪൪ | ൭ | ൫൬ | ൮ | ൨൨ | ക്രട്ടച്ചായി കഴിയും. |
| ൧൦ | ൬ | ൧൬ | ൫ | ൪൪ | ൮ | ൪൯ | ൯ | ൧൩ | |
| ൧൧ | ൬ | ൧൬ | ൫ | ൪൪ | ൯ | ൪൦ | ൧൦ | ൬ | |
| ൧൨ | ൬ | ൧൬ | ൫ | ൪൩ | ൧൦ | ൩൦ | ൧൧ | ൧ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൧൩ | ൬ | ൧൭ | ൫ | ൪൩ | ൧൧ | ൨൭ | ൧൧ | ൫൩ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. [രംഭദിനം ൪൧ നാൾ. |
| ൧൪ | ൬ | ൧൭ | ൫ | ൪൩ | ഉച്ചതി. | | രാവിലേ | | ൨൬ നാ. സങ്ക്രമം. എടച്ചായി. മണ്ഡലാ |
| ൧൫ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൪൭ | ൧ | ൧൫ | ൧ | ൪൩ | ത്രിതപത്തിൻ പിൻ ൨൪-ാം ഞ. |
| ൧൬ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൪൭ | ൨ | ൧൧ | ൨ | ൩൮ | |
| ൧൭ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൪൬ | ൩ | ൬ | ൩ | ൩൨ | |
| ൧൮ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൪൬ | ൩ | ൫൮ | ൪ | ൨൩ | ഏകാദശിവ്രതം. എടച്ചായി. |
| ൧൯ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൪൫ | ൪ | ൫൧ | ൫ | ൧൬ | |
| ൨൦ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൪൫ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൬ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൨൧ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൪൪ | ൫ | ൪൦ | ൬ | ൮ | |
| ൨൨ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൪൪ | ൬ | ൩൫ | ൬ | ൫൯ | ത്രി. പിൻ ൨൫-ാം ഞ. പൌൎണ്ണമാസി |
| ൨൩ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൪൩ | ൭ | ൨൫ | ൭ | ൪൮ | വ്രതം. എടച്ചായി. പെങ്കുട്ടികൾ |
| ൨൪ | ൬ | ൨൩ | ൫ | ൪൧ | ൮ | ൧൪ | ൮ | ൩൭ | ക്കു കാൎത്തികകഴിയേണ്ടുംദിനം. |
| ൨൫ | ൬ | ൨൩ | ൫ | ൪൧ | ൯ | ൨ | ൯ | ൨൫ | ക്രട്ടച്ചായി തുടങ്ങും ൧൨ നാൾ. |
| ൨൬ | ൬ | ൨൩ | ൫ | ൪൧ | ൯ | ൫൦ | ൧൦ | ൧൩ | ദഗ്ദ്ധയോഗം. |
| ൨൭ | ൬ | ൨൩ | ൫ | ൪൧ | ൧൦ | ൩൮ | ൧൦ | ൫൬ | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൨൮ | ൬ | ൨൩ | ൫ | ൪൧ | ൧൧ | ൨൦ | ൧൧ | ൪൦ | |
| ൨൯ | ൬ | ൨൩ | ൫ | ൪൧ | രാവിലേ | | ഉച്ചതി. | | ആഗമനനാൾ ഒന്നാമതു. |
| ൩൦ | ൬ | ൨൩ | ൫ | ൪൧ | ൦ | ൫൦ | ൧ | ൧ാ | |

# DECEMBER.

31 DAYS.

# ദിസെംബർ.

൩൧ ദിവസം.

മാൎഗ്ഗശിരഅമാവാസി — ൬-ാംതിയ്യതി.

വൃശ്ചികം — ധനു.

പുഷ്യപൌൎണ്ണമാസി — ൨൧-ാംതിയ്യതി.

| ഇംഗ്ലിഷ് | | | | മലയാളം | | മുഹമ്മദീയം | | കൊല്ലം ൧൦൬൧ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| DATE | DAY | തിയ്യതി | ആഴ്ച | തിയ്യതി | മാസം | തിയ്യതി | മാസം | നക്ഷത്രം | | തിഥി | |
| 1 | Tu | ൧ | ചൊ | ൧൭ | വൃശ്ചികം | ൨൩ | സഫർ | ഉ | ൧II | ദ | ൩൫II |
| 2 | W | ൨ | ബു | ൧൮ | | ൨൪ | | അ | I | ഏ | ൩൨I |
| 3 | Th | ൩ | വ്യാ | ൧൯ | | ൨൫ | | ചോ | ൫൯I | ദ്വാ | ൩൦ |
| 4 | F | ൪ | വെ | ൨൦ | | ൨൬ | | ചോ | I | ത്ര | ൨൯ |
| 5 | S | ൫ | ശ | ൨൧ | | ൨൭ | | വി | ൨ | പ | ൨൯I |
| 6 | SUN | ൬ | ഞ | ൨൨ | ● | ൨൮ | | അ | ൪ | വ | ൩൦III |
| 7 | M | ൭ | തി | ൨൩ | | ൨൯ | | തൃ | ൮ | പ്ര | ൩൩I |
| 8 | Tu | ൮ | ചൊ | ൨൪ | | ൩൦ | | മൂ | ൧൨II | ദ്വി | ൨൭ |
| 9 | W | ൯ | ബു | ൨൫ | | ൧ | ൧ാം | പൂ | ൧൮ | തൃ | ൪൧I |
| 10 | Th | ൧൦ | വ്യാ | ൨൬ | | ൨ | | ഉ | ൨൪I | ച | ൪൫III |
| 11 | F | ൧൧ | വെ | ൨൭ | | ൩ | | തി | ൨൯II | പ | ൫൧ |
| 12 | S | ൧൨ | ശ | ൨൮ | | ൪ | | അ | ൩൫ | ഷ | ൫൫III |
| 13 | SUN | ൧൩ | ഞ | ൨൯ | | ൫ | | ച | ൪൧ | ഷ | I |
| 14 | M | ൧൪ | തി | ൧ | ധനു | ൬ | | പൂ | ൪൫I | സ | ൩III |
| 15 | Tu | ൧൫ | ചൊ | ൨ | | ൭ | | ഉ | ൪൯ | അ | ൬II |
| 16 | W | ൧൬ | ബു | ൩ | | ൮ | | രേ | ൫൨ | ന | ൮ |
| 17 | Th | ൧൭ | വ്യാ | ൪ | | ൯ | | അ | ൫൩III | ദ | ൮II |
| 18 | F | ൧൮ | വെ | ൫ | | ൧൦ | | ഭ | ൫൪II | ഏ | ൭III |
| 19 | S | ൧൯ | ശ | ൬ | | ൧൧ | | കാ | ൫൩III | ദ്വാ | ൫II |
| 20 | SUN | ൨൦ | ഞ | ൭ | | ൧൨ | റബിലാവൽ | രോ | ൫൨I | ത്ര | ൨ |
| 21 | M | ൨൧ | തി | ൮ | ☺ | ൧൩ | | മ | ൪൯III | വ | ൫൭III |
| 22 | Tu | ൨൨ | ചൊ | ൯ | | ൧൪ | | തി | ൪൬I | പ്ര | ൫൨II |
| 23 | W | ൨൩ | ബു | ൧൦ | | ൧൫ | | പു | ൪൨I | ദ്വി | ൪൬III |
| 24 | Th | ൨൪ | വ്യാ | ൧൧ | | ൧൬ | | പൂ | ൩൮ | തൃ | ൪൦I |
| 25 | F | ൨൫ | വെ | ൧൨ | | ൧൭ | | ആ | ൩൩III | ച | ൩൩III |
| 26 | S | ൨൬ | ശ | ൧൩ | | ൧൮ | | മ | ൨൯I | പ | ൨൭II |
| 27 | SUN | ൨൭ | ഞ | ൧൪ | | ൧൯ | | പൂ | ൨൫II | ഷ | ൨൧I |
| 28 | M | ൨൮ | തി | ൧൫ | | ൨൦ | | ഉ | ൨൨II | സ | ൧൬III |
| 29 | Tu | ൨൯ | ചൊ | ൧൬ | | ൨൧ | | അ | ൨൦ | അ | ൧൨II |
| 30 | W | ൩൦ | ബു | ൧൭ | | ൨൨ | | ചി | ൧൮III | ന | ൯II |
| 31 | Th | ൩൧ | വ്യാ | ൧൮ | | ൨൩ | | ചോ | ൧൮II | ദ | ൭III |

# ഡി സെം ബ ർ.

എന്തെന്നാൽ ദൈവം തന്റെ ഏകജാതനായ പുത്രനിൽ വിശ്വസിക്കുന്ന ഒരുത്തനും നശിച്ചുപോകാതെ നിത്യജീവൻ ഉണ്ടാകത്തക്കവണ്ണം അവനെ തന്നു, അത്രത്തോളം ലോകത്തെ സ്നേഹിച്ചു. യോഹ. ൩, ൧൬.

| തിയ്യതി | സൂൎയ്യോദയാസ്തമയം | | | | ചന്ദ്രോദയാസ്തമയം | | | | വിശേഷദിവസങ്ങൾ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | മണി | മിനുട്ട് | |
| | | | | | രാവിലേ | | ഉച്ചതി. | | |
| ൧ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൩ | ൨ | ൩ | ൨൪ | |
| ൨ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൪ | ൩൨ | ൪ | ൨൫ | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൩ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൫ | ൧൮ | ൫ | ൪൧ | |
| ൪ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൫ | ൪൨ | ൬ | ൨൪ | പ്രദോഷവ്രതം. |
| ൫ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൬ | ൪൬ | ൭ | ൮ | [ആഗമനനാൾ രണ്ടാമതു. |
| ൬ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൭ | ൨൯ | ൭ | ൫൨ | അമാവാസിവ്ര. മാൎഗ്ഗശിരാവസാനം. |
| ൭ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൮ | ൧൫ | ൮ | ൩൮ | കുട്ടച്ചായികഴിയും. |
| ൮ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൯ | ൨ | ൯ | ൨൬ | |
| ൯ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൯ | ൫൧ | ൧൦ | ൧൫ | |
| ൧൦ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൧൦ | ൩ | ൧൧ | ൬ | |
| ൧൧ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൧൦ | ൪൩ | ൧൧ | ൫൯ | എടച്ചായി. |
| ൧൨ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൧൧ | ൩൨ | രാവിലേ | | ഷഷ്ഠിവ്രതം. |
| ൧൩ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ഉച്ചതി. | | ൧ | ൪൩ | ൫൬ നാഴി. സങ്ക്രമം. ആഗമനനാൾ മൂന്നാമതു. |
| ൧൪ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൧ | ൧൦ | ൨ | ൩൦ | |
| ൧൫ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൧ | ൫൯ | ൩ | ൧൮ | എടച്ചായി. |
| ൧൬ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൨ | ൫൧ | ൩ | ൫൯ | |
| ൧൭ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൩ | ൪൦ | ൪ | ൪൧ | |
| ൧൮ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൮ | ൪ | ൩൧ | ൫ | ൩൦ | ഏകാദശിവ്രതം. |
| ൧൯ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൩൮ | ൫ | ൨൪ | ൬ | ൧൦ | ശനിപ്രദോഷവ്രതം. എടച്ചായി. |
| ൨൦ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൩൮ | ൬ | ൪ | ൫ | ൩൦ | ആഗമനനാൾ നാലാമതു. |
| ൨൧ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൩൮ | ൭ | ൨൧ | ൭ | ൪൫ | പൌൎണ്ണമാസിവ്രതം. [ത്തുക്കാവിൽ ഉ. |
| ൨൨ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൩൮ | ൮ | ൧൨ | ൮ | ൩൭ | കുട്ടച്ചാ. തുട. ൧൨നാ. മേലൂരുട്ടു. വയ |
| ൨൩ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൩൮ | ൯ | ൨ | ൯ | ൨൫ | ദശധായോ. എടക്കാട്ടമ്പലത്തിൽ ഉത്സ. |
| ൨൪ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൩൯ | ൯ | ൪൩ | ൧൦ | ൧൧ | മണ്ഡലാവസാനം. [പയ്യാവൂരുട്ടു. |
| ൨൫ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൩൯ | ൧൦ | ൩൯ | ൧൦ | ൫൫ | മേലൂട്ട് മടപ്പുരക്കൽ തിരുവപ്പന. തിരുജനനനാൾ. |
| ൨൬ | ൬ | ൨൨ | ൫ | ൩൯ | ൧൧ | ൨൮ | ൧൧ | ൪൭ | |
| ൨൭ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | രാവിലേ | | ഉച്ചതി. | | തിരുജനനത്തിൻ പിൻ ഞ. |
| ൨൮ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൦ | ൪൭ | ൧ | ൯ | |
| ൨൯ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൧ | ൩൨ | ൧ | ൫൪ | |
| ൩൦ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൨ | ൧൭ | ൨ | ൩൯ | |
| ൩൧ | ൬ | ൨൧ | ൫ | ൩൯ | ൩ | ൨ | ൩ | ൨൪ | ക്രിസ്തീയവത്സരാവസാനം. |

 അവൻ നക്ഷത്രങ്ങളുടെ സംഖ്യയെ എണ്ണുന്നു; അവൻ അവെക്കു ഒക്കെയും പേരുകൾ വിളിക്കുന്നു. സങ്കീ. ൧൪൭, ൪.

# ഗ്രഹസ്ഥിതികൾ.

## നൂതനസൂക്ഷ്മദൃക്സിദ്ധം.

അതാതു മാസം ൧-ാംതിയ്യതി മുതൽ ൧൦൯൦—൧൦൯൧.

മകരം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയം മുതല്ക്കു ദൃക്കിൽ ഗ്രഹങ്ങൾ.

| ഗ്രഹങ്ങൾ | ചൊവ്വ | ബുധൻ | വ്യാഴം | വെള്ളി | ശനി | രാഹു |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൮ | ൬ | ൪ | ൮ | ൧ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൭ | ൧൪ | ൧൪ | ൨൧ | ൨൨ | ൧൯ |
| ഇലി | ൪൫ | ൪൦ | ൨൭ | ൧൪ | ൭ | ൩൨ |
| ഗതി | ൪൫ | ൧൯ വ. | ൧ വ. | ൧൨ വ. | ൨ വ. | ൩ വ. |

കുംഭം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്നു ദൃക്കിൽ ഗ്രഹങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൧൦ | ൮ | ൪ | ൭ | ൧ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൦ | ൨൩ | ൮ | ൨൯ | ൨൪ | ൧൫ |
| ഇലി | ൫ | ൯ | ൩൨ | ൪൪ | ൩൮ | ൦ |
| ഗതി | ൪൫ | ൧൦൦ | ൬ വ. | ൪൨ | ൧ വ. | ൩ വ. |

മീനം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്നു ദൃക്കിൽ ഗ്രഹങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൧൦ | ൧൦ | ൪ | ൮ | ൧ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൧൯ | ൧൧ | ൫ | ൧൯ | ൨൯ | ൧൩ |
| ഇലി | ൧൨ | ൫൩ | ൪൦ | ൫൮ | ൫൧ | ൨൫ |
| ഗതി | ൪൫ | ൧൦൧ | ൯ വ. | ൪൨ | ൨ | ൩ വ. |

മേടം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്നു ദൃക്കിൽ ഗ്രഹങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൧൦ | ൧൦ | ൪ | ൮ | ൧ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൨൭ | ൨൧ | ൬ | ൧൯ | ൨൬ | ൧൧ |
| ഇലി | ൯ | ൩൪ | ൩൧ | ൫൩ | ൧൬ | ൫൦ |
| ഗതി | ൪൯ | ൧൧൧ | ൭ | ൯൫ | ൨ | ൩ വ. |

ഇടവം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്നു ദൃക്കിൽ ഗ്രഹസ്ഫുടങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൧൧ | ൦ | ൪ | ൧൦ | ൧ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൨൧ | ൧൫ | ൯ | ൨൨ | ൨൬ | ൧൦ |
| ഇലി | ൮ | ൫൮ | ൧൩ | ൪൪ | ൨൩ | ൧൨ |
| ഗതി | ൪൫ | ൬൮ | ൨ | ൭൧ | ൯ | ൩ വ. |

മിഥുനം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്നു ദൃക്കിൽ ഗ്രഹസ്ഫുടങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൦ | ൧ | ൪ | ൦ | ൨ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൨൨ | ൧൭ | ൭ | ൨൨ | ൪ | ൬ |
| ഇലി | ൫൨ | ൨൪ | ൧൬ | ൫൨ | ൪൬ | ൩൩ |
| ഗതി | ൪൪ | ൧൦൩ | ൮ | ൭൧ | ൬ | ൩ വ. |

ആദിത്യചന്ദ്രന്മാരേ, അവനെ സ്തുതിപ്പിൻ; പ്രകാശമുള്ള സകല നക്ഷത്രങ്ങളുമായുള്ളോവേ, അവനെ സ്തുതിപ്പിൻ. സങ്കീ. ൧൪൮, ൩.

### കൎക്കിടകം ൧-ാംതിയ്യതി ദൃക്കിൽ ഗ്രഹസ്ഫുടങ്ങൾ.

| ഗ്രഹങ്ങൾ | ചൊവ്വ | ബുധൻ | വ്യാഴം | വെള്ളി | ശനി | രാഹു |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൧ | ൩ | ൪ | ൧ | ൨ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൨൬ | ൮ | ൨൫ | ൧ | ൧൩ | ൬ |
| ഇലി | ൧൬ | ൮ | ൫൬ | ൨ | ൧൦ | ൫൦ |
| ഗതി | ൪൮ | ൧൩൦ | ൧൨ | ൮൩ | ൭ | ൩ വ. |

### ചിങ്ങം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്ന ദൃക്കിൽ ഗ്രഹങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൨ | ൪ | ൪ | ൩ | ൨ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൧൭ | ൨൬ | ൧൮ | ൧൪ | ൧൨ | ൫ |
| ഇലി | ൩൩ | ൩൧ | ൪൮ | ൪൮ | ൫൩ | ൮ |
| ഗതി | ൩൯ | ൩൬ | ൧൬ | ൭൩ | ൨ | ൩ വ. |

### കന്നി ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്ന ദൃക്കിൽ ഗ്രഹസ്ഫുടങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൨ | ൪ | ൫ | ൪ | ൨ | ൫ |
| തിയ്യതി | ൨൭ | ൧൫ | ൦ | ൨൯ | ൧൪ | ൪ |
| ഇലി | ൧൧ | ൪ | ൫൧ | ൪൫ | ൫൩ | ൩൦ |
| ഗതി | ൪൧ | ൫൪ | ൧൬ | ൭൫ | ൨ | ൩ വ. |

### തുലാം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്ന ദൃക്കിൽ ഗ്രഹങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൩ | ൬ | ൪ | ൭ | ൨ | ൬ |
| തിയ്യതി | ൨൭ | ൧൦ | ൨൭ | ൧൩ | ൧൬ | ൧൩ |
| ഇലി | ൧൨ | ൧ | ൧൭ | ൪൬ | ൪൬ | ൧൬ |
| ഗതി | ൩൬ | ൧൦൫ | ൧൪ | ൭൧ | ൦ | ൩ വ. |

### വൃശ്ചികം ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്ന ദൃക്കിൽ ഗ്രഹങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൪ | ൭ | ൫ | ൮ | ൨ | ൬ |
| തിയ്യതി | ൧൬ | ൧൯ | ൬ | ൧൭ | ൧൮ | ൧൧ |
| ഇലി | ൪൦ | ൩൨ | ൫൭ | ൫൯ | ൧ | ൪൧ |
| ഗതി | ൨൭ | ൮൬ | ൧൦ | ൬൮ | ൩ വ. | ൩ വ. |

### ധനു ൧-ാംതിയ്യതി ഉദയത്തിന്ന ദൃക്കിൽ ഗ്രഹസ്ഫുടങ്ങൾ.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| രാശി | ൩ | ൮ | ൫ | ൯ | ൨ | ൬ |
| തിയ്യതി | ൨൧ | ൧൩ | ൧൧ | ൧൭ | ൧൪ | ൧൦ |
| ഇലി | ൧൦ | ൩൧ | ൧൦ | ൧൦ | ൧൦ | ൯ |
| ഗതി | ൧൯ | ൩൩ വ. | ൮ | ൫൮ | ൬ | ൩ വ. |

## ഗ്രഹണങ്ങൾ.

൧൮൮൫-ാം കൊല്ലത്തിൽ രണ്ടു സൂൎയ്യഗ്രഹണങ്ങളും രണ്ടു സോമഗ്രഹണങ്ങളും ഉണ്ടാകുന്നതിൽ നമുക്കു ഒന്നാം സോമഗ്രഹണം അത്രേ ദൃശ്യമായിരിക്കയുള്ളു.

൧. സൂൎയ്യഗ്രഹണം:— മാൎച്ച് മാസത്തിൽ ൧൬-ാം നു (കുംഭം ൪-ാം നു) വൈകുന്നേരം ൭ മണി ൨൦ മിനിട്ടിന്നു തുടങ്ങുകയും രാവിലേ ൧ മണി ൧൦ മിനിട്ടിൽ അവസാനിക്കയും ചെയ്യുന്നു. എങ്കിലും അതു ഏറ്റവും വടക്കുള്ള ദിക്കുകളിൽ അത്രേ കാണായ്വരികയുള്ളു.

൨. സോമഗ്രഹണം:— അതു മാൎച്ച് മാസത്തിൽ ൩൦-ാംനു (മീനം ൧൮-ാംനു) വൈകുന്നേരം ൬ മണി ൫൩ മിനിട്ടിന്നു തുടങ്ങി കേന്ദ്രകാനൽ ൧൧ മണി ൧൩ മിനിട്ടു വരേ പ്രത്യക്ഷമാകും. സോമനടുരേഖയെ ഒമ്പതിൽ എട്ടംശം മൂടി അൎദ്ധരാത്രിയിൽ നീങ്ങി കഴിഞ്ഞു പോകുന്നു. മലയാളത്തിൽ എങ്ങും ഈ ഗ്രഹണത്തെ നല്ലവണ്ണം കാണാം.

൩. പൂൎണ്ണസൂൎയ്യഗ്രഹണം:— സപ്തെമ്പർ ൮-ാം നു (ചിങ്ങം ൨൪-ാംനു) അൎദ്ധരാത്രിക്കു മുമ്പേ തുടങ്ങി പുലരുവോളം നില്ക്കുന്നതു ഏറ്റവും തെക്കായുള്ള രാജ്യങ്ങളിൽ അത്രേ കാണ്മാൻ സംഗതി ഉള്ളു.

൪. സോമഗ്രഹണം:— സപ്തെമ്പർ ൨൪-ാംനു (കന്നി ൯-ാം നു) രാവിലേ ൧൦ മണി ൬ മിനിട്ടിന്നു തുടങ്ങി ൩ മണി ൩൪ മിനിട്ടിന്നു കഴിഞ്ഞു അമേരിക്കഖണ്ഡത്തിലും ശാന്തക്കടലിലുള്ള ദിക്കിലും കാണപ്പെടുകയും ചെയ്യും.

രാജാക്കന്മാരേ, ബുദ്ധിമാന്മാരായിരിപ്പിൻ; ഭൂമിയിലെ ന്യായാധിപതി നമ്പമാരേ, നിങ്ങൾ ഉപദേശിക്കപ്പെട്ടവരായിരിപ്പിൻ. സങ്കീ. ൨, ൧൦.

# ൧൪൫ സങ്കീൎത്തനം.

1 അല്ലയോ രാജാവായ എൻ ദൈവമേ, നിന്നെ ഞാൻ ഉയൎത്തും
തിരുനാമത്തെ എന്നെന്നേക്കും അനുഗ്രഹിക്കയും ചെയ്യും.
2 എല്ലാനാളും ഞാൻ നിന്നെ അനുഗ്രഹിച്ചു
തിരുനാമത്തെ എന്നെന്നേക്കും സ്തുതിക്കും.
3 ഏററം സ്തുത്യനും വലിയവനും യഹോവ തന്നേ,
അവന്റേ മാഹാത്മ്യം ആരാഞ്ഞു കൂടാത്തതു.
4 ഒരു തലമുറ മറുതലമുറയോടു നിൻ ക്രിയകളെ പുകണ്ണു
നിന്റെ വീൎയ്യങ്ങളെ കഥിക്കും.
5 കനത്ത നിൻ തേജസ്സിൻ പ്രഭയെയും
നിന്റെ അത്ഭുതകൎമ്മങ്ങളെയും ഞാൻ ധ്യാനിക്കും.
6 ഗാംഭീൎയ്യമേറും നിന്റെ ഭയങ്കരക്രിയകളെ അവർ പറയും
നിന്റെ വങ്കൎമ്മങ്ങളെ ഞാൻ വൎണ്ണിക്കയും ചെയ്യും.
7 ചെമ്മേ പെരുകും നിൻ നന്മയുടെ ശ്രുതിയെ അവർ പൊഴിയും
നിൻ നീതിയെ ചൊല്ലി ആൎക്കും.
8 യഹോവ കൃപാലുവും കനിയുന്നവനും
ദീൎഘക്ഷമാവാനും ദയ പെരുകിയവനും തന്നേ.
9 യഹോവ എല്ലാവൎക്കും നല്ലവൻ
അവന്റെ കരൾക്കനിവ് അവന്റെ സകല ക്രിയകളുടേ മേലും (ഇരിക്കുന്നു.)
10 യഹോവേ, നിന്റേ സകല ക്രിയകളും നിന്നെ വാഴ്ത്തും
നിന്റെ ഭക്തർ നിന്നെ അനുഗ്രഹിക്കയും,
11 നിന്റേ രാജ്യതേജസ്സു പറകയും ചെയ്യും
നിന്റേ ശൌൎയ്യം ഉരെക്കയും ചെയ്യും,
12 മനുഷ്യപുത്രരോടു നിന്റെ വീൎയ്യങ്ങളെയും
നിന്റേ രാജ്യത്തിലേ പ്രാഭവതേജസ്സിനെയും അറിയിപ്പാൻ തന്നേ.
13 നിന്റേ രാജ്യം സൎവ്വയുഗങ്ങൾക്കുള്ള രാജ്യം
നിന്റേ വാഴ്ച എല്ലാ തലമുറകളിലും ഉള്ളതു.
14 വീഴുന്നവരെ ഒക്കയും യഹോവ താങ്ങുന്നു
കുനിഞ്ഞവരെ ഒക്കയും താൻ നിവിൎത്തുന്നു.
15 എല്ലാവരുടേ കണ്ണുകളും നിന്നെ പാൎത്തിരിക്കുന്നു
നീയും തത്സമയത്തു താന്താന്റേ തീൻ അവൎക്കു നല്കുന്നു;
16 തൃക്കൈയെ നീ തുറന്നു
എല്ലാ ജീവിക്കും പ്രസാദതൃപ്തി വരുത്തുന്നു.
17 യഹോവ തന്റേ എല്ലാ വഴികളിൽ നീതിമാനും
തന്റേ സകല ക്രിയകളിൽ ദയാവാനും ആകുന്നു.
18 തന്നോടു് വിളിക്കുന്നവൎക്കു് എല്ലാം യഹോവ സമീപസ്ഥൻ
ഉണ്മയിൽ തന്നോടു വിളിക്കുന്നവൎക്കു് എല്ലാമേ.
19 അവനെ ഭയപ്പെടുന്നവൎക്കു പ്രസാദമായതിനെ അവൻ ചെയ്യു
അവരുടെ കൂററു കേട്ടു് അവരെ രക്ഷിക്കുന്നു.
20 തന്നെ സ്നേഹിക്കുന്നവരെ ഒക്കയും യഹോവ കാത്തു
സകല ദുഷ്ടരെയും സംഹരിക്കും.
21 യഹോവായുടേ സ്തുതിയെ എൻ വായി ഉരെക്കയും [ചെയ്യു!
സകല ജഡവും അവന്റേ വിശുദ്ധനാമത്തെ എന്നെന്നേക്കും അനുഗ്രഹിക്കയും

# വൎത്തമാനസംഗ്രഹം.

(൧൮൮൪ ജൂലായി വരേ.)

ഇസ്രയേലിൻെറ പരിശുദ്ധനായി നിൻെറ വീണ്ടെടുപ്പുകാരനായ യഹോവ ഇപ്രകാരം പറയുന്നു. പ്രയോജനമായിരിപ്പാൻ നിന്നെ അഭ്യസിപ്പിക്കയും, നീ പോകേണ്ടുന്ന വഴിയിൽ നിന്നെ നടത്തുകയും ചെയ്യുന്ന നിൻെറ ദൈവമായ യഹോവ ഞാൻ ആകുന്നു.

ഹാ! നീ എൻെറ കല്പനകളെ ചെവിക്കൊണ്ടാൽ കൊള്ളായിരുന്നു. എന്നാൽ നിൻെറ സമാധാനം നദിപോലെയും നിൻെറ നീതി സമുദ്രത്തിലെ തിരകൾ പോലെയും ഇരിക്കുമായിരുന്നു. (ഏശാ. ൪൮, ൧൭—൧൮.)

സൎവ്വഭാഗ്യമുള്ള ദൈവത്തിൻെറ മക്കളായ മനുഷ്യരുടെ ഇടയിൽ അത്ര നിൎഭാഗ്യവും പരാധീനവും കാണ്മാൻ സംഗതി എന്തു? ദൈവത്തിൻെറ ഇഷ്ടം പോലെയും വിധിച്ച പ്രകാരവും എല്ലാം നടന്നു വരുന്നു എന്നു പറഞ്ഞാൽ എന്താശ്വാസം? "ചത്തുകിടക്കിലേ ഒത്തു കിടക്കും!" എന്നു വെച്ചാൽ ദോഷവും നിൎഭാഗ്യവും എല്ലാം സഹിച്ചും കൊണ്ടു കിടന്നു മരിക്കുന്നതത്രേ നമുക്കു ശേഷിക്കുന്നു. എന്നാൽ നിൎഭാഗ്യരായി ജീവിക്കയും നിരാശരായി മരിക്കയും ചെയ്യുന്നതിനാൽ ദൈവത്തിൻെറ ഇഷ്ടം നമ്മിൽ നിവൃത്തിയായി വരുമോ? അവൻ താൻ ഭാഗ്യശാലിയായി മാറാത്ത സുഖത്തിൻ അനുഭവത്തിൽ ഇരിക്കും പ്രകാരം അവൻെറ മക്കളായ നാമും ഭാഗ്യമുള്ളവരായി ജീവനം കഴിക്കേണ്ടതാകുന്നു. "നിൻെറ സമാധാനം നദി പോലെയും നിൻെറ നീതി സമുദ്രത്തിൻ തിരകൾ പോലെയും ഇരിക്കും" എന്നു കല്പിച്ചു അനുഗ്രഹിക്കുന്നവൻ ഭാഗ്യത്തിലേക്കു നടത്തുന്ന വഴിയെയും ഇതിനാൽ നമ്മുടെ മുമ്പാകെ തുറന്നു വെക്കുന്നു. "നീ എൻെറ കല്പനകളെ ചെവിക്കൊണ്ടാൽ കൊള്ളായിരുന്നു" എന്നത്രെ! ആകയാൽ ഞരങ്ങി കഷ്ടപ്പെട്ടു ഈ ജീവനം കഴിപ്പാൻ സംഗതി ഇല്ല! തലകളെ ഉയൎത്തി, സന്തോഷം പൂണ്ടു ദൈവത്തിൻെറ വഴികളിൽ നടന്നും കൊണ്ടു ഇഹത്തിലും പരത്തിലും ദൈവമക്കൾക്കുള്ള ഭാഗ്യം അനുഭവിക്കാം; ദേശത്തിലും "സമാധാനം നദിപോലെയും നീതി സമുദ്രത്തിൻ തിരകൾ പോലെയും ഇരിക്കും!"

ഈ ഭാഗ്യമുള്ള സ്ഥിതിയിൽ നാമും എത്തേണ്ടതിന്നു ദൈവവചനം ഈ ദേശത്തിലും അറിയിക്കപ്പെടുന്നു. അതു സകലനന്മയുടെയും ഭാഗ്യത്തിൻെറയും അടിസ്ഥാനം ആകുന്നു എന്നതു അനുഭവത്താൽ അറിയുന്ന സത്യക്രിസ്ത്യാനികൾ ഗൎമ്മാനരാജ്യത്തിൽ വെച്ചു കഴിഞ്ഞകൊല്ലത്തിൽ ബാസൽ മിശ്യൻ സഭയായി ൧,൯൯,൯൯൩ ഉറുപ്പിക ഹിന്തുരാജ്യത്തിൽ മിശ്യൻവേല നടത്തേണ്ടതിന്നു ശേഖരിച്ചു കൊടുത്തിരിക്കുന്നു. ഈ പണത്തിന്നായി കൎണ്ണാടകം, കുടക, മഹറാഷ്ട്രം, മലയാളം, നീലഗിരി എന്നീ ദേശങ്ങളിൽ ൩൯. വിലാത്തിക്കാരും, ൭ നാട്ടുപാതിരിമാരും, ൪൫ ഉപദേശിമാരും സുവിശേഷവേല നടത്തി എങ്ങും ദൈവവചനം അറിയിക്കയും ൮൯ ക്രിസ്തീയഗുരുക്കളും ൨൭ ഗുരുസ്ത്രീകളും ൮൭ എഴുത്തുപള്ളികളിൽ ൪,൯൯൦ കുട്ടികളെ പഠിപ്പിക്കയും ചെയ്തിരുന്നു. ഈ വലിയ

ചെലവു കഴിപ്പാൻ സംഗതി എന്തു? എന്നു ചോദിച്ചറിവാൻ ഹിന്തുക്കൾക്കു അധികം താല്പൎയ്യം ഇല്ല, പല ആളുകൾക്കും ദേശത്തിൽ എങ്ങും നടന്നുവരുന്ന ഈ വലിയ പ്രവൃത്തികൊണ്ടു അറിവു പോലും ഇല്ല. എന്നാൽ ഈ അന്യന്മാർ ഹിന്തുക്കളുടെ നന്മെക്കായി അത്ര ചെലവു സഹിക്കുന്നതു ഹിന്തുക്കളും ദൈവകല്പനകളെ ചെവിക്കൊള്ളേണം, എന്ന താല്പൎയ്യത്തിന്മേൽ അത്രേ ഇരിക്കുന്നു. ആകയാൽ ഈ വിശ്വാസ്സർ പണം ചെലവാക്കുന്നതു കൂടാതേ ഹിന്തുക്കളുടെ നിത്യഭാഗ്യത്തിന്നായി ദൈവത്തോടു പ്രാൎത്ഥിക്കയും ചെയ്യുന്നു. ദൈവം ഈ പ്രാൎത്ഥനകൾ കേട്ടു തന്റെ വചനത്തെ അനുഗ്രഹിച്ചു പലൎക്കും രക്ഷ പ്രാപിപ്പാൻ സംഗതിവരുത്തിയിരിക്കുന്നു. ബാസൽ മിശ്യൻ റപ്പോൎത്തിൽ സുമാറു കണക്കു നോക്കുമ്പോൾ ക്രിസ്ത്യാനികളുടെ സംഖ്യ ൫,000ത്തോളം വൎദ്ധിച്ചു വന്നു. മലയാളജില്ലയിൽ ൩,000 ആളുകൾ തന്നേ. ആകയാൽ ഉണൎന്നു വന്നു കണ്ണുകളിൽനിന്നു മയക്കം തുടെച്ചു. "സ്വൎഗ്ഗരാജ്യം സമീപമായി വന്നു" എന്നു കേവലം അറിവൂതാക.

നമ്മുടെ മലയാളരാജ്യത്തിൽ നാല്പതു വൎഷത്തോളം സുവിശേഷവേല നടത്തുകയും ഹിന്തുക്കളുടെ നിത്യ ഉപകാരത്തിന്നായി വളരേ സ്നേഹത്തോടേ അദ്ധ്വാനിക്കയും പലൎക്കും ഹൃദയപ്രിയനായിരിക്കയും ചെയ്ത ജോൺ മിഖായേൽ ഫ്രിത്സ് സായ്പ് കഴിഞ്ഞ ദിസെമ്പർ മാസത്തിൽ സ്ത്രാസ്ബുൎഗ്ഗ് പട്ടണത്തിൽ അന്തരിച്ചു. അവർ രണ്ടു കൊല്ലത്തോളം ദീനത്തിന്റെ വേദനകളും പ്രയാസങ്ങളും ധാരാളമായി സഹിച്ചു എങ്കിലും അവസാനം വരേ മലയാളക്കാരെ സ്നേഹത്തോടേ ഓൎക്കയും അവരുടെ അനുഗ്രഹത്തിന്നായി ദൈവത്തോടു പ്രാൎത്ഥിക്കയും ചെയ്തു. നാം അവനെയും ഓൎത്തു

ആയുഷഃ ഖണ്ഡമാദായ
രവിരസ്തമയം ഗതഃ
അഹന്യഹനി ബോദ്ധവ്യം
കിമദ്യ സുകൃതം കൃതം. എന്നതു മറക്കയും അരുതു.

മലയാളത്തിൽ എങ്ങും ഈ കഴിഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ നമുക്കു നല്ല സൌഖ്യവും തൃപ്തിയും ഉണ്ടായിരുന്നു, എന്നു വെച്ചു നമ്മുടെ അവസ്ഥ നല്ലതു തന്നേ, എന്നതു സ്ഥാപിപ്പാൻ സംഗതി ഇല്ലല്ലോ. നാം അനുഭവിച്ച നന്മകൾ ദൈവത്തിന്റെ കൃപാദാനങ്ങൾ അത്രേ. അവൻ നമ്മെ സകല ആപത്തുകളിൽനിന്നു രക്ഷിച്ചു വിളയെ സൂക്ഷിച്ചു ദീനങ്ങളെ അകററി നമ്മെ പലപ്രകാരത്തിൽ അനുഗ്രഹിച്ചതിനെ നാം നന്ദിയോടേ സ്വീകരിച്ചു വാക്കിനാലും നടപ്പിനാലും അവനെ സ്തുതിക്കേണ്ടതാകുന്നു.

ദേശത്തിന്റെ ഉപകാരത്തിന്നായി ജന്മികുടിയാന്മാരുടെ നിലയെ ക്രമപ്പെടുത്തേണ്ടതിന്നു മദ്രാസിൽ കൂടുന്ന ഒരു കമ്മിട്ടി നിശ്ചയിക്കപ്പെട്ടു. അവർ ആലോചിച്ചു നിശ്ചയിക്കുന്ന പ്രകാരം ഈ കാൎയ്യത്തെ പിന്നേതിൽ നടത്തുവാൻ വിചാരിക്കുന്നു.

സൎക്കാർ മലയാളപ്രജകളുടെ വിദ്യാഭിവൃദ്ധിക്കായും ഗുണവൎദ്ധനെക്കായും വളരേ ഉത്സാഹിക്കുന്നു. വിദ്യകളും നാഗരികത്വവും ഇവററാൽ ഉണ്ടാകുന്ന സുഖവും ഇതുവരേ പ്രത്യേകം പുരുഷന്മാൎക്കത്രേ അനുഭവമായിരുന്നുള്ളു. സ്ത്രീകൾക്കു

ചേതസാ വാചാ വൃത്യാ കൎമ്മണാ ഭൎത്താവിനെ
സാദരം ശുശ്രൂഷിക്ക നല്ലതു നിങ്ങൾക്കെല്ലാം
അതിലും പതിവ്രതമാരാകും കലസ്ത്രീകൾക്കു
അതിന്നു മീതേയൊരു ധൎമ്മം ഇല്ലറിക നീ
ഗതിയും വരും ഇഹലോകസൌഖ്യവും വരും
പതിശുശ്രൂഷണം കൊണ്ടെന്നു ചൊല്ലുന്നു വേദം.

എന്ന വാക്യപ്രകാരം വിദ്യാഭ്യാസംകൊണ്ടു ഒരു ഗുണം വരുന്നില്ല, എന്നുവെച്ചു അറിയായ്മയിൽ അത്രേ വളൎന്നു വരികയും ചെയ്യു. ഇപ്പോഴോ സ്ത്രീകളും പുരുഷന്മാൎക്കു സമസൃഷ്ടികളും സമാവകാശികളും ആകയാൽ അവൎക്കു പഠിപ്പു തന്നേ വേണം, എന്നു വെച്ചു സൎക്കാർ കോഴിക്കോട്ടിൽ നാനാവൎണ്ണ പെണ്കുട്ടികൾക്കായി ഒരു നോൎമ്മൽ സ്കൂൾ സ്ഥാപിച്ചിരിക്കുന്നു. ദരിദ്രന്മാൎക്കും ദൂരദേശങ്ങളിൽനിന്നു വരുന്നവൎക്കും ചേരുവാൻ സംഗതി വരുത്തേണ്ടതിന്നു പഠിച്ചുവരുന്ന സമയം ഒരു മാസപ്പടിയും കൊടുക്കുന്നു. ഈ കുട്ടികൾ പഠിച്ചുപരീക്ഷ കൊടുത്ത ശേഷം സ്വന്ത ദേശങ്ങളിൽ പോയി അവിടെ താന്താങ്ങളായി എഴുത്തു പള്ളികളെ സ്ഥാപിച്ചു നടത്തുകയും വേണം എന്നതു താല്പൎയ്യം.

ഇനി ദേശത്തിന്റെ ഉപകാരത്തിന്നായി സൎക്കാർ ഓരോ ഗ്രാമങ്ങളിൽ പുതുതായി തപ്പാലാപ്പീസ്സുകളെയും കമ്പി ആപ്പീസ്സുകളെയും സ്ഥാപിച്ചു. അവ്വണ്ണം മുൻസിപ്പ് കോടതി ചില ദിക്കുകളിൽ പുതുതായി നിശ്ചയിക്കയും അനാവശ്യമുള്ള സ്ഥലങ്ങളിൽനിന്നു നീക്കുകയും ചെയ്യു. വിശേഷിച്ചു നമ്മുടെ കച്ചവടക്കാൎക്കും ഒരു സാദ്ധ്യം വന്നു പോയി എന്നു കേൾക്കുന്നു. വളരേ കാലമായി അവർ ബേപ്പൂരിൽ നിന്നു വടക്കോട്ടു പോകുന്ന ഒരു തീവണ്ടി കിട്ടേണ്ടതിന്നു ആഗ്രഹിക്കയും അപേക്ഷിക്കയും ചെയ്തിരുന്നു. ആകയാൽ നവെമ്പ്ര ൧൬-ാംനു ഉപരാജാവിന്റെ ആലോചനസഭയിൽ ഒരു മെമ്പരായ ഹൊപ്പ് സായ്പ് അവൎകൾ കോഴിക്കോട്ടിൽ എത്തി കാൎയ്യം അന്വേഷിച്ചു വളരേ അനുകൂലമായി സംസാരിച്ചതുകൊണ്ടു ഇപ്പോൾ വേഗത്തിൽ തീൎപ്പുണ്ടാകുമെന്നാശിക്കുന്നു.

കോട്ടയത്തു ദിവാന്റെ ഉത്സാഹത്തിന്മേൽ ഒരു പുസ്തകവായനാശാല അവിടെ സ്ഥാപിക്കപ്പെട്ടു. ഇംഗ്ലിഷ് പുസ്തകങ്ങളും മലയാളഗ്രന്ഥങ്ങളും വൎത്തമാനക്കടലാസ്സുകളും അനവധി സംഭരിച്ചു വെച്ചിരിക്കുന്നു. തിരുവനന്തപുരം രാജാവു താൻ അതിന്നായി ൫൦൦ ഉറുപ്പിക സമ്മാനിച്ചു. ജനങ്ങളുടെ ഉപകാരത്തിന്നായി ഗുണശാലികൾ ഈ പ്രയത്നം എല്ലാം കഴിക്കുമ്പോൾ ഒരു സാദ്ധ്യം അല്ലേ കാണേണ്ടതു. എന്നാൽ നമ്മുടെ രാജ്യത്തിൽ വിശേഷിച്ചു ഗുണത്തിന്നായി ഒരു മാററം കാണ്മാൻ പ്രയാസം അത്രേ.

ഗുളപൎവ്വതമദ്ധ്യസ്ഥം
നിംബബീജം പ്രതിഷ്ഠിതം
പയോവൎഷസഹസ്രേണ
നിംബഃ കിം മധുരായതേ. എന്നതിന്റെ സത്യം മദ്യപാനസേവയുടെ വൎദ്ധനകൊണ്ടു തെളിവായി വരുന്നു. മദ്യപാനം ചെയ്യുന്നതു ശ്രേയസ്സുള്ള കാൎയ്യവും പരിതപത്തിന്റെ ലക്ഷണവും എന്ന പോലേ വിചാരിക്കപ്പെടുന്നതു സങ്കടമത്രേ. കഴിഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ റാക്കുകുത്തക ലേലം വിളിച്ചപ്പോൾ മുമ്പേത്ത കൊല്ലത്തെക്കാൾ അരലക്ഷം ഉറുപ്പിക അധികം കിട്ടിയിരിക്കുന്നു. കോഴിക്കോട്ടിലേ കുത്തക ൯൯,൫൦൦ ഉറുപ്പികെക്കു വിററു പോയി.

മദ്രാസ് സംസ്ഥാനത്തിന്റെ അവസ്ഥ മുഴുവൻ നോക്കുമ്പോൾ ജനത്തിന്റെ ഗുണത്തിന്നായി നടന്നുവരുന്ന പ്രയത്നങ്ങൾ നിഷ്ഫലമായി പോയിട്ടില്ല, എന്നു കാണ്മാൻ സംഗതി ഉണ്ടു. ഈ സംസ്ഥാനത്തിൽ ൧൮൭൧-ാം കൊല്ലത്തിൽ ൩,൧൩,൦൮,൮൭൨ നിവാസികളുണ്ടായിരുന്നു. അവരിൽ വായിപ്പാൻ അറിയുന്നവർ ൧൫൩,൧൫൦ പേർ അത്രേ. ൧൮൮൧-ാം കൊല്ലത്തിലോ നിവാസികളുടെ സംഖ്യ ൩,൦൮,൬൮,൫൦൪ എന്നുള്ളു. എന്നാൽ അവരിൽ വായന ശീലിച്ചവർ ൨൧൬൮൪൭൪ പേർ തന്നേ. ഈ ആദ്യപഠിപ്പിന്റെ വൎദ്ധന മൂലം സൎക്കാർ സന്തോഷിച്ചു, അതിന്നു കഴിയുന്നേടത്തോളം സഹായം

ചെയ്വാൻ നിശ്ചയിക്കയും ചെയ്തു എന്നാൽ "കരിമ്പു എന്നു ചൊല്ലി വേരോളം ചവെക്കല്ല" എന്നു വെച്ചു പഠിപ്പിന്നു ഒരതിർ വെപ്പാൻ സംഗതി കണ്ടു. നല്ല ഉദ്യോഗം കിട്ടേണ്ടതിന്നു പല ആളുകൾ അച്ഛന്റെ പ്രവൃത്തി വിട്ടു നിരസിച്ചു ഉയൎന്ന സ്കൂളിൽ ചേൎന്നു പഠിക്കുന്നു. അതിനാൽ ഉദ്യോഗം അന്വേഷിക്കുന്നവരുടെ കൂട്ടം അത്യന്തം പെരുകയും കൃഷിപ്രവൃത്തിക്കും കൈത്തൊഴിലുകൾക്കും ആൾ പോരാതെ പോകയും ചെയ്യുന്നതിനാൽ സൎക്കാർ ഉയൎന്ന സ്കൂളുകളിൽ ഫീസ്സു വളരേ കയററി അതു മുതലുള്ളവൎക്കും വിശേഷബുദ്ധിയുള്ളവൎക്കും അത്രേ ഉണ്ടായാൽ മതി, എന്നു കല്പിച്ചിരിക്കുന്നു.

ബ്രഹ്മസമാജക്കാരുടെ നാഥനായ ബാബുകേശബ്ചന്ദ്രസേൻ മരാസിൽവെച്ചു അന്തരിച്ചു. അവൻ ആദിയിൽ വളരേ ബുദ്ധിയും ഭക്തിയും ഉള്ള ഒരാൾ ആയിരുന്നു. ക്രിസ്തീയവേദത്തിന്റെ സത്യം അവന്റെ ഹൃദയത്തിൽ പററിവന്നപ്പോൾ, അനുസരിപ്പാൻ വളരേ പ്രയാസം തോന്നിയതുകൊണ്ടു തനിക്കായി തന്നേ ഒരു രക്ഷാവഴിയെ അന്വേഷിപ്പാൻ തുടങ്ങി. വളരേ കാലമായി തപ്പി തപ്പി നോക്കിയ ശേഷം ഹിന്തുമതത്തെ ശുദ്ധമാക്കിയാൽ അതും രക്ഷെക്കായി മതി എന്നുദ്ദേശിച്ചു ബ്രഹ്മസമാജം എന്ന യോഗത്തെ സ്ഥാപിക്കയും ചെയ്തു. ഈ യോഗത്തിൽ ബഹു വിശേഷമായ പ്രസംഗങ്ങളെ കഴിച്ചു ഹിന്തുമതത്തിന്നും ജാതിക്കും നവീകരണം വേണം എന്നു എപ്പോഴും പ്രസ്ഥാപിച്ചും കൊണ്ടു നടന്നു എങ്കിലും "പിടിച്ചു വലിച്ചു കുപ്പായം ഇട്ടാൽ പറിച്ചു കീറിപ്പോകും" എന്ന വാക്കിനെ ഓൎക്കായ്കകൊണ്ടു ഹിന്തുമതത്തെ നന്നാക്കുന്നതിന്നു പകരം അവൻ താൻ അഹംഭാവത്തിൽ വീണു, സ്വന്തബുദ്ധിയിൽ അത്രേ ആശ്രയിച്ചു, താൻ അവതരിച്ചു വന്ന ഈശ്വരൻ ആകുന്നു, എന്നു ഒടുക്കം നടിച്ചു നടന്നു. അങ്ങിനെ "ജ്ഞാനി എന്നു ചൊല്ലി മൂഢനായി തീൎന്നു." ആകയാൽ

അകത്തു രത്നങ്ങൾ നിറഞ്ഞഗേഹം
പുകഞ്ഞുപോയാൽ കരിതന്നെയാകും!

എന്നാൽ ബ്രാഹ്മണരും മററ ഉയൎന്ന ജാതികളും മാനുഷപ്രിയം കാട്ടേണ്ടതിന്നു പറയർ, പുലയർ മുതലായ ഹീനജാതികളുടെ പരിഷ്കാരത്തിന്നും അവരെ ഇപ്പോഴത്തെ താണ സ്ഥിതിയിൽനിന്നു ഉയൎത്തി മററുള്ള ജാതികളുടെ നിലയിൽ കരേററുവാനായിട്ടും ബങ്കളൂരിൽ ഒരു സഭ സ്ഥാപിച്ചു. ഈ സഭയിലേ വൈസപ്രെസിഡെണ്ടു ഒരു ബ്രാഹ്മണൻ ഇതിന്നായി ൫,000 ഉറുപ്പിക ദാനമായി കൊടുപ്പാൻ വാഗ്ദത്തം ചെയ്തിരിക്കുന്നു. ഈ പണം ഏല്പിക്കും വരേ മാസത്തിൽ ൨൫ ഉറുപ്പിക ചെലവിന്നായി കൊടുപ്പാൻ നിശ്ചയിച്ചു. ഈ യോഗത്തിന്റെ ആഗ്രഹം എന്തെന്നാൽ:

1. താണ ജാതികളുടെ പഠിപ്പിന്നായി ബങ്കളൂരിൽ പ്രത്യേകം സ്കൂൾ സ്ഥാപിക്ക.

2. ഹിന്തുശാസ്ത്രത്തിൽ പാണ്ഡിത്യമുള്ളവരെ കൊണ്ടു അവരോടു ഹിന്തുമതം പ്രസംഗിക്ക.

ഹിന്തുജനങ്ങളുടെ ഉപകാരത്തിന്നായി വളരേ പ്രയത്നിക്കുന്ന ലെയിട്ടനർ സായ്പ് ലന്തനിൽ വെച്ചു ഹിന്തുബാല്യക്കാൎക്കു ഭ്രഷ്ടത കൂടാതേ പാൎക്കേണ്ടതിന്നു ഒരു ഭവനം എടുപ്പിപ്പാൻ വിചാരിക്കുന്നു. അതിൽ ഹിന്തുക്കളെ തന്നേ പണിക്കാരാക്കി കുറവു കൂടാതേ എല്ലാ കാൎയ്യങ്ങൾ ഹിന്തുക്കളുടെ ആചാരപ്രകാരം നടത്തുകയും ചെയ്യും. അതിന്നായി ൮0,000 ഉറുപ്പികയോളം വേണ്ടി വരും.

ബൊംബായിസംസ്ഥാനത്തിൽ ഇക്കഴിഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ പല സ്ഥലങ്ങളിൽ വെള്ളത്തിന്റെ പെരുക്കം കൊണ്ടു വളരേ നഷ്ടം വന്നിരിക്കുന്നു. സൂറാത്തിന്നു സമീ

പമുള്ള തപ്തിപ്പുഴ കവിഞ്ഞതിനാൽ വെള്ളം ൪൭ അടിയോളം പൊങ്ങിവന്നു ദേശമെല്ലാം മൂടി. കഷ്ടത്തിലായവൎക്കു വേണ്ടി ൫൩൦൦൦ ഉറുപ്പിക ശേഖരിച്ചു കൊടുത്തിരിക്കുന്നു.

ഹൈദരബാദിലേ നിജാമിൻെറ അഭിഷേകത്തിന്നായി പോകുമ്പോൾ ഉപരാജാവും പരിവൃന്ദവും മദ്രാസിലും വന്നു ജനങ്ങളാൽ വളരേ സന്തോഷത്തോടു കൂടേ കൈക്കൊള്ളപ്പെട്ടു ൩-ാം ഫെബ്രുവരിമാസത്തിൽ പിന്നെയും യാത്രയായി ഹൈദരബാദിൽ യൌവനപൂൎണ്ണനായ നിജാമിന്നു അഭിഷേകം കഴിച്ചു. അവിടെ അവൎക്കുണ്ടായ സല്ക്കാരം ബഹുപ്രസാദമുള്ളതായിരുന്നു എന്നും കേൾക്കുന്നു.

ഇന്ത്യപ്പട്ടാളത്തിൽ വെച്ചു സ്വാമിഭക്തിയെ വളൎത്തേണ്ടതിന്നു നമ്മുടെ ചക്രവൎത്തിനിയുടെ പ്രഥമപുത്രനായ വേല്സിലെ രാജകുമാരൻ ബങ്കാളസംസ്ഥാനത്തിലെ കുതിരപ്പട്ടാളത്തിലെ കൎണ്ണലായും, കൊണ്ണാട്ടിലേ പ്രഭുവിനെ ആ സംസ്ഥാനത്തിൻെറ കാലാളുകളുടെ കൎണ്ണലായും, കെംബ്രിഡ്ജിലേ പ്രഭുവിനെ പഞ്ചനദത്തിലേ പട്ടാളത്തിൽ കൎണ്ണലായും നിശ്ചയിച്ചിരിക്കയാൽ കൊണ്ണാട്ടിലേ പ്രഭുവായ രാജകുമാരൻ തൻെറ സൈന്യാധിപത്യം ഏല്പാനായി ബൊംബായിൽ വന്നു കുറെ കാലത്തേക്കു വളരേ സന്തോഷത്തോടേ ദേശത്തിൽ പാൎത്തിട്ടു മടങ്ങി പോകയും ചെയ്തു.

യാവ, എന്ന ദ്വീപിന്മേൽ ഏഴു അഗ്നിപൎവ്വതങ്ങൾ പൊട്ടി, തീ പുറപ്പെട്ടുവിച്ചു, ഭൂകമ്പത്താൽ സമുദ്രം ഒരു നാഴിക ദൂരത്തേക്കു പിൻവാങ്ങി പൎവ്വതത്തിൻ ഉയരത്തോളം പൊങ്ങി മടങ്ങുമ്പോൾ ൩൦,൦൦൦ ആളുകളെ നശിപ്പിച്ചു കളഞ്ഞു.

ഇംഗ്ലന്തിൽ ഇനി നല്ല സമാധാനം കാണുന്നില്ല. ഐൎല്ലന്തിലേ മത്സരക്കാരുടെ നേരേ ഉണ്ടായ ക്ഷമയും ദീൎഘക്ഷാന്തിയും സ്ഥിതിസമത്വക്കാരെ ശമിപ്പിക്കുന്നതിന്നു പകരം അധികം ധൈൎയ്യപ്പെടുത്തുകയും ചെയ്യുതിനാൽ രാജസഭയിലും കൂടേ അവർ ഇപ്പോൾ വളരേ വിരോധം കാണിക്കുന്നു.

പല്ലുകളിളകുമ്പോഴപ്പോഴേ പറിക്കേണം.

തെല്ലുപേക്ഷിച്ചാൽ ശേഷമുള്ളതുമിളകിപ്പോം! എന്നു സൎക്കാർ തക്ക സമയത്തു ഓൎത്തെങ്കിൽ കൊള്ളായിരുന്നു. രാജസഭയിൽ ചേൎന്നുവരുന്ന പ്രതിനിധികൾ എല്ലാവരും ദൈവത്താണ ഇടേണം എന്ന മുറെക്കു വിരോധമായി നാസ്തികനായ ബ്രെഡ്ലാഫ്സായ്പ്, ഒരു ദൈവത്തിൽ എങ്കിലും വിശ്വസിക്കാത്ത പക്ഷത്തിൽ ദൈവത്താണ ഇടുന്നതു കപടം, ആകയാൽ കൊള്ളരുതാത്തതത്രേ എന്നു തൎക്കിച്ചു. എന്നാൽ രാജസഭ ദൈവത്താണ തന്നേ വേണം എന്നു നിശ്ചയിച്ചു നാസ്തികന്മാൎക്കു പ്രവേശനം നിഷേധിച്ചു.

ഈ രാജസഭയിൽ കഴിഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ വളരേ കാലത്തോളം തൎക്കമായിരുന്ന ഒരു ചോദ്യത്തിന്നു തീൎപ്പു വന്നു. മരിച്ചുപോയ ഭാൎയ്യയുടെ സഹോദരിയെ വിവാഹം കഴിച്ചു കൂടാ എന്നു മുറവും സുവിശേഷസഭകളിൽ നടപ്പില്ലാത്ത ക്രമം പുതുതായി ഉറപ്പിക്കപ്പെട്ടു.

"എല്ലുമുറിയ പണിതാൽ പല്ലു മുറിയ തിന്നാം." എന്നതു യുദ്ധത്തിൽനിന്നു ജയശാലികളായി മടങ്ങി വന്ന രണ്ടു വീരന്മാർ അനുഭവിച്ചു. അവരിൽ പ്രൊഫെൻ കൎത്താവിന്നു കൎത്താക്കന്മാരുടെ സഭ ൩൦,൦൦൦ ഉറുപ്പികയും ആല്സ്തൻ സായ്പിന്നു (ശ്രീ സൈമോർ) ൨൫,൦൦൦ ഉറുപ്പികയും സമ്മാനമായി കൊടുത്തിരിക്കുന്നു.

എന്നാൽ നമ്മുടെ മഹാരാണിക്കും രാജകുഡുംബത്തിന്നും കഴിഞ്ഞ മാൎച്ചമാസത്തിൽ വലിയ വ്യസനം അടുത്തു. ഇളയ കുമാരനായ ലെയോപൊല്ദ പ്രഭു യദൃച്ഛയാ വീണു, മുമ്പെ തന്നേ ശരീരക്ഷയമുള്ളവനാകയാൽ ചിലമണിക്കൂർ കഴിഞ്ഞ ശേഷം അന്തരിച്ചു

പോയി. അവൻ ഉത്തമകുമാരനും വാത്സല്യഹൃദയനും ആയിരുന്നതു കൊണ്ടു മഹാറാണി അതിക്രൂരദുഃഖവേദനകളിൽ അകപ്പെട്ടു.

പുത്രദേഹാലിംഗനം എത്രയും സുഖം തന്നേ.
പുത്രസ്പൎശത്തിൽ പരംസ്പൎശനസുഖം ഇല്ല.
സ്പൎശനവസ്തുക്കളിൽ ശ്രേഷ്ഠത്വം തനയനും.

എന്നു ഓൎത്തിട്ടു ഈ ഗുണവാനെ അറിഞ്ഞ ആളുകളെല്ലാവരും ചേൎന്നു ദുഃഖിക്കുന്നു. ഈ വ്യസനങ്ങളും ജനങ്ങളിൽനിന്നുണ്ടാകുന്ന ഓരോ വിരോധങ്ങളും രാജ്യഭാരവും എല്ലാം വാൎദ്ധക്യകാലത്തിൽ സഹിച്ചു തളരാതേ നില്പാൻ ദൈവം താൻ ചക്രവൎത്തിനിയെ ശക്തീകരിക്കയും ചെയ്യുന്നു.

മഹാറാണിക്കു പ്രത്യേകം രണ്ടു സംഭവങ്ങൾ വളരേ വ്യസനം വരുത്തി. സണ്ടർലന്ത എന്ന സ്ഥലത്തു അനവധി കുട്ടികൾ ഒരു രംഗശാലയിൽ കൂടിയിരുന്നു. കളിയിൽ പ്രസാദിച്ചു തീൎന്ന ശേഷം വീട്ടിലേക്കു പോവാൻ ഇറങ്ങുമ്പോൾ ഭവനത്തിന്റെ ഒററ ചെറിയ വാതില്ക്കൽ എത്തീട്ടു എങ്ങിനെയോ ഒരു തടസ്ഥം വന്നു. സമൂഹമായി പിൻ ഇറങ്ങുന്ന കുട്ടികൾ അതു അറിയാതേ മുമ്പെല്ലുന്നവരെ ഉന്തി ഞെക്കി തള്ളിയതിനാൽ ഭയങ്കരമായ ഒരു തിരക്കുണ്ടായി, ൨൦൦ ചില്വാനം കുട്ടികൾ ചവിട്ടപ്പെട്ടുകയാലോ ശ്വാസം മുട്ടുകയാലോ മരിച്ചു പോകയും ചെയ്തു കഷ്ടം.

മററു അപകടം സ്കോത്ലന്തിലേ ക്ലൈദ എന്ന നദിയുടെ വക്കത്തു സംഭവിച്ചു. അവിടെ തീൎക്കപ്പെട്ട എത്രയും ഭംഗിയുള്ള ഒരു തീക്കപ്പലിനെ ഒന്നാം പ്രാവശ്യം ഓട്ടുന്നതു കാണേണ്ടതിന്നു അനേക ആളുകൾ കൂടി വന്നിരുന്നു. ഏകദേശം ൧൯൦ ആളുകൾ കപ്പലിൽ കയറി ചുററും നില്ക്കുന്നവരുടെ സന്തോഷാൎപ്പുകളോടു കൂട കപ്പൽ വെള്ളത്തിൽ ഇറങ്ങി ഓടി. എന്നാൽ ഉടനെ ഒരു ഭാഗത്തേക്കു മറിഞ്ഞും കൊണ്ടു മുങ്ങി പോയതിനാൽ ൧൫൨ പേരേയോളവും വെള്ളത്തിൽ ആക്കി നശിപ്പിച്ചു കളഞ്ഞു. അതെല്ലാം ഒരു നിമിഷത്തിൽ അത്രെ നടന്നതു കൊണ്ടു കരയിൽ നില്ക്കുന്നവൎക്കു യാതൊരു സഹായം ചെയ്വാൻ കഴിഞ്ഞില്ല.

അങ്ങിനെയുള്ള അപകടങ്ങളെല്ലാം ഓൎക്കുന്തോറും നമ്മുടെ സമാധാനത്തിന്നുള്ളവ വിചാരിപ്പാൻ സംഗതി ഉണ്ടല്ലോ. "എന്നാൽ സന്മതം മറഞ്ഞു ദുൎമ്മതം നിറഞ്ഞു" എന്ന പോലേ അത്രേ ആളുകളുടെ നടപ്പു. മനുഷ്യർ അധികാധികമായി ജഡമായി തീരുകയും ആത്മികകാൎയ്യങ്ങൾ എല്ലാം നിഷേധിച്ചു, തിന്നും കുടിച്ചും കൊണ്ടു താന്തോന്നികളായി നടക്കുകയും ചെയ്യുന്നതിനാൽ നല്ല ഭാഗ്യം അനുഭവിക്കും എന്നു നിരൂപിക്കുന്നു. എന്നാൽ ദൈവാനുഗ്രഹം കൂടാതേ മനുഷ്യന്നു ഒരു ഭാഗ്യം ഉണ്ടാകയില്ല.

പാപികളോടു ചേൎന്നു വസിക്കുന്നവൎക്കൾക്കു
പാപങ്ങളുണ്ടായ്വരും കേവലം അറിഞ്ഞാലും.

പ്രത്യേകം ലണ്ടൻ പട്ടണത്തിൽ വെച്ചു എല്ലാ രാജ്യങ്ങളിൽ നിന്നു മത്സരക്കാരും ദുഷ്ടന്മാരും കൂടി വന്നു, തമ്മിൽ ആലോചന കഴിക്കയും വലിയ ഒരു ദുഷ്പ്രവൃത്തിക്കായി കോപ്പു ഒരുക്കുകയും ചെയ്യുന്നു എന്നു കേൾക്കുന്നു.

എന്നാൽ സജ്ജനങ്ങൾ ദേശത്തിന്റെ പരോപകാരത്തിന്നായി വളരേ പ്രയത്നിക്കുന്നു. വീടുകളിലും തെരുവീഥികളിലും ദൈവവചനത്തെ ധാരാളമായി പരത്തുകയും ജനങ്ങളെ നന്മയിലേക്കു നടത്തുവാൻ ശ്രമിക്കയും ചെയ്യുന്നു. ലന്തനിലുള്ള തിരുവെഴുത്തുകളെ പരത്തുവാനായി നിശ്ചയിച്ച വേദസംഘം ഇന്നുവരേ ൩൮,൩൯,൬൨൫ വേദ

പുസ്തകങ്ങളെ അച്ചടിപ്പിച്ചു പരത്തിയിരിക്കുന്നു. കഴിഞ്ഞകൊല്ലത്തിന്റെ വരവു ൧൧൫,൪൨൨ ഉറുപ്പിക തന്നേ.

ഇനി സജ്ജനങ്ങളിൽ വെച്ചു കഴിഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ അന്തരിച്ചു പോയ ഒരാളെ നന്ദിയോടു കൂടേ ഓൎക്കേണം. സൎവ്വരോഗചികിത്സെക്കുള്ള ചെറിയ ഗുളികകളെ കൊണ്ടു എത്രയും കീൎത്തിപ്പെട്ട ഹൊലോവെ സാഹ്ബ് ൮൪ വയസ്സുള്ളവനായി മരിച്ചു. അവൻ ബഹുധനവാനായിരുന്നു എങ്കിലും ഔദാൎയ്യശീലനത്രെ. ദരിദ്രക്കുട്ടികളുടെ പഠിപ്പിന്നായി ഒരു കൊല്ലത്തിൽ ൩൦ ലക്ഷം ഉറുപ്പിക സമ്മാനിച്ചതല്ലാതേ ഗതിയില്ലാത്തവൎക്കു സഹായിപ്പാൻ എപ്പോഴും മനസ്സുള്ളവനായിരുന്നു.

ഗൎമ്മാന്യ രാജ്യത്തിൽ പ്രായപ്പെട്ട മൂന്നു കിഴവന്മാർ ഇനി നല്ല സൌഖ്യത്തോടും ദേഹിദേഹബലത്തോടും ഇരിക്കയും രാജ്യകാൎയ്യങ്ങളെ നടത്തുകയും ചെയ്യുന്നതു ദൈവത്തിന്റെ വലിയ കരുണ തന്നേ. അവരുടെ നേരേ സ്ഥിതിസമത്വക്കാൎക്കും തന്നേ ഒന്നും പ്രവൃത്തിപ്പാൻ സാധിക്കുന്നില്ല. ആ കൂട്ടക്കാരുടെ ഒരു പ്രധാനിയായ ലസ്കർ അമേരിക്കദേശത്തിൽ അന്തരിച്ചപ്പോൾ അവിടത്തേ സൎക്കാർ ഗൎമ്മാന്യ ഗവൎമ്മെണ്ടിലേക്കു ഈ സംഭവം അറിയിച്ചു അവന്നു വേണ്ടി ഒരു വിലാപപത്രിക അങ്ങോട്ടയക്കേണം, എന്നപേക്ഷിച്ചു, അതിന്നു ബിസ്മാൎക്ക പ്രഭു: അയാൾ എപ്പോഴും ഗൎമ്മാന്യക്കോയ്മയുടെ നേരേ വിരോധം അത്രേ പ്രവൃത്തിച്ചതിനാൽ അവന്റെ മരണം നിമിത്തം അധികം വിലാപിപ്പാൻ സംഗതിയില്ല, എന്നുത്തരം അറിയിച്ചു. അതിനാൽ സ്ഥിതി സമത്വക്കാർ വളരേ ദുഃഖിച്ചു എങ്കിലും വിരോധിപ്പാൻ ധൈൎയ്യം ഉണ്ടായില്ല. ഗൎമ്മാന്യയിൽ എങ്ങും

അഹോ പ്രകൃതിസാദൃശ്യം
ശ്ലേഷ്മണോദുൎജ്ജനസ്യച
മധുരൈഃ കോപമായാതി
കടുകൈരുപശാമ്യതി! അൎത്ഥാൽ: കഫത്തിന്റെയും ദുൎജ്ജനത്തിന്റെയും സാദൃശ്യം ആശ്ചൎയ്യം തന്നേ. മധുരം കൊണ്ടു കോപിക്കും ക്രൂരം കൊണ്ടു ശമിക്കും! എന്നതു അറിഞ്ഞതിനാൽ ഈ ദുഷ്ടരെ ഒരു ക്ഷമ കൂടാതേ അമൎത്തിവെക്കുന്നുണ്ടു. അതിനാൽ സാധുജനങ്ങൾക്കു വളരേ ആശ്വാസം ഉണ്ടു.

ഈ കഴിഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ എങ്ങും ക്രിസ്തീയസഭയുടെ നവീകരണം നടത്തിയ ലുഥരിന്റെ ഓൎമ്മെക്കായി വളരേ ഘോഷത്തോടേ ഓരോ ഉത്സവങ്ങൾ കഴിക്കയും ക്രിസ്തീയ വിശ്വാസത്തിന്നും സ്നേഹത്തിന്നും സാക്ഷിയായി ഓരോ ജനോപകാരമായ സ്ഥാപനങ്ങളെ നിശ്ചയിക്കയും ചെയ്തിരിക്കുന്നു. ലുഥർ ഉപദേശിച്ചു വന്ന വിത്തംബൎഗ്ഗ് പട്ടണത്തിൽ പ്രത്യേകം വളരേ ആളുകൾ കൂടി ചക്രവൎത്തിയുടെ കുമാരനും വന്നു ലുഥരിന്റെ ശവക്കുഴിമേൽ പൂമാല ഇട്ടു. അവന്റെ ഓൎമ്മെക്കായി വിശേഷമായ പ്രസംഗം കഴിക്കയും ചെയ്തു.

ശേഷം വലിയൊരു ഉത്സവം സപ്തെംബർ മാസത്തിലേ ൨൭-ാംനു രാജ്യത്തിൽ എങ്ങും കൊണ്ടാടിയിരുന്നു. ഫ്രഞ്ചുയുദ്ധത്തിൽ പ്രാപിച്ച ജയത്തിന്റെ ഓൎമ്മെക്കായി നിശ്ചയിക്കപ്പെട്ട സ്മരണചിഹ്നം റീദെൻ ഹൈൻ എന്ന സ്ഥലത്തിലേക്കു കൊണ്ടു വന്നു അവിടെ ഒരു മലയിൽ സ്ഥാപിച്ചു പ്രതിഷ്ഠ ചെയ്യേണ്ടതിന്നു രാജ്യത്തിൽനിന്നും എങ്ങും ആളുകൾ കൂടി സന്തോഷിച്ചു. ദിവ്യയമുള്ള ചക്രവൎത്തിയും എത്തി. മനത്താഴ്മയോടു കൂടേ ദൈവത്തെ സ്തുതിക്കയും ചെയ്തു.

വിശേഷിച്ച ഗൎമ്മാന്യൎക്ക സ്വന്തദേശത്തിലും മററു രാജ്യങ്ങളോടും സമാധാനം ഉണ്ടായിരുന്നു. സ്പാന്യരുടെ രാജാവായ അൽഫന്സ്സൊ ഗൎമ്മാന്യദേശത്തിൽ വന്നു വളരേ സ്നേഹവും സന്തോഷവും അനുഭവിച്ചു. അങ്ങോട്ടു പ്രിയം കാട്ടിയതിനാൽ പ്രഞ്ച്യക്കാർ അറിഞ്ഞു മുഷിഞ്ഞു. അവർ പ്രഞ്ച്യരാജ്യത്തിൽ എത്തിയപ്പോൾ അവനെ ദൂഷണങ്ങളോടും അപമാനത്തോടും കൂടേ എതിരേററു വളരേ വ്യസനിപ്പിക്കയും ചെയ്തു.

എന്നിട്ടും പ്രശംസിപ്പാൻ സംഗതിയില്ല. അവിശ്വാസവും ഭക്തികേടും രാജ്യത്തിൽ വളരേ ഉണ്ടു. ദോഷവും വൎദ്ധിക്കേയുള്ളു. അങ്ങിനേ ഭയങ്കരമായ ഒരു കുലപാതകം സ്ത്രാസ്ബുൎഗ്ഗ് എന്ന പട്ടണത്തിൽ സംഭവിച്ചു. ഒരു മരുന്നുഷാപ്പിൽ ഒരാൾ യദൃച്ഛയാ കടന്നു വില്ക്കുന്നവനെ മുറിവേല്പിച്ചു കൊന്നു, പണങ്ങൾ അപഹരിച്ചു ഓടിപ്പോയി പട്ടണത്തിന്റെ വാതിൽക്കൽ നിന്ന കാവല്ക്കാരനെയും കൊന്നു മാറി പോയ്ക്കളഞ്ഞു.

ഔസ്ത്രിയരാജ്യത്തിലുള്ള അവസ്ഥകൾ അത്ര സന്തോഷമായവയല്ല. അന്യരാജ്യങ്ങളുമായി സമാധാനവും പ്രിയവും ഉണ്ടെങ്കിലും ജനങ്ങളിൽ വെച്ചു ദോഷവും അക്രമവും ഭയങ്കരമായി വൎദ്ധിച്ചു വരുന്നു. അങ്ങിനെ ഹുങ്കാൎയ്യദേശത്തിലേ ഒന്നാം ന്യായാധിപനായ മയിലററ കൎത്താവിനെ സ്വന്തപണിക്കാർ കൊന്നു കളഞ്ഞു. അവൻ രാത്രിയിൽ വീട്ടിൽ വന്നപ്പോൾ മൂന്നു നാലു ആൾ അവനെ പിടിച്ചു കാലും കൈയും കെട്ടിയ ശേഷം കയറുകൊണ്ടു ഞെക്കിക്കൊന്നുകളഞ്ഞു.

വ്യന്നപട്ടണത്തിൽ നന്ന രാവിലേ ഒരാൾ ഒരു ഷാപ്പിൽ പ്രവേശിച്ചു. ഉടമസ്ഥന്റെ കണ്ണിൽ പുകയിലപ്പൊടി ഇട്ടു അവനു മുറിവു ഏല്പിച്ചു. അടുത്ത മുറിയിൽ ചെന്നു അവിടേ രണ്ടു കുട്ടികളുമായി പഠിപ്പിച്ചുകൊണ്ടിരിക്കുന്ന മിസ്സിയെയും ഏകദേശം കൊന്നു പണം പറിച്ചു പോയ്ക്കളഞ്ഞു.

വേറേ ഒരു ദുഷ്ടനെ പിടിച്ചു ശിക്ഷിപ്പാൻ സംഗതി വന്നതിനാൽ ഉപകാരം. ആയവൻ പെണ്കുട്ടികളെ വശീകരിച്ചു വിവാഹം ചെയ്വാൻ വാഗ്ദത്തം ചെയ്തിട്ടു അവരെ ഏകാന്തസ്ഥലത്തിൽ ക്ഷണിക്കയും അവിടേ പണം അപഹരിച്ചു കൊല്ലുകയും ചെയ്തു. അങ്ങിനെ ൫-ന്നു പെണ്കുട്ടികളിൽ സാധിച്ചു കഷ്ടം.

ബുഢപെസ്റ്റ എന്ന പട്ടണത്തിന്റെ തപ്പാലാപ്പീസ്സിൽനിന്നു ൨൫൫,000 ഉറുപ്പികയുള്ള ഖജാൻപെട്ടി ആശ്ചൎയ്യമാം വണ്ണം കാണാതേപോയിരിക്കുന്നു.

മനുഷ്യർ ചെയ്യുന്ന ദോഷം കൂടാതേ പല അപകടങ്ങളും ഈ ദേശത്തിൽ സംഭവിച്ചു. ഹുങ്കാൎയ്യദേശത്തിലേ സ്സൈ എന്ന നദിയിൽ ൩൫ പേരോളം ഉള്ള ഒരു കല്യാണക്കൂട്ടം ശീതത്താൽ ഉറച്ച വെള്ളത്തിന്മേൽ നടക്കുമ്പോൾ അതു പൊട്ടി പിളൎന്നതിനാൽ എല്ലാവരും മുങ്ങി ചാകയും ചെയ്തു.

ക്രൊ ആസ്യസംസ്ഥാനത്തിൽ ഒരു മത്സരം ഉണ്ടായിരുന്നു. ആ ജാതിക്കും ഹുങ്കാൎയ്യൎക്കും തമ്മിൽ അശേഷം മനച്ചേൎച്ചയില്ലായ്കയാൽ ഒരു കോയ്മയുടെ കീഴിൽ ഇരിപ്പാൻ ബഹു അനിഷ്ടം തോന്നുന്നു.

ഒരു ഉത്സവത്തിൽ അത്ര ജനങ്ങൾ എല്ലാവരും ഒരുമനപ്പെട്ടു കൂടി സന്തോഷിച്ചു. അതെന്തെന്നാൽ: ൨00 സംവത്സരങ്ങൾക്കു മുമ്പെ തുൎക്കർ വന്നു വ്യന്ന എന്ന മുഖ്യപട്ടണത്തെ വളഞ്ഞു അതിന്നു മൂലച്ഛേദം വരുത്തുവാൻ ഭാവിച്ചപ്പോൾ നഗരനിവാസികൾ അത്ഭുതമായ പരാക്രമം കാണിച്ചു മൂന്നു ലക്ഷം തുൎക്കരെ ചില മാസത്തോളം തടുത്തു. കഷ്ടം വൎദ്ധിച്ചു നാശം അടുത്തിരുന്ന സമയം പോലരുടെ രാജാവായ യോഹന്നാൻ സൊബിയേസ്കി സഹായത്തിന്നു എത്തി തുൎക്കരെ ജയിച്ചു ഓടിപ്പിക്കയും ചെയ്തു.

ഈ സംഭവത്തിന്റെ ഓൎമ്മെക്കായിട്ടു വ്യന്നപട്ടണത്തിലും ദേശത്തിലെങ്ങും ഒരു

മഹോത്സവം കഴിച്ചു രാജകുഡുംബവും മഹാന്മാരും ജനങ്ങളുമായി കൂടി ഓരോ വിശേഷ ക്കാഴ്ചകളിൽ മനഃപൂൎവ്വം പ്രസാദിച്ചു പോന്നു.

തുൎക്കരുടെ രാജ്യത്തിൽ മരണത്തിൻെറ ശാന്തത അത്രേ വാഴുന്നു. പാഷാവും മന്ത്രികളും പണം നിമിത്തമായി വളരേ ബുദ്ധിമുട്ടിലിരിക്കുന്നു. സഹായത്തിന്നായിട്ടു എങ്ങും നോക്കി അപേക്ഷിച്ചു. ഒരു സാദ്ധ്യം കാണായ്കകൊണ്ടു ഒന്നും ചെയ്വാൻ കഴിവില്ല. അതു തന്നേ മിസ്രദേശത്തിലും കാണുന്നു.

അവിടേ കഴിഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ മാധി ഇമാൻ എന്നൊരു കള്ളപ്രവാചകൻ എഴുന്നീററു താൻ മുഹമ്മദ് മുന്നറിയിച്ച പരമാൎത്ഥമായ പ്രവാചകനാകയാൽ മുസല്മാനരുടെ മാൎഗ്ഗത്തെ നവീകരിപ്പാൻ വിചാരിക്കുന്നു എന്നു പരസ്യമാക്കി വളരേ ആളുകളെ വശീകരിക്കയും ചെയ്തു. ഏകദേശം രണ്ടു കൊല്ലത്തോളം യുദ്ധം ചെയ്തു ശേഷം ഉപരാജാവു ഹിക്ക എന്ന ഇംഗ്ലിഷ് സഹസ്രാധിപനെ അവൻെറ നേരേ അയച്ചു. എന്നാൽ കുറേ കാലം കഴിഞ്ഞിട്ടു ഈ സൈന്യം എല്ലാം നശിച്ചു എന്നറിഞ്ഞപ്പോൾ സഹായത്തിന്നായി വേറേ നായകന്മാരെ സൈന്യങ്ങളുമായി അയച്ചു എങ്കിലും അവരും നശിച്ചു. ജയം കൊണ്ടതിനാൽ കള്ളപ്രവാചകൻെറ സൈന്യം വളരേ വൎദ്ധിച്ചു മൂന്നു ലക്ഷം ആളുകളോളം ആയി വന്നു. മിസ്രക്കാർ വലിയ സങ്കടത്തിൽ ഇരിക്കുന്നു, എന്നു ഇംഗ്ലിഷ്ക്കാർ കണ്ടു തങ്ങൾ തന്നേ ഈ യുദ്ധത്തിന്നായി പുറപ്പെട്ടു. മുമ്പേ സൂദാൻ ദേശത്തിൽ നാടുവാഴിയായി ജനരഞ്ജന സമ്പാദിച്ച ഗൊൎദ്ദോൻ സഹസ്രാധിപനെ വിളിച്ചു മേലധികാരം അവൻെറ കൈയിൽ ഏല്പിച്ചു. അവൻ ദേശത്തിൽ എത്തും മുമ്പേ ബേക്കർ പഷ തോക്കാർ എന്ന സ്ഥലത്തു അപജയപ്പെട്ടു സൈന്യം ഇല്ലാതായിപ്പോയി എന്ന വൎത്തമാനം കേട്ടു. ആയവൻെറ സഹായത്തിൽ ഗോൎദ്ദാൻ സേനാപതി പ്രത്യേകം ആശ്രയിച്ചതുകൊണ്ടു ഈ തോല്മനിമിത്തം വളരേ മുഷിഞ്ഞു എങ്കിലും സാവധാനത്തോടേ ദേശത്തിൽ പ്രവേശിച്ചു. ഖൎത്തൂൻ എന്ന മുഖ്യസ്ഥലത്തിൽ നിവാസികളോടു പ്രിയം കാട്ടി അവരെ തൻെറ പക്ഷത്തിലാക്കുകയും ചെയ്തു. അതിന്നിടേ കപ്പൽവ്യൂഹത്തിൻെറ സേനാപതിയായ യുവെൎത്ത സൂചികം എന്ന കോട്ടയെ രക്ഷിച്ചു. എന്നാൽ സിൽക്കത്ത, തോകൎത്ത എന്ന മററു രണ്ടു കോട്ടകളെ ഒസ്മാൻ പാഷാ പിടിച്ചു വളരേ ക്രൂരതയോടേ ആളുകളെ സംഹരിച്ചു. ഇവൻെറ നേരേ ഗ്രഹംസേനാപതി പുറപ്പെട്ടു ജയം കൊണ്ടു തോകൎത്ത കോട്ടയെ പിടിച്ചു. ഒസ്മാൻ രണ്ടാമതു സൈന്യം കൂട്ടി യുദ്ധത്തിന്നായി വരുമ്പോൾ അവനെ ജയിച്ചു പൎവ്വതങ്ങളിലേക്കു ആട്ടിക്കളഞ്ഞു. ആ സമയം ഗോൎദ്ദാൻ സാഹിബിൻെറ പ്രവൃത്തി എല്ലാം നന്നായി ഫലിച്ചു ഖൎത്തൂൻപട്ടണത്തിൽ സമാധാനം തന്നേ ഉണ്ടായിരുന്നു. പെട്ടന്നു ഒരു ദിവസത്തിൽ ഒസ്മാൻപാഷാ സൈന്യങ്ങളുമായി വന്നു പട്ടണത്തെ വളഞ്ഞുകൊണ്ടിരുന്നു. അങ്ങിനേ ഗോൎദ്ദാൻ സാഹിബും അവൻെറ സൈന്യവും ഒരുമിച്ചു ഈ കുടുക്കിൽ അകപ്പെട്ടു. അറവികളിലും എത്ര വിശ്വാസം വെപ്പാൻ കഴിയും എന്നു അറിയായ്കകൊണ്ടു വളരേ അപകടമുള്ള സ്ഥിതിയിൽ ഇരിക്കുന്നു. ഈ വൎത്തമാനം ഇംഗ്ലന്തിൽ എത്തിയ ശേഷം അവരുടെ രക്ഷെക്കായി വളരേ ആളുകൾ കൂടി പണങ്ങൾ ശേഖരിച്ചു ഒരു സൈന്യത്തെ അങ്ങോട്ടയപ്പാൻ വിചാരിക്കുന്നു.

മിസ്രക്കാരുടെ രാജാവിന്നു ഈ കാൎയ്യത്തിൽ ഒന്നും ചെയ്വാൻ ശക്തി പോരാ. അവൻെറ പടജ്ജനങ്ങൾ ഭീരുക്കളും കള്ളന്മാരും അത്രേ. പോരിൽ നില്ക്കുന്നതിന്നു പകരം കഴിയുന്നേടത്തോളം വേഗത്തിൽ പോയ്ക്കളഞ്ഞു പ്രാണരക്ഷയെ അന്വേഷിക്കുന്നു. പഴയ കടങ്ങളെ തീൎക്കുവാൻ ഒരു വഴി കാണായ്കകൊണ്ടു എങ്ങും പുതിയ പണസ്സഹായ

ങ്ങൾ കിട്ടുകയില്ല. ആയതുകൊണ്ടു ഈ പണവിശേഷങ്ങളെ ആലോചിച്ചു തീൎക്കേണ്ടതിന്നു ഇംഗ്ലിഷ്ക്കോയ്മ്മ മററുള്ള രാജ്യങ്ങളുടെ മന്ത്രികളെ ഒരു യോഗത്തിന്നായി ക്ഷണിച്ചു. അവർ നിശ്ചയിക്കുന്നതിൽ രാജാവു താൻ സമ്മതിക്കുന്നു പോൽ.

രുസ്സ്യരാജ്യത്തിൽ ഈ കഴിഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ കുറേ സുഖം ഉണ്ടായിരുന്നെങ്കിലും സ്ഥിതിസമത്വക്കാരുടെ ദുഷ്പ്രവൃത്തി ഇനിയും രഹസ്യത്തിൽ നടക്കുന്നു. അങ്ങിനേ ഒരിക്കൽ അവർ ഒരു പൊലീസ്സുമേലധികാരിയോടു ഒരു വീട്ടിൽ വളരേ സ്ഥിതിസമത്വക്കാർ കൂടിവന്നിരിക്കുന്നു എന്നൊരു കള്ളവൎത്തമാനം അറിയിച്ചു. അവൻ നിശ്ചയിച്ച വീട്ടിൽ വന്നു പ്രവേശിച്ചപ്പോൾ പെട്ടന്നു വാതിൽ തുറന്നു രണ്ടു സ്ഥിതിസമത്വക്കാർ അവനെ വെടിവെച്ചു കൊന്നു കളഞ്ഞു. ഈ ദുഷ്ടരെ പിടിപ്പാൻ എത്ര ഉത്സാഹിച്ചാലും സാദ്ധ്യമില്ല. അവരുടെ നാശകരമായ പ്രവൃത്തികൊണ്ടു അത്രേ അവരെ അറിയാം.

ചക്രവൎത്തിയുടെ കിരീടധാരണം ഒരു അക്രമം കൂടാതേ കൊണ്ടാടുവാൻ ആ ദുഷ്ടന്മാർ സമ്മതിച്ചതു ആശ്ചൎയ്യം തന്നേ. ഈ ഉത്സവം ബഹു കൌതുകത്തോടും തേജസ്സോടും കൂടേ മേയി ൨൪-ാംനു- മൊസ്ക്കൗ എന്ന പട്ടണത്തിൽ കഴിഞ്ഞു. രാജ്യത്തിന്റെ എല്ലാ ദിക്കുകളിൽനിന്നു ചേൎന്നു വന്ന മഹാന്മാരും ജനങ്ങളും പൂൎണ്ണസന്തോഷം അനുഭവിക്കയും ചെയ്തു.

മുമ്പേത്ത ചക്രവൎത്തി മരണംപ്രാപിച്ച സ്ഥലത്തിൽ വലുതായിട്ടുള്ള ഒരു പള്ളി അവരുടെ ഓൎമ്മെക്കായി സ്ഥാപിക്കേണ്ടതിന്നു കല്പന പരസ്യമായി. അതിന്നായിട്ടു കോയ്മ്മ ൮൦ ലക്ഷം ഉറുപ്പിക നിശ്ചയിച്ചു. ൧൦ കൊല്ലത്തിൻ അകം ആ നിൎമ്മാണത്തെ തീൎപ്പാൻ ഭാവിക്കുന്നു.

സ്വേദരുടെ രാജാവിന്നു അതിന്നു ചേൎന്നിരിക്കുന്ന നൊൎവ്വെഗദേശത്തിലും വാഴ്ച ഉണ്ടാകയാൽ അവിടത്തേ രാജസഭ അവന്നു വളരേ വിരോധമായിരിക്കുന്നു. ആകയാൽ രാജാവിന്റെ മന്ത്രിയായ സേല്മർകൎത്താവിന്റെ നേരേ സംഗതി കൂടാതേ ഒരു അന്ന്യായം കൊണ്ടുവന്നു. അവർ തന്നേ അവനെ വിസ്തരിച്ചു, കുററമില്ലാത്തവനെ മന്ത്രിസ്ഥാനത്തിൽനിന്നു നീക്കി. ഒരിക്കലും സൎക്കാർ ഉദ്യോഗം ഇനി ഉണ്ടാകരുതു എന്നും വ്യവഹാരത്തിന്റെ ചെലവു പിഴയായിട്ടു സഹിക്കേണം എന്നും കല്പിച്ചതിനാൽ രാജാവിന്നു ദേശത്തിൽ മേലധികാരം ഇല്ല എന്നു പ്രസ്ഥാപിപ്പാൻ വിചാരിച്ചു, രാജാവിന്നു വളരേ വ്യസനം ഉണ്ടായി. വിശ്വസ്തനായ തന്റെ മന്ത്രിയെ കഴിയും വണ്ണം മാനിച്ചു, എങ്കിലും രാജസഭ മത്സരമായി വിധിച്ച വിധിയെ നീക്കുവാൻ ധൈൎയ്യം ഉണ്ടായില്ല.

ഫ്രെഞ്ചു രാജ്യത്തിൽ കാൎയ്യം എല്ലാം ഇനിയും അമാന്തമായി കിടക്കുന്നു. സ്ഥിതിസമത്വക്കാരും ജനപ്രഭുത്വക്കാരും ചക്രവൎത്തിപ്രിയരും രാജവിശ്വസ്തരും എന്ന പല പല കൂട്ടരായി ജനങ്ങൾ പിരിഞ്ഞു നടക്കുന്നതിനാൽ രാജ്യത്തിൽ ഒരു സുഖവും ഒരു സാദ്ധ്യവും ഇല്ല. എന്നിട്ടും അഹംഭാവം മാറീട്ടില്ല. ലോകത്തിൽ പ്രധാനജനം അവർ തന്നേ എന്നു വമ്പു പറകയും ഗൎമ്മാന്യരുടെ നേരേ ഉഗ്രകോപം തന്നേ മനസ്സിൽ ധരിക്കയും ചെയ്യുന്നു. ബലമില്ലാത്ത സൎക്കാർ പ്രയാസേന അത്രേ അധികാരം നടത്തുന്നു. പണ്ടുള്ള രാജകുഡുംബത്തിന്റെ നേരേ ഓരോ കഠിനകല്പനകളെ നടത്തിയതിനാൽ പല ആളുകൾക്കു മുഷിച്ചൽ തോന്നുന്നു. ഈ കുഡുംബത്തിലേ ശ്രേഷ്ഠനായ ഷാംബോർപ്രഭു ഔഗുസ്തമാസം ൨൪-ാംനു- കഴിഞ്ഞതു കൊണ്ടു പരീസ്സ് പ്രഭു കാരണവനായി തീൎന്നപ്പോൾ അവനെ ദേശത്തിൽനിന്നു പുറത്താക്കി എങ്കിലും അവൻ സ്വാന്ത്യരാജ്യത്തി

ലേക്കു പുറപ്പെടുന്ന ദിവസത്തിൽ വളരേ ആളുകൾ കൂടി സ്നേഹത്തോടേ വിടവാങ്ങുകയും ചെയ്തു.

മുമ്പേ കേട്ട പ്രകാരം ഗൎമ്മാന്യരുടെ നേരേയുള്ള കോപം നിമിത്തം സ്വാന്യരുടെ രാജാവു ഗൎമ്മാന്യദേശത്തിൽ വന്നു ചക്രവൎത്തിയുമായി വളരേ സ്നേഹത്തോടേ പെരുമാറുകയും ഗൎമ്മാന്യസൈന്യത്തിൻ ബഹുമതിക്കായി ഒരു സ്ഥാനം കൈക്കൊള്ളുകയും ചെയ്തതിനാൽ പ്രഞ്ചുകാൎക്കു ബഹുമുഷിച്ചൽ തോന്നി ആകയാൽ ഈ രാജാവു അങ്ങോട്ടു ചെന്നു, പറീസ്സ് പട്ടണത്തിൽ പ്രവേശിക്കുമ്പോൾ ജനങ്ങൾ അവനെ അപമാനിക്കയും പരിഹസിക്കയും ചെയ്തതു അവന്നു വലിയ വ്യസനം തോന്നി.

ഈ അഹംഭാവം നിമിത്തം തന്നേ അന്യരുമായി രണ്ടു ദിക്കിൽ യുദ്ധം തുടങ്ങി. ചീനക്കാരുടെ മേൽവിചാരണയിലിരിക്കുന്ന തൊങ്കിൻ അൎദ്ധദ്വീപിൽ പ്രഞ്ചുകാൎക്കും പഴയ ഒരവകാശം ഉണ്ടു എന്നു നടിച്ചും കൊണ്ടു സൈന്യങ്ങളെ അങ്ങോട്ടയച്ചു. ബലഹീനരായ ചീനക്കാരുടെ കൈകളിൽനിന്നു പറിച്ചു മേലധികാരം അപഹരിക്കയും ചെയ്തു.

അപ്രകാരം തന്നേ മദഗാസ്കർ എന്ന വലിയ ദ്വീപിന്റെ ഒരംശം പ്രഞ്ചുകാൎക്കുള്ളതു എന്നു ചൊല്ലി, തീക്കപ്പലുകളെ അയച്ചു വെടിവെക്കുകയും ഓരോ ബലാത്കാരം പ്രവൃത്തിക്കയും ചെയ്കതിനാൽ എല്ലാവൎക്കും വളരേ അനിഷ്ടമായി തീൎന്നു. എന്നാൽ ഇതുവരേ ഈ ദ്വീപിൽ അവൎക്കു വിശേഷിച്ചു ഒരു സാദ്ധ്യം വന്ന പ്രകാരം കാണുന്നില്ല.

ഇതാല്യദേശത്തിൽ സംഭവിച്ച ഒരു മഹാ അപകടം നിമിത്തമായി എങ്ങും വലിയ ദുഃഖവും വിലാപവും പരന്നു പോയി. നേയാപ്പൾ പട്ടണത്തിന്നു സമീപം ഇഷ്കിയ എന്ന എത്രയോ ഭംഗിയുള്ള ഒരു ദ്വീപുണ്ടു. വിലാത്തിക്കാർ എല്ലാ ദിക്കുകളിൽനിന്നു അവിടേ വന്നു ശരീരസുഖത്തിന്നായി പാൎത്തു കുളിക്കയും ചെയ്യുന്നു. അവിടേ പെട്ടന്നു ഭയങ്കരമായ ഒരു ഭൂകമ്പത്താൽ ൮൦൦൦ത്തോളം ആളുകൾ നശിച്ചു പോയി. സൎക്കാർ ആളുകളെ കഴിയുന്നേടത്തോളം ജീവനോടേ രക്ഷിക്കേണ്ടതിന്നു വളരേ പ്രയത്നം കഴിച്ചു. ഉടനേ ൩൫൦൦ ആളുകളെ സഹായത്തിന്നയച്ചു. രാജാവു താനും മന്ത്രികളും അങ്ങോട്ടു പോയി, കഷ്ടം എല്ലാം കണ്ടിട്ടു രാജാവു കണ്ണുനീരോടു കൂടേ ജനങ്ങളെ ആശ്വസിപ്പിക്കയും ചെയ്തതല്ലാതേ ഒരു ലക്ഷം ഉറുപ്പികയും കൊടുത്തു പോൽ. എന്നാൽ മനുഷ്യരുടെ പ്രയത്നം കൂടാതേ ദൈവം താൻ പലരെ ആശ്ചൎയ്യമാംവണ്ണം ജീവനോടേ രക്ഷിച്ചതു എങ്ങിനേ എന്നാൽ: രണ്ടു മതാമ്മമാർ ൫൦ മണിക്കൂർ, ൧൦ കുട്ടികൾ ൩൮ മണിക്കൂർ ശേഷിപ്പുകളാൽ മൂടപ്പെട്ടിരുന്നിട്ടു രക്ഷ പ്രാപിച്ചു, ഒരു പടയാളി ൧൨൫ മണിക്കൂർ കഴിഞ്ഞിട്ടത്രേ രക്ഷപ്പെട്ടു.

രാജാവിന്നു ജനങ്ങളുടെ നേരേ വളരേ വാത്സല്യം ഉണ്ടെങ്കിലും സ്ഥിതിസമത്വക്കാർ ഒന്നും കൂട്ടാക്കാതേ അവനെയും കൊല്ലുവാൻ പുറപ്പെട്ടു ദൈവകരുണയാൽ സാധിച്ചില്ലതാനും.

വിക്തോർ ഇമ്മാനുവേൽ എന്ന മുമ്പേത്ത രാജാവിന്റെ ഓൎമ്മെക്കായി രോമയിൽ വെച്ചു വലിയ ഉത്സവം കഴിക്കപ്പെട്ടു ൨൫൦൦൦ ആളുകൾ ൧൫൦൦ കൊടിക്കൂറകളുമായും ൮൦ കൂട്ടം വാദ്യക്കാരുമായും പന്തെയോൻ എന്ന ശ്മശാനശാലയിൽ ചെന്നു, രാജാവിന്റെ ശ്മശാനസ്ഥലത്തിന്നു പ്രദക്ഷിണം ചെയ്തു. പൂക്കൾ കൊണ്ടു അലങ്കരിക്കയും അവന്റെ ഓൎമ്മെക്കായി നന്ദിയുള്ള പ്രസംഗങ്ങളെ കഴിക്കയും ചെയ്തു.

ഗൎമ്മാനരാജകുമാരൻ സ്വാന്യയിലേക്കുള്ള യാത്രയിൽ രോമയിൽ കടന്നു വരുമ്പോൾ രാജകുഡുംബത്തെ കണ്ട ശേഷം പാപ്പാവിനെ കാണ്മാനായിട്ടു പോയി അവനോടു വളരേ സ്നേഹമായി പെരുമാറുകയും ചെയ്തു.

അമേരിക്കദേശത്തിൽനിന്നു നമുക്കു വന്ന വൎത്തമാനങ്ങൾ പല പ്രകാരത്തിൽ ആശ്ചൎയ്യമുള്ളവ തന്നേ. സകലവിദ്യകളിലും എല്ലാ യുക്തിപ്രയോഗങ്ങളിലും വളരേ വൎദ്ധന കാണുന്നതല്ലാതേ നിവാസികളുടെ സംഖ്യ അത്യന്തം പെരുകുകയും ചില പട്ടണങ്ങൾ ആശ്ചൎയ്യമാംവണ്ണം വേഗത്തിൽ വലുതാകയും ചെയ്യുന്നു.

ഇപ്പോൾ പാനമ എന്ന വടക്കും തെക്കുമുള്ള അമേരിക്കയുടെ നടുവിലിരിക്കുന്ന കരയിടുക്കു മുറിച്ചു, ഒരു തോടു കീറി പണിയിപ്പാൻ തുടങ്ങിയിരിക്കുന്നു. ഈ പ്രവൃത്തിക്കായി ൧൫൦൦൦ കൂലിക്കാരും ൩൯ കപ്പലുകളും, ൧൩൨ തീയന്ത്രങ്ങളും ൪൦൦൦ തീവണ്ടികളും വരുത്തുവാൻ നിശ്ചയിച്ചു പണി മുഴുവൻ തീൎക്കേണ്ടതിന്നു ൨൦ കോടി ഉറുപ്പികയും മൂന്നു കൊല്ലം അവധിയും സമ്മതിച്ചു പ്രവൃത്തി തുടങ്ങി എങ്കിലും കൂലിക്കാരെ കിട്ടുവാൻ വളരേ പ്രയാസം ആകയാൽ മുടക്കം വന്ന പ്രകാരം കേൾക്കുന്നു. കൂലി രണ്ടര ഉറുപ്പികയാകുന്നു എന്നു കേട്ടാൽ മനസ്സു അങ്ങോട്ടു വലിക്കുന്നവരോടു മെല്ലവേ ഈ കാൎയ്യത്തിന്നായി പുറപ്പെടുവാൻ ആലോചന എന്തെന്നാൽ പ്രവൃത്തി വളരേ പനിയുള്ള സ്ഥലത്തു തന്നേ നടത്തിവരുന്നതിനാൽ കൂലിക്കാർ കൂട്ടമായി തന്നേ ഒരു സഹായം കൂടാതേ നശിക്കയും ചെയ്യുന്നു.

തെക്കേ അമേരിക്കയിൽ മൊന്തോവിദേയോ എന്ന പട്ടണത്തിന്റെ നിവാസികൾക്കു യദൃച്ഛയാ ഒരു ആപത്തു വന്നു കൂടി. പല സ്ത്രീകളും കുട്ടികളും കടപ്പുറത്തു കളിക്കുന്ന സമയം പെട്ടന്നു സമുദ്രം വാങ്ങിപ്പോയി മുമ്പേ വെള്ളം മൂടിയ ഒരു വലിയ സ്ഥലം കരയായി കാണായ്വന്നു. കുട്ടികൾക്കു വലിയ സന്തോഷം ആയി. അവർ കളിച്ചും തുള്ളിയും ചിരിച്ചും കൊണ്ടിരിക്കേ ദൂരത്തുനിന്നു സമുദ്രം ഭയങ്കരമായ ഘോഷത്തോടേ എത്രയോ ഉയൎന്ന തിരമാലയായിട്ടു വീണ്ടും മടങ്ങിവന്നപ്പോൾ എല്ലാവരും ഭ്രമിച്ചു ഓടിപ്പോവാൻ നോക്കി എങ്കിലും നൂററിൽ പരം ആത്മാക്കൾ വെള്ളം കുടിച്ചു നശിക്കയും ചെയ്തു.

ചീനരാജ്യത്തിന്നു പ്രഞ്ചുകാരെക്കൊണ്ടു അന്യായം തന്നേ ഉണ്ടായി നിശ്ചയം. എന്നാൽ അവർ കുററമില്ലാത്ത എല്ലാ അന്യജാതിക്കാരുടെ നേരേ കോപിക്കയും അവരെ കഴിയുന്നേടത്തോളം ഉപദ്രവിച്ചു ഹിംസിക്കയും ചെയ്യുന്നതു വലിയ ദുൎബ്ബുദ്ധി അത്രേ. അപ്രകാരം തന്നേ ക്രിസ്തീയമാൎഗ്ഗം അന്യദേശക്കാരെക്കൊണ്ടു പരത്തിയതാകയാൽ അതിനെയും വിരോധിക്കയും ക്രിസ്ത്യാനികളെ ഹിംസിക്കയും ചെയ്തതു മഹാ സങ്കടം തന്നേ. സൎക്കാർ ആയതിനെ വിരോധിക്കുന്നു. എന്നാൽ ദേശത്തിൽ എങ്ങും അധികാരം അനുസരിക്കാത്ത പല കൂട്ടർ നടന്നു പോരുന്നു. ഗ്രാമങ്ങളെ നശിപ്പിക്കയും ഉള്ളതെല്ലാം കവൎന്നു സംഹരിക്കയും ആളുകളെ ഹിംസിക്കയും ചെയ്യുന്നതിന്നു ഒരു അമൎച്ചയും കല്പിക്കേണ്ടതിന്നു ബലം പോരായ്കയാൽ, ഈ മത്സരക്കാരെക്കൊണ്ടു ൨൦൦ഇല്പരം ക്രിസ്ത്യാനികൾക്കും പ്രാണഹാനി വന്നു.

എന്നാൽ സാധുക്കളായവരെ ഹിംസിപ്പാൻ എത്രയും ധൈൎയ്യമുള്ള ഈ പടജ്ജനങ്ങൾ ശത്രുവിന്റെ നേരേ യുദ്ധം ചെയ്യുന്നതിൽ മഹാഭീരുക്കളായി പോർ തുടങ്ങും മുമ്പേ തന്നേ പിന്മണ്ടി പ്രാണരക്ഷെക്കായി ഓടിപ്പോകയും ചെയ്യുന്നു. അതുകൊണ്ടു പ്രഞ്ചുകാരുടെ നേരേയും നില്പാൻ കഴിഞ്ഞില്ല. കോയ്മെക്കു സമാധാനത്തിന്നായി അപേക്ഷിപ്പാൻ സംഗതി വന്നതിനാൽ പ്രാഞ്ചുകാരുടെ മനസ്സുപ്രകാരം തൊങ്കിൻ എന്ന ദ്വീപിൻ മേലധികാരം അവൎക്കു തന്നേ ഏല്പിച്ചു സമ്മതിക്കയും ചെയ്തു.

അഫ്രിക്കദേശത്തിലേ സുലുരാജ്യത്തിന്റെ തമ്പുരാൻ ഇംഗ്ലിഷ്കാരെക്കൊണ്ടു കഴി

ഞ്ഞ കൊല്ലത്തിൽ വീണ്ടും തന്റെ ദേശത്തിൻ രാജസ്ഥാനം പ്രാപിക്കുമ്പോൾ, ഇനി മേലാൽ നല്ല അനുസരണത്തോടു വാഴ്ചകഴിക്കാം, എന്ന വാഗ്ദത്തം ചെയ്തു എങ്കിലും

ഓരോരോ ധമ്മങ്ങളും പറഞ്ഞു വാഴും പോഴും
നാരിമാരോടു കേളിയാടീടും പോഴും പിന്നെ
തന്നുടെ ജീവൻ ഇപ്പോൾ പോം എന്ന തോന്നും പോഴും
എന്നിവ നാലിങ്കലും അസത്യം പറഞ്ഞാലും
എന്നുമേ ദോഷം ഇല്ലയെന്ന കേളിയും ഇല്ലേ;

എന്ന ഹിന്തുശാസ്ത്രം അനുവദിക്കുന്ന പ്രകാരം, രാജസ്ഥാനം കിട്ടേണ്ടതിന്ന ഇല്ലാത്തതു പറഞ്ഞാൽ എന്തു ദോഷം, എന്ന വിചാരിച്ച പറഞ്ഞതാകയാൽ "പിടിച്ചപ്പോൾ ഞെക്കി ഇടാഞ്ഞാൽ ഇളക്കുമ്പോൾ കടിക്കും." എന്നതിനെ ഇംഗ്ലിഷ്ക്കാൎക്ക അറിവാൻ സംഗതിവരുത്തി. സ്വന്ത ദേശത്തിൽ എത്തി വാഴ്ച ഏററപ്പോൾ മുമ്പേത്തതു പോലേ അതിക്രൂരതയോടും അന്യായത്തോടും രാജ്യകാൎയ്യങ്ങളെ നടത്തുവാൻ തുടങ്ങി. ഒടുക്കം തന്റെ ക്രിയകൾക്ക തക്ക ശിക്ഷയിൽ അകപ്പെട്ടു. അവന്റെ അധികാരത്തിൽ ഇഷ്ടപ്പെടാത്ത ചില ജാതികൾ മത്സരിച്ച, അവന്റെ നേരേ പുറപ്പെട്ടു യുദ്ധത്തിൽ അവനെ പിടിച്ച കൊന്നു കളഞ്ഞു.

അറുപതു കൊല്ലത്തോളം നിരന്തരമായി ബെഛാന്ന ജാതിയിൽ മിശ്യൻപ്രവൃത്തി നടത്തിയ മൊഫാത് സായ്പ് കഴിഞ്ഞ പ്രകാരം കേൾക്കുന്നു. അവന്റെ ഏകപുത്രി കീൎത്തിപ്പെട്ട ലീവിംഗസ്ഥൻ പണ്ഡിതരുടെ ഭാൎയ്യ ആയിരുന്നു.

മദഗാസ്കർ എന്ന ദ്വീപിന്റെ റാണി മരിച്ചു. ൨൦ വയസ്സുള്ള രാജഹിന്തരാഹെതി എന്നവൾ സിംഹാസനം ഏറി എന്നതു പ്രാഞ്ചുകാർ അറിഞ്ഞിട്ടു ഈ ദ്വീപിന്മേൽ അധികാരം പ്രാപിപ്പാൻ നല്ല തഞ്ചം കണ്ടു യുദ്ധക്കപ്പലുകൾ അങ്ങോട്ടയച്ചു. ഓരോ ബലാത്കാരം പ്രവൃത്തിക്കയും ചെയ്യു പ്രകാരം മുമ്പേ കേട്ടുവല്ലോ. എന്നാൽ പുതിയ രാജ്ഞി നല്ല ബുദ്ധിയും ധൈൎയ്യവുമുള്ള ഒരു ബാല്യക്കാരത്തി ആകയാൽ പ്രാഞ്ചുക്കാരുടെ നേരേ ഭയം കൂടാതേ നില്ക്കുന്നു. ഇനി ആരുടെ പക്ഷം ജയം ഉണ്ടാകും എന്നതു അറിവാൻ പാടില്ല.

മിസ്രദേശത്തിലും വടക്കുള്ള അഫ്രിക്കയിൽ എങ്ങും നടപ്പുദീനം ഭയങ്കരമായി വ്യാപിക്കുന്നതിനാൽ ആ ദീനം വിലാത്തിയിലേക്ക പ്രവേശിക്കാതിരിക്കേണ്ടതിന്ന വളരേ സൂക്ഷിക്കുന്നു. ഇതാല്യദേശത്തിൽ എങ്ങും കിഴക്കിൽനിന്ന വരുന്ന കപ്പലുകൾക്ക ആളുകളെ ഇറക്കുന്നതിന്ന ൪൦ ദിവസം താമസം കല്പിച്ചിരിക്കുന്നു.

അങ്ങിനെ ലോകത്തിലേ സംഭവങ്ങൾ എല്ലാം നമ്മോടു പലപ്രകാരത്തിൽ മനുഷ്യരുടെ നിൎഭാഗ്യതയെയും തൃപ്തികേടിനെയും വൎണ്ണിക്കുന്ന സമയം നാം മനസ്സലിഞ്ഞു ഈ സങ്കടമുള്ള സ്ഥിതിയെ നന്നാക്കേണ്ടതിന്ന ആഗ്രഹമുള്ളവരായിരുന്നാൽ നാം ദൈവകല്പനകളെ ചെവിക്കൊള്ളേണം എന്നത്രേ. അപ്പോൾ ദൈവം താൻ നമ്മെ അഭ്യസിപ്പിക്കയും നമ്മെ പ്രയോജനമുള്ളവരാക്കി തീൎക്കയും ചെയ്യും. "നമ്മുടെ സമാധാനം നദിപോലെയും നമ്മുടെ നീതി സമുദ്രത്തിലേ തിരകൾ പോലെയും ഇരിക്കും".

ആരെങ്കിലും മനുഷ്യരുടെ മുമ്പിൽ എന്നെ ഏറ്റു പറഞ്ഞാൽ, അവനെ ഞാനും സ്വൎഗ്ഗസ്ഥനായ എന്റെ പിതാവിൻ മുമ്പിൽ ഏറ്റു പറയും. മത്ത. ൧൦, ൩൨.

# THE DEATH OF A SECRET CHRISTIAN (Avision).

# ഒരു രഹസ്യക്രിസ്ത്യാനന്റെ മരണം (ദൎശനം).

## കുറത്തിപ്പാട്ടു.

1 കാലഗണങ്ങൾ പറന്നു നാലു ദിക്കിൽനിന്നു
ജ്വാലകത്തിക്കുന്ന കണ്ണും ശൂലവും മിന്നുന്ന
മാലപോൽ സൎപ്പം അണിഞ്ഞു കാലകാലവീരൻ
വാലുചുഴറ്റിപ്പതിച്ചു കോലവിരൂപാക്ഷൻ.

2 പൊട്ടു പൂണൂലും ധരിച്ചിട്ടൊട്ടു കുഡുംബിക്കാർ
ചട്ടകളഞ്ഞിട്ടു പൂട്ടിക്കെട്ടി വരുന്നേരം
തൊട്ടതിലോർ നഷ്ടനെ അറുമട്ടുകെട്ട ക്രൂരൻ
ഇട്ടു നിലത്തിൽ അവനെ ഒട്ടുമാത്രനേരം.

3 ക്ഷീണവും ആയാസവും അങ്ങേറിവന്നു പാരം
കാണികൾ ഗ്രഹിച്ചു പാപി വീണതിന്റെ സാരം
വേണമോ ദാഹത്തിനെന്നവർ വിളിച്ചുന്നേരം
ബാണതുല്യം ചാടിപേയും കാട്ടിമഹാഘോരം.

4 ദേഹശക്തിമാറി മുഷ്ക്കും ഭാവജാലം പോയി
ശോകവും നാനാവിധത്തിൽ പാപിക്കുളവായി
ലോകധനം ബന്ധുജനം സാരമില്ലെന്നായി
പോകുവാൻ കാലം അണഞ്ഞിതെന്നു ബോധമായി.

5 ശീതമേറി കങ്കുഴിഞ്ഞു ബോധമേറമാറി
ഏതുലോകത്തെന്നറിയാഞ്ഞു ഉള്ളിൽ ഭീതിയേറി
ഭൂതജാലങ്ങൾ അണഞ്ഞുന്നേരം വാശിക്കൂറി.
ഖേദവും പാപിക്കു നിറവായി ഭാവം മാറി.

6 നാഗവാഹനൻ പിശാചൻ വേഗമോടിക്കൂടി
ലോകവഞ്ചകൻ വേതാളം ഓടിവന്നു ചാടി
ശോകമില്ലാതാക്കുമെന്നു ചൊല്ലി നൃത്തമാടി
ഭോഗമെട്ടും കാട്ടി അട്ടഹാസിച്ചു കൊണ്ടാടി.

7 വാദമുണ്ടായങ്ങുപേയും പാപിയും ഒട്ടേറെ
ഖേദമെന്തെടോ! നിനക്കു എന്നരികിൽ പോരേ
മോദമോടു ലീലക്രീഡചെയ്യു പാൎക്ക നേരേ
ഏതു നാഥനും നിനക്കുണ്ടാകയില്ലന്നേരം.

8 ഇത്തരം പേയിൻ വചനം കേട്ടു ഭയം പൂണ്ടു
സത്വരം പരിഭ്രമിച്ചു പാപിചൊല്ലുന്നുണ്ടു
കൎത്തനേശുവിൻ അടിയാൻ ഞാനറിക പേയേ!
സത്യമിതു നിൻ നരകത്തഞ്ചു മഹാതീയെ.

9 പൂജ നിനക്കേറെ നാൾ ഞാൻ ചെയ്തുണ്ടോ പോക
നീച ബിംബാരാധനകൾ ഞാൻ വെടിഞ്ഞതോൎക്ക
വ്യാജമന്ത്രം ഞാൻ ജപിച്ചതല്പം എന്നുൾക്കൊൾക
പൂശും തിരു നീരണിഞ്ഞില്ലേറെ നാൾ ഞാൻ നോക്ക.

൩൩ ആരെങ്കിലും മനുഷ്യരുടെ മുമ്പിൽ എന്നെ തള്ളിപ്പറഞ്ഞാൽ, അവനെ ഞാനും സ്വർഗ്ഗസ്ഥനായ എന്റെ പിതാവിന്റെ മുമ്പിൽ തള്ളിപ്പറയും. മത്ത. ൧൦, ൩൩.

---

10 കൺ ചുവപ്പിച്ചങ്ങു സാത്താൻ ഗജ്ജനം ചെയ്യേവം
"വഞ്ചന ചെയ്യാൻ നിനക്കു ശേഷിയുണ്ടോ മൂഢാ?
കൊഞ്ചിയുല്ലസിച്ചു പൂജ കണ്ടതറിയുന്നേൻ
തുഞ്ചലെന്ന്യേ ദാസിയാട്ടം കണ്ടതും നീയല്ലോ

11 കേശവും വളൎത്തു പൂണൂൽ ഇട്ടിരുന്ന നിന്നെ
യേശുവിനാൽ എന്നു ചൊന്നാൽ ഏല്ക്കുമോ താൻ നിന്നെ
നാശമുള്ളോനേ! നിൻ നെഞ്ചിൽ കാണുന്നേ എൻ നാമം
വാശി പിടിച്ചാൽ ഗുണമില്ലെന്നറിഞ്ഞുകൊൾക.

12 താതൻ നിനക്കാരു? ഞാനോ, ദൈവമോ നീ ചൊല്ക
ഏതു ദൈവമന്ദിരത്തിൽ സ്നാതൻ നീയെ ചൊല്ക
ജാതിയിൽ നീ ആരു ക്രിസ്തുദാസനോ നീ ഓൎക്ക
ഏതു പള്ളിയിൽ നീ ശാബതാചരിച്ചു ചൊല്ക.

13 പാപഹനിൽ സത്യകൎമ്മം അനുഷ്ഠിച്ചോടാ
പേപറയാതെ തെളിഞ്ഞു ചൊല്ക പരമാൎത്ഥം
ജീവകാലമൊക്കെ എന്റെ പേർ വരിച്ച നിന്നെ
പോവതിന്നു ഞാൻ വിടുമോ കണ്ടുകൊൾക നീയും"

14 ഇങ്ങിനെ പേ ചൊന്ന വാക്കാൽ ഏറി പാപഭാരം
മങ്ങി പാപിയിൻ മനസ്സും തിങ്ങി ദുഃഖഭാരം.
എങ്ങു പോകാൻ എന്നു തന്നിൽ ചിന്ത ചെയ്തു പാരം
അങ്ങു വന്നോർ ദൈവദൂതൻ അത്ഭുതശൃംഗാരൻ.

15 മംഗലനിൎമ്മായരൂപി ചൊല്ലി പാപിയോടെ
"ഇങ്ങിരിക്കും നാൾ കിരസ്തുൻസംഗതി അൻപോടെ
പൊങ്ങിയ സാമോദം ലോകമെങ്ങും അറിഞ്ഞീടാൻ
തുംഗമേററു സ്നാതനായാൽ മാത്രമുണ്ടു സാക്ഷ്യം.

16 ലോകരെ നാണിച്ചു ഭയത്തോടൊളിച്ചു പാൎത്താൽ
ശോകമല്ലാതില്ലൊടുവിൽ എന്നറിഞ്ഞുകൊൾക
പോകണം നീ "ഭീരുക്കളിൻ ഭാഗത്തിൽ എന്നോൎക്ക
വേകുവാൻ നീ നേടിലോകമോദമയ്യോ പാപീ."

17 ഇത്തരങ്ങൾ കേട്ടു പാപി ചത്തുയിരും പോയി
പത്തു നൂറു പേഗണങ്ങൾ എത്തി മോദമായി
കത്തിയിടിച്ചു ചതെച്ചും കൊണ്ടു പോകുന്നാത്മം
കത്തി എരിയുന്ന കടലിൽ എറിഞ്ഞു നീക്കാൻ.

18 "ഞാനിതറിഞ്ഞില്ല കഷ്ടം! നന്മ ചെയ്യേൻ ഏറെ
മാനുവേൽ ദേവാത്മജനെന്നുണ്ടിനിക്കുബോധം
ഏനസ്സു നീക്കുന്നതവൻ എന്നുറെച്ചു ഞാനും
തീനരകമോ ഇനിക്കു" എന്നലറി ആത്മം.

19 "ഞങ്ങളും ഇതിൽ അധികം വിശ്വസിക്കുന്നുണ്ടു
സംഗതിയെല്ലാം അറിയാം പിന്നെ എന്തു പാപീ
പൊങ്ങിയ രോഗത്തിനു മരുന്നറിഞ്ഞെന്നാലും
ഭംഗിയായി സേവിച്ചീടാഞ്ഞാൽ സൌഖ്യമാമോ" മൂഢാ.

20 ഇങ്ങിനെ പേയിൻ പടയും പാപിയിനാത്മാവും
തങ്ങളിൽ വാദിച്ചു നരകക്കരയിൽ ചേൎന്നു
പൊങ്ങി മറിയുന്ന തീയിൽ അങ്ങെറിഞ്ഞാത്മാവേ
ഭംഗിയെന്ന്യേ സന്തതവും വേകുവാൻ പേക്കൂട്ടം.

യഹോവായിക്കു പാടി, അവൻെറ നാമത്തെ വാഴ്ത്തുവിൻ; നാൾതോറും ൧൯൯൯ അവൻെറ രക്ഷയെ അറിയിപ്പിൻ. സങ്കീ. ൯൬, ൨.

# ബാസൽമിശ്യനിലേ ഒന്നാം മേലദ്ധ്യക്ഷൻ.

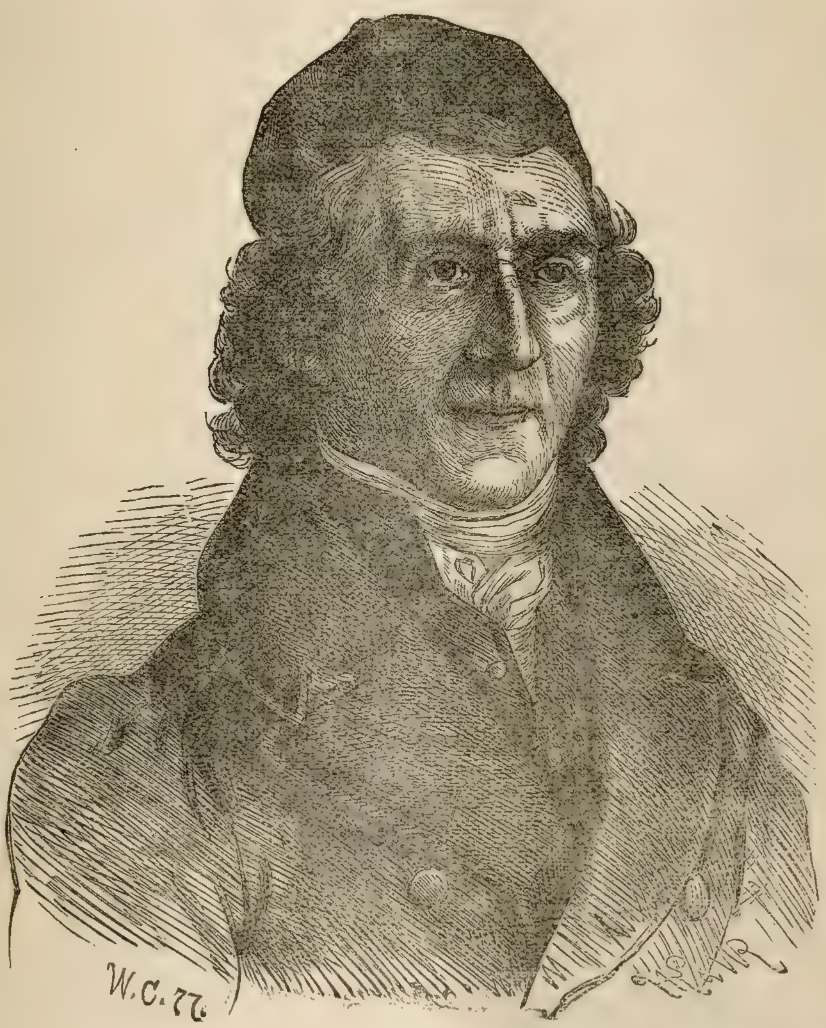


ഇക്കഴിഞ്ഞ സംവത്സരം ബാസൽമിശ്യന്നു സന്തോഷിച്ചു കൎത്താവിൻെറ നാമത്തിന്നു സ്തുതിയും സ്തോത്രവും ചൊല്ലുവാൻ തക്ക ഒരു കൃപാകൊല്ലമായിരുന്നു. ൧൮൧൫-ൽ ബാസൽമിശ്യൻ സംഘത്തിൻെറ ആദ്യപ്രേരിതരായ ഉപദേഷ്ടാക്കൾ (ഈ കടല്പുറത്തിലേ) മംഗലപുരത്തു കപ്പൽ കിഴിഞ്ഞു പ്രവൃത്തി ആരംഭിച്ചതുകൊണ്ടു ൧൮൮൪ നമ്മുടെ മിശ്യൻവേലയുടെ ൫൦-ാം സംവത്സരം ആയിരുന്നുവല്ലോ. നമ്മുടെ പ്രിയ വായനക്കാരിൽ പലൎക്കും ബാസൽ മിശ്യൻ നടത്തി വരുന്ന ശാലകളിലും മറ്റോരോ പ്രകാരത്തിലും പല ഉപകാരങ്ങളും അനുഗ്രഹങ്ങളും ലഭിച്ചതു കൊണ്ടു ഈ മിശ്യൻസംഘത്തിൻെറ ഉല്പത്തിയെ പറ്റി ചില വിശേഷങ്ങളെ കേട്ടറിഞ്ഞാൽ സന്തോഷമുണ്ടാകുമെന്നു തോന്നുന്നു. ബാസൽമിശ്യൻ സംഘത്തെ സ്ഥാപിച്ച ഭക്തിമാന്മാരിൽ ഒരു ശ്രേഷ്ഠൻെറ ചിത്രം

മീതേ കാണുന്നല്ലോ അദ്ദേഹത്തിന്റെ പേർ ക്രിസ്ത്യാൻ ഗൊത്ലീബ് ബ്ലുംഹൎത്ത് എന്നു തന്നേ.

നമ്മുടെ മിശ്യൻറെ ഒന്നാമത്തേ മേലദ്ധ്യക്ഷനായ ക്രിസ്ത്യാൻ ഗൊത്ലീബ് ബ്ലുംഹൎത്ത് എന്നവർ വിൎത്തമ്പെൎഗ്ഗ് എന്ന ഗൎമ്മാന്യദേശത്തിലേ മൂലസ്ഥാനമായ സ്തുത്ഗാൎദ് എന്ന നഗരത്തിൽ ൧൭൭൯ ഇൽ ജനിച്ചു. അഛ്ശൻ ചെരിപ്പുണ്ടാക്കുന്ന പണി എടുത്തുംകൊണ്ടു കുഡുംബത്തിന്റെ അഹോവൃത്തിക്കു വക സമ്പാദിച്ചു പോന്നു. അങ്ങിനേ അംബയഛ്ശന്മാർ കുലശ്രേഷ്ഠരും ധനികരും അല്ലെങ്കിലും നിൎവ്യാജവും സ്ഥിരവുമുള്ള ഭക്തി എന്ന വിലയേറിയ സമ്പത്തുള്ളവരാകയാൽ ഭാഗ്യവാന്മാർ തന്നേ. അക്കാലത്തു ക്രിസ്തീയരാജ്യങ്ങളിലെങ്ങും വിശ്വാസം മങ്ങി അവിശ്വാസം, സംശയം, സ്വബുദ്ധിപ്രശംസ എന്നിവ പ്രബലപ്പെട്ടിട്ടും അവിടവിടേ ഓരോ കൂട്ടം വിശ്വാസികൾ ഗൂഢമായി തമ്മിൽ തമ്മിൽ യോജിച്ചും കൎത്താവായ യേശുവിലേ വിശ്വാസസ്നേഹങ്ങളിൽ പരസ്പരം ശക്തീകരിച്ചുംകൊണ്ടു അവിശ്വാസത്തോടു എതിർ നിന്നു പൊരുതുകയും കൎത്താവിന്റെ വരവിന്നായി ജാഗരിച്ചു കാത്തുകൊണ്ടു മിശ്യൻ എന്ന കൎത്തൃവേലയെ ശ്രദ്ധയോടേ നടത്തിപ്പോരുകയും ചെയ്തു. വിൎത്തമ്പെൎഗ്ഗ് എന്ന ദേശത്തിലും അതിന്റെ കേന്ദ്രസ്ഥാനമാകുന്ന സ്തുത്ഗാൎദ് നഗരത്തിൽ പ്രത്യേകിച്ചും ഏകാന്തഭക്തിയുള്ള പല വിശ്വാസികൾ ഉററ കൂട്ടായ്മയിൽ ചേൎന്നു ആത്മികകാൎയ്യങ്ങളിൽ അന്യോന്യം തുണനില്ക്കയും ചെയ്തു. നമ്മുടെ ക്രിസ്ത്യാൻ ഗൊത്ലീബിന്റെ അംബയപ്പന്മാർ ആ കൂട്ടത്തിലുള്ളവർ അത്രേ. സ്തുത്ഗാൎദിൽ ദേവോപദിഷ്ടരായ ചില ആത്മശക്തരായ ബോധകന്മാർ ദൈവവചനത്തെ ഘോഷിച്ചു വന്നതുകൊണ്ടു അവർ ശുഷ്കാന്തിയോടേ പ്രസംഗം കേൾപ്പാൻ പോയതല്ലാതേ അംബ കൂടക്കൂടേ കേട്ട പ്രസംഗങ്ങളെ ഓൎമ്മപ്രകാരം വീട്ടിൽവെച്ചു എഴുതി ആ ബോധകരും മറേറാരോ ഭക്തിയുള്ള മഹാത്മാക്കളും സാധുവായ ചെരിപ്പുകുത്തിയുടെ വീട്ടിൽ വന്നു ദൈവവചനത്തെയും ഉള്ളിലേ പ്രത്യാശാപരീക്ഷകളെയും സംബന്ധിച്ചു ആ വീട്ടുകാരോടു സംസാരിച്ചു പോരുകയും ചെയ്തു. നമ്മുടെ പിന്നേത്ത മിശ്യൻ അദ്ധ്യക്ഷൻ ഇങ്ങിനേയുള്ള ഒരു കുഡുംബത്തിൽ വളൎന്നുവന്നതു അവന്നു ഒരു വലിയ അനുഗ്രഹമായിതീൎന്നു. "ശീലിച്ചതേ പാലിക്കു" എന്നുണ്ടല്ലോ. വിശേഷാൽ അംബ ഭക്തിയും സാമൎത്ഥ്യവും ഏറിയ സ്ത്രീ തന്നേ. ക്രിസ്തീയസഭയിലേ അനേകവിശിഷ്ടജനങ്ങൾ കണക്കേ ബ്ലുംഹൎത്തും അകം പുറമേ അംബയുടെ സ്വ

രൂപമുള്ളവനായ ഹേതുവാൽ അവളോടു പ്രത്യേകമായി താല്പൎയ്യം പൂണ്ടു ഹൃദയം തുറന്നു കൊടുക്കയും അവളുടെ വാത്സല്യം അനുഭവിച്ചതല്ലാതേ ആദ്യപഠിപ്പു അവളിൽനിന്നു തന്നേ ലഭിക്കയും ചെയ്തു. മനുഷ്യൻ തന്റെ ബാല്യത്തിൽ നുകത്തെ ചുമക്കുന്നതു നല്ലതു എന്ന വേദോക്തിക്കനുസാരമായി ബ്ലുംഹൎത്ത് ചെറുപ്പം മുതൽ തന്നേ വേണ്ടുവോളം കഷ്ടം അനുഭവിച്ചു വന്നു. ൬-ാം വയസ്സിൽ ശാലയിലേ പഠിപ്പു തുടങ്ങിയാറേ അവൻ ഭയശീലനാകകൊണ്ടു പഠിപ്പു വശത്താക്കി മററവരോടൊന്നിച്ചു മുമ്പോട്ടു പോകുവാൻ വളരേ വൈഷമ്യമായിത്തോന്നി. ഒരു ദിവസം നന്ന തോററു പോയിട്ടു അവൻ ശങ്ക ഭീരുത്വം എന്നിത്യാദികളെ അടക്കിയ ശേഷമത്രേ പഠിപ്പു നല്ലവണ്ണം ഫലിച്ചു തുടങ്ങിയുള്ളൂ. ആ സമയം തന്നേ അംബെക്കു കഠിനദീനം പിടിച്ചു മൂന്നു കൊല്ലത്തോളം ഖിന്നഭാവം പററിയതുനിമിത്തം മകനു ലഘുമനസ്സു കളിഭാവം പ്രപഞ്ചമോഹം എന്നിവററെ എല്ലാം ഉപേക്ഷിച്ചു മനസ്സു ദിവ്യകാൎയ്യങ്ങളിലേക്കു തന്നേ തിരിച്ചുവെക്കുവാൻ സംഗതി വന്നു. അനന്തരം വൈദ്യന്മാരുടെ വൈഭവം കൊണ്ടല്ല ദൈവകൃപയാലത്രേ അംബ പൂൎണ്ണസൌഖ്യംപ്രാപിച്ചതിനെ കണ്ടറിഞ്ഞിട്ടു അവൻ സന്തോഷവും ആശ്വാസവും നിറഞ്ഞവനായി ജീവനുള്ള ദൈവത്തിന്റെ സൎവ്വശക്തി കരുണകളിൽ ആശ്രയം വെച്ചു വിശ്വാസത്തിൽ വേരൂന്നിനില്ക്കയും ചെയ്തു. അന്നു അവന്റെ ബുദ്ധിപ്രാപ്തികളും പരിചോടേ വിടൎന്നു തുടങ്ങി. അവൻ പിതൃനഗരത്തിലേ ഉയൎന്ന പാഠശാലകളിൽ ചേൎന്നു വിദ്യാഭ്യാസം ആരംഭിപ്പാൻ ഇച്ഛിച്ചുകൊണ്ടിരിക്കുമ്പോൾ അച്ഛൻ ഒരു ദിവസം ഒരൂരിലേ ചന്തെക്കു പോയി മടങ്ങി എത്തിയാറേ ഓരോ കുട്ടിക്കു ഓരോ സമ്മാനങ്ങളെയും മൂത്ത മകനായ നമ്മുടെ ഗൊത്ലീബിന്നു ഇതാ ചെരിപ്പുകൈത്തൊഴില്ക്കാർ പണിയെടുക്കുമ്പോൾ അരെക്കു കെട്ടാറുള്ള ഒരു ശീലയെയും കൊണ്ടു വന്നു. അതു അവന്നു അയ്യോ എന്തു ഒരു സങ്കടം. ആശ വിട്ടു അന്ധകാരം അവന്റെ ഹൃദയത്തിൽ നിറഞ്ഞു. എന്നിട്ടും അച്ഛന്റെ ഇഷ്ടത്തിന്നു കീഴടങ്ങണം എന്നു വെച്ചു സങ്കടം അമൎത്തു അച്ഛന്റെ അരികേ ഇരുന്നുകൊണ്ടു ആ കൈത്തൊഴിൽ ശീലിപ്പാന്തുടങ്ങി. എന്നാൽ വളരേ കൈപ്പിഴയും ആ പ്രവൃത്തിക്കു സാമൎത്ഥ്യമില്ലെന്നതും കാണായ്വന്നതിനാൽ അച്ഛന്നു അല്പം നീരസം തോന്നി അംബയോ കൎത്താവു വേറൊരു വഴിയെ കാട്ടും എന്നു മകനെ ആശ്വസിപ്പിച്ചു. വിദ്യാതാല്പൎയ്യം അധികം ഉണ്ടാക ഹേതുവാൽ അവൻ

ലത്തീൻഭാഷ മുതലായവറെറ സ്വകാൎയ്യം പഠിപ്പാൻ തുടങ്ങിയാറേ ഒരു ദായാദിക്കാരൻ സ്തുത്ഗാദിൽ വന്നു പാൎത്തു ചിലപ്പോൾ പാഠം കൊടുത്തു സന്തോഷം ഏററം വൎദ്ധിപ്പിക്കയും ചെയ്തു. ഇങ്ങിനേയുള്ള അവസ്ഥ ഒക്കയും കണ്ടു കൈത്തൊഴിൽ മതിയാക്കി വിദ്യാഭ്യാസം ചെയ്വാൻ അഛ്ശൻ സമ്മതിച്ചു. അന്നുണ്ടായ സ്ഥിരീകരണം നമ്മുടെ ബാലന്നു ദൈവകാരുണ്യത്താലേ ഉള്ളിലേ ജീവന്നായും ഭക്തിവൎദ്ധനെക്കായും സഫലമായി തീൎന്നു. അതിൻെറ ശേഷം വഴിപോലേ വിദ്യാഭ്യാസം കഴിപ്പാൻ വകയില്ലായ്കകൊണ്ടു ഭക്തിയുള്ളൊരു ഗുരുനാഥൻ, അവനെ തൻെറ എഴുത്തുപള്ളിയിൽ ചേൎത്തു ഗുരുപ്രവൃത്തികൾ ഒരുക്കി അഭ്യസിപ്പിച്ചെങ്കിലും അവന്നു ഈ അല്പ പഠിപ്പു പോരാ എന്നു തോന്നി വിദ്യാദാഹം ഊക്കോടേ ഉണൎന്നു വന്ന സമയം സമീപമുള്ളൊരു പട്ടണത്തിൽ പാൎത്തുവരുന്ന ഇളയപ്പൻ ഒരു ഉയൎന്ന ശാലയെ പരിപാലിക്കുന്നല്ലോ എന്നു ഓൎമ്മ വന്നു. അതിൽ തന്നെയും ചേൎക്കേണമെന്നു കത്തയച്ചു അപേക്ഷിച്ചതിന്നു അഛ്ശൻ ഒരു ചെറിയ മാസപ്പടികൊണ്ടു സഹായിച്ചാൽ സന്തോഷത്തോടേ കൈക്കൊള്ളും എന്നു മറുവടി വന്നാറേ അംബ മകനോടു കൂടേ നന്നേ സന്തോഷിച്ചു. എന്നാൽ അഛ്ശൻ വൎത്തമാനം കേട്ടു കുറേ നേരം ഒന്നും മിണ്ടാതേ നിന്നിട്ടു ഇതസാദ്ധ്യമത്രേ എന്നു തീൎച്ച് പറഞ്ഞു. ഇതു ഹേതുവായി ഗൊട്ട്ലീബിന്നു അത്യന്തവ്യസനമുണ്ടായിട്ടും അവൻ പിറേറ ദിവസം അഛ്ശൻെറ അടുക്കൽ ചെന്നിരുന്നു ഇപ്പോൾ ദൈവസഹായത്താൽ ചെരിപ്പുണ്ടാക്കുന്ന പണി ശീലിച്ചു അഛ്ശന്നു തുണ നില്പാൻ മുതിൎച്ച് വന്നു എന്നു പറഞ്ഞു. അപ്പോൾ അഛ്ശൻ പിന്നേയും ഉററുനോക്കി മനം വെന്തു കണ്ണുനീർ ഓലോലവാൎത്തുകൊണ്ടു അംബേ! ഗൊട്ട്ലീബിൻെറ വസ്ത്രാദി സാമാനങ്ങളെ തയ്യാറാക്കിക്കൊൾക. അവൻ പഠിപ്പാനായി ഇളയപ്പൻെറ അടുക്കേ പോകും എന്നു ഭാൎയ്യയോടു പറകയും ചില നാൾ കഴിഞ്ഞിട്ടു മകനെ സന്തോഷത്തോടേ ഇളയപ്പൻെറ ശാലയിൽ കൊണ്ടാക്കുകയും ചെയ്തു. അവിടേ പതിനാലു വയസ്സുള്ള ബാലൻ ചേൎന്നു ലത്തീൻ, യവന, പരന്ത്രീസ്സ എന്നീ ഭാഷകളെയും ചരിത്രം ഗണിതം ഭൂവൎണ്ണന തുടങ്ങിയ വിദ്യകളെയും ഉത്സാഹിച്ചഭ്യസിച്ചു. ഇളയപ്പൻെറ വാത്സല്യം സഹപാഠികളോടുള്ള സമ്പൎക്കം സ്വബുദ്ധത എന്ന സംഗതിവശാൽ അവൻെറ ബുദ്ധിപ്രാപ്തികൾ നന്നായി വികസിച്ചു അവൻ മറെറല്ലാവരെയും തോല്പിച്ചു. തമ്പുരാട്ടി ഒരു ദിവസം വന്നു പരീക്ഷ കഴിച്ചപ്പോൾ അവൻ എല്ലാവരിലും ശ്രേ

ഷ്ഠനായി വിളങ്ങി റിരുതായി ഒരു മാനനാണ്യം പ്രാപിക്കയും ചെയ്തു. ഇവ്വണ്ണം കേവലം സുഖിച്ചിരിക്കും നേരം അംബയോടുള്ള വിയോഗാത്തി എന്ന സങ്കടമേ ഉണ്ടായുള്ളു. എന്നാൽ ൧൮൩൨ ഇലേ തിരുജനനം എന്ന ഉത്സവസമയത്തു അംബെക്കു ദീനം കലശലായി എന്ന കത്തു വന്നാറേ അവൻ താമസിയാതേ യാത്രയായി വിരഞ്ഞെത്തി പിറേറ നാൾ അംബ അവൻെറ കൈകളിൽ കിടന്നുംകൊണ്ടു നിദ്രകൊണ്ടു. അവനോ അംബെക്കു യോഗ്യനായി അവൾ സ്നേഹിപ്പാൻ ഉപദേശിച്ച കത്താവായ യേശുവിങ്കൽ തന്നെത്താൻ മുററും സമപ്പിക്കും എന്നു നേച്ച് കഴിക്കയും ചെയ്തു. കുറേ കാലം കഴിഞ്ഞിട്ടു അവൻ സ്വനഗരത്തിലേക്കു മടങ്ങി പോകേണ്ടി വന്നു. വിശ്വാസിയായൊരു പണ്ഡിതരുടെ സഹായം കൊണ്ടു അവിടത്തേ ഒരു വിദ്യാശാലയിൽ ചേരുവാനും സ്വകാൎയ്യമായി കുട്ടികളെ പഠിപ്പിക്കുന്നതിനാൽ ചെലവിന്നു വക സമ്പാദിപ്പാനും സാധിച്ചു. എന്നാൽ പുലച്ച് തുടങ്ങി വൈകുന്നേരം ൮ മണി വരേ പാഠകം കേൾ്ക്ക. പാഠം കൊടുക്ക. ഇങ്ങിനേ ഏകദേശം ഇടവിടാതേ ഉത്സാഹിച്ചു പണി എടുത്തതിൻെറ ശേഷം മാത്രമേ അദ്ധരാത്രിയോളം സ്വകാൎയ്യമായി പുസ്തകങ്ങളെ ആരാഞ്ഞു പഠിപ്പാൻ സംഗതി വന്നുള്ളു.

ബ്ലുംഹത്തിന്നു അവൻ സുവിശേഷത്തിൻെറ ഘോഷണത്തിന്നായി വിളിക്കപ്പെട്ടവൻ എന്നു പൂൎണ്ണനിശ്ചയമുണ്ടായിരുന്നു. അതിന്നു തക്കവണ്ണം ഒരുക്കി വിദ്യാഭ്യാസം ചെയ്യേണ്ടതിന്നു ചെലവിടുവാൻ പ്രാപ്തിയില്ലായ്കയാൽ തുബിങ്ങ് എന്ന നഗരത്തിൽ ദൈവവിദ്യാൎത്ഥികൾക്കു വേണ്ടി സ്ഥാപിച്ചിട്ടുള്ള മഠത്തിൽ സൌജന്യമായി ചേൎക്കപ്പെടുവാനായി ഒരു പരീക്ഷ കൊടുക്കേണ്ടതാവശ്യം എന്നാൽ ബ്ലുംഹത്ത് ഒരുക്കം എല്ലാം തികെച്ചിട്ടു പരീക്ഷ അടുത്തിരുന്നപ്പോൾ തമ്പുരാൻ ൧൮൨൪-ാമതിൽ പെട്ടന്നു "ഇനി മേലാൽ കൈത്തൊഴില്ക്കാർ മുതലായ സാധുക്കളുടെ പുത്രന്മാൎക്കു ദൈവവിദ്യാഭ്യാസം ചെയ്യാൻ അനുവാദമില്ല" എന്നൊരു ആജ്ഞയെ പരസ്യമാക്കിയതിനാൽ പലൎക്കും മഹാ വിഷാദമായി. എങ്കിലും ബ്ലുംഹത്ത് തമ്പുരാൻെറ ദയയെക്കാളും ദൈവത്തിൻ സൎവ്വശക്തിയിൽ ആശ്രയിച്ചു പാൎത്തു. ആ കൊല്ലത്തിൽ തന്നേ ജനാലോചനസഭ ഒരുമനപ്പെട്ടു അതിന്നു വിരോധം പറഞ്ഞതിനാൽ തമ്പുരാൻെറ ആജ്ഞ ദുൎബ്ബലമായി ചമഞ്ഞു. അങ്ങിനേ ബ്ലുംഹത്ത് ൧൮൨൪ ഇൽ തുബിങ്ങിയിലേ വിദ്യാശാലയിൽ ചേൎന്നു ശ്രദ്ധയോടേ വിദ്യാഭ്യാസം ആരംഭിച്ചു. അവിടേ ഒരു നല്ല വിദ്യാധനം മാത്ര

മല്ല ബുദ്ധിപാകതയും മനസ്സുറപ്പും പ്രാപിക്കയും ചെയ്തു. ആ സമയം മിശ്യൻപ്രവൃത്തിയെ കുറിച്ച ഓരോ വൎത്തമാനപത്രങ്ങളെ വായിച്ച ആ കാൎയ്യത്തിലും പരിചയവും സന്തോഷവും വൎദ്ധിച്ചു വന്നു. ൧൮൦൭ഇലേ വേനല്ക്കാലത്തു തന്നേ വിട്ടുതലായി ബ്ലുംഹൎത്ത് വീട്ടിൽ എത്തിയപ്പോൾ അഛ്ശൻ ദീനം പിടിച്ച പ്രാണസങ്കടമായി കിടക്കുന്നതു കണ്ടു ദുഃഖിച്ചു പരിചയമുള്ളു ഒരു ബോധകന്റെ അപേക്ഷ പ്രകാരം തിരുവെള്ളിയാഴ്ച ഒരു ഗ്രാമത്തിൽ പ്രസംഗിക്കേണ്ടതിന്നു പോയി എല്ലാവൎക്കും അനുഗ്രഹമാം വണ്ണം ക്രൂശിക്കപ്പെട്ട രക്ഷിതാവിനെ ഘോഷിച്ചതിന്റെ ശേഷം തന്റെ സഹോദരി സഹോദരരോടൊന്നിച്ചു അഛ്ശന്റെ അടുക്കേ തിരിച്ചെത്തിയാറേ അവൻ സത്ര തയ്യാറാക്കി എട്ടു ചങ്ങാതികളെ ക്ഷണിച്ചിട്ടുണ്ടായിരുന്നു. അനന്തരം കുട്ടികളെ പ്രായപ്രകാരം തന്റെ കട്ടിലരികിൽ നിറുത്തി, യേശുവങ്ങു മരിച്ച നാഴികയിൽ താനും ഇപ്പോൾ മരിക്കുമെന്നറിയിച്ചു ഒരു പാട്ടു പാടിച്ചു പ്രാൎത്ഥിച്ചു എല്ലാവരും മുട്ടുകുത്തുവാൻ കല്പിച്ചു ഓരോരുത്തൎക്കു പ്രത്യേകമായി ഓരോ അനുഗ്രഹം കൊടുക്കയും ചെയ്തു. നമ്മുടെ ഗൊത്ലീബിന്നു കിട്ടിയ ആശീൎവ്വാദമാവിതു:—“നീ ദൈവകരുണയുടെ ആയുധമായി പുറജാതികളിൽ കൎത്തൃവേലയെ നടത്തുവാൻ തക്കവണ്ണം കൎത്താവു നിന്നെ പരിശുദ്ധാത്മാവിന്റെ വരങ്ങളാൽ അനുഗ്രഹിക്കും.” എന്നിങ്ങനേ പ്രവചിച്ചാശീൎവ്വദിച്ചതിൽ പിന്നേ അഛ്ശൻ വിടവാങ്ങി നിദ്രപ്രാപിച്ചു. മകനോ ആ വാക്കു ഓൎത്തു കൎത്താവിനെ മുറുക പിടിക്കയും മിശ്യൻവേലയിൽ അതി ശ്രദ്ധയോടേ ദൃഷ്ടിവെച്ചു അതിനെ പററി ഒരു പണ്ഡിതരുടെ പാഠകങ്ങളെ കേൾക്കയും ചെയ്തു. ഇവ്വണ്ണം ബ്ലുംഹൎത്ത് ൧൮൧൬ഇൽ തന്റെ വിദ്യാഭ്യാസത്തെ വഴിപോലേ തികെച്ചു മേധാവികളുടെ മുമ്പാകേ പരീക്ഷ കൊടുത്തു നേടി മാനം ആൎജ്ജിക്കയും ചെയ്തു. ആ സമയം തന്നേ ബ്ലുംഹൎത്ത് അന്വേഷിക്കാതേ കണ്ടു ഒരു ഉദ്യോഗം പ്രാപിച്ചു പ്രവൃത്തി തുടങ്ങുവാൻ സംഗതിവന്നതെങ്ങിനേയെന്നാൽ ബാസൽപട്ടണത്തിൽ ഭക്തിശാലികളും വിദ്വാന്മാരുമായ ചിലർ ക്രിസ്തീയസത്യത്തെ കുട്ടില്ലാതേ വെടിപ്പായി കാത്തുകൊണ്ടു ക്രിസ്തീയഭക്തിയെ വൎദ്ധിപ്പിപ്പാൻ വേണ്ടി ൧൭൮൦ ഇൽ ഒരു സംഘമായി യോജിച്ചു ഗൎമ്മാന്യരാജ്യത്തിലെങ്ങും ചിതറിപ്പാൎക്കുന്ന ഓരോ വിശ്വാസികളെ അവയവങ്ങളായി അംഗീകരിച്ചു. പിന്നേ കാലക്രമേണ അവയവങ്ങൾ പെരുകി വന്നാറേ പരസ്പരം സംബന്ധം ഉറ

പ്പിക്കേണ്ടതിന്നും കൎത്തൃവേലയാകുന്ന മിശ്യൻകാൎയ്യത്തെ കൊണ്ടുള്ള വൎത്തമാനങ്ങളെ ബോധിപ്പിച്ചു വിശ്വാസികളെ അതിന്നായിട്ടു ഉത്സാഹിപ്പിക്കേണ്ടതിന്നും മാസാന്തരം ഉള്ളോരു പത്രം പരസ്യമാക്കേണ്ടതിന്നു തുടങ്ങി ഇങ്ങിനേ സംഘം ദൈവാനുഗ്രഹം അനുഭവിച്ചു പലൎക്കും അനുഗ്രഹമായി തീരുകയും ചെയ്തു. എന്നാൽ ബ്ലുംഹൎത്ത് തന്റെ വിദ്യാഭ്യാസം തികെക്കുന്നതിന്നു മുമ്പേ തന്നേ ആ സംഘത്തിന്റെ രായസസ്ഥാനം ഒഴിഞ്ഞിട്ടു സംഘമേധാവികൾ ഒരു സ്നേഹിതന്റെ ആലോചന കേട്ടു അവനെ വിളിച്ചു അവൻ താമസിയാതേ അവിടേ പ്രവേശിക്കയും തനിക്കു മുമ്പേ പരിചയമുള്ള സ്പിട്ലർ എന്ന സ്നേഹിതനോടു കൂടേ മേളിച്ചു മേവുകയും ചെയ്തു. അവിടേ പ്രവൃത്തിച്ചും പഠിച്ചും സ്നേഹം കാണിച്ചും അനുഭവിച്ചും കൊണ്ടു നാലു വൎഷം ബാസൽപട്ടണത്തിൽ പാൎത്തു വിൎത്തമ്പൎഗ്ഗിലേ രാജാവിന്റെ കല്പനയാൽ ഒരു ചെറിയ ഊരിൽ ബോധകസഹായകനായി. മേല്പെട്ട ബോധകൻ ക്രിസ്തീയജീവനില്ലാതേ ലൌകികഭാവമുള്ളവനായിരുന്നെങ്കിലും രണ്ടു സംവത്സരം കൊണ്ടു ആ സഭയിൽ സുവിശേഷം പ്രസംഗിച്ചും ദീനക്കാരെ കണ്ടു ആശ്വാസിപ്പിച്ചും കൊണ്ടു സാഫല്യമാമാറു കൎത്താവിനെ സേവിപ്പാൻ ഇട വന്നു. എന്നാറേ ബാസൽപട്ടണത്തിൽ വീണ്ടും ഒരു പ്രവൃത്തി കിട്ടുവാൻ ആഗ്രഹിച്ചിരിക്കേ വിൎത്തമ്പൎഗ്ഗിലേ സഭാമേധാവികളുടെ വിളിയെ അനുസരിച്ചു ചെറിയോരു സഭയിലേ ബോധകസ്ഥാനം കൈക്കൊണ്ടു കല്യാണം കഴിച്ചതിന്റെ ശേഷം ആ പ്രവൃത്തിയെ ആരംഭിക്കയും ചെയ്തു. എന്നാൽ താൻ നോക്കേണ്ടുന്ന സഭ ഏകാന്തദേശത്തിലിരിക്കകൊണ്ടു അവിടേക്കു ഒരു ക്രിസ്തീയസ്നേഹിതനാകട്ടേ യുദ്ധംനിമിത്തം ഇംഗ്ലന്തിൽനിന്നു വല്ല മിശ്യൻവൎത്തമാനമാകട്ടേ എത്തായ്കയാൽ ഒരു ക്രിസ്തീയച്ചങ്ങാതി പ്രയാസേന ചില മിശ്യൻപത്രങ്ങളെയും ഇന്ത്യാരാജ്യത്തിലേ വേലയെ കുറിച്ചുള്ള ഒരു പുസ്തകത്തെയും അയച്ചപ്പോൾ അവൻ നന്ന സന്തോഷിച്ചു ആ പുസ്തകത്തെ ഗൎമ്മാന്യഭാഷയിൽ ആക്കിയതിനാൽ ഗൎമ്മാന്യരാജ്യങ്ങളിൽ മിശ്യൻവേലയിലേ ശ്രദ്ധയെ നന്ന വൎദ്ധിപ്പിക്കയും ചെയ്തു. അതിന്നിടയിൽ തികൎത്ത യുദ്ധം നടന്നതുകൊണ്ടു അനേക പേർക്രിസ്ത്യാനികൾ മയക്കത്തിൽനിന്നുണൎന്നു മാനസാന്തരപ്പെട്ടുംകൊണ്ടു ജീവനുള്ള ദൈവത്തെ അന്വേഷിച്ചു പോന്നു. ബാസൽപട്ടണത്തിലും യുദ്ധത്തിൻ അലമ്പൽ ഏറയുണ്ടായിട്ടും അവിടത്തേ ഭക്തിമാന്മാർ യുദ്ധാരവാരം കൂട്ടാക്കാതേ ദൈവരാജ്യത്തിൻ

വരവിന്നായി കാത്തുകൊണ്ടിരുന്നു. സ്പിത്ലർ എന്നവൻ അന്നു ഒരു മിശ്യൻസംഘത്തെ സ്ഥാപിപ്പാൻ തക്ക നിൎണ്ണയങ്ങളെ ത്രുപിച്ചു മേല്പറഞ്ഞ ഭക്തിതല്പരസംഘത്തിൻ വിചാരണായോഗത്തിൻ മു മ്പാകെ വെച്ചു. ബാസൽപട്ടണത്തിൽ ചില യുവാക്കളെ അഭ്യ സിപ്പിച്ചു വളൎത്തുവാൻ തക്ക ഒരു മിശ്യൻശാലയെ സ്ഥാപിക്കേണ്ടു തിന്നു നഗരപ്രമാണികളുടെ സമ്മതം വരുത്തുകയും ചെയ്തു. ആ യതു ആശിപ്പാൻ പോലും സംഗതിയില്ലാതിരുന്ന ഒരു ജയമായിരു ന്നു. സ്പിത്ലർ തനിക്കുണ്ടായ കാൎയ്യസിദ്ധിയെ ബ്ലുംഹൎത്തിനോടു അ റിയിച്ചാറേ ഇവൻ നന്നു സന്തോഷിച്ചിട്ടും സാവധാനതയും സു ബോധവും പൂണ്ടിട്ടു വേണം ഈ വക ആരംഭിപ്പാൻ എന്നു പ്ര ബോധിപ്പിച്ചു. അതിനിടേ ബാസലിൽ സ്പിത്ലരിന്റെ ഇഷ്ടത്തി ന്നെതിരായി ചില ഭക്തിമാന്മാർ മിശ്യൻവിചാരണായോഗമായി യോജിച്ചു ഒരു ബോധകനെ അഗ്രേസരനായും സ്പിത്ലർ എന്നവ നെ രായസനായും നിശ്ചയിച്ചു. ഇതു തന്നേ നമ്മുടെ മിശ്യൻ സംഘത്തിന്റെ ജനനദിവസമാകുന്നു. ൧൮൧൫ലേ സപ്തെമ്പർ ൨൫-ാം നു ഈ ഏഴു മേധാവികൾ ഒന്നാം പ്രാവശ്യം യോഗമായി കൂടി നിൎണ്ണയങ്ങളെ സ്ഥാപിച്ചു "സുവിശേഷപ്രേരിതസംഘം" എന്ന പേർ അംഗീകരിക്കയും ചെയ്തു. ചില വൈഷമ്യങ്ങൾ നീ ങ്ങിപ്പോയതിന്റെ ശേഷം അവർ ബ്ലുംഹൎത്തിനെ സ്ഥാപിപ്പാൻ പോകുന്ന ശാലയുടെ ഒന്നാം ഗുരുവും മേലദ്ധ്യക്ഷനും ആയി തീരാൻ കൎത്താവിൻ നാമത്തിൽ വിളിച്ചു. ബ്ലുംഹൎത്ത് ഈ പ ത്രിക കിട്ടി വായിച്ചാറേ ഇതു കൎത്താവിന്റെ വഴി എന്നറിഞ്ഞു ജീവനുള്ള ദൈവത്തിൽ ആശ്രയിച്ചും കൊണ്ടു ആ വിളിയെ സ ന്തോഷത്തോടേ കൈക്കൊണ്ടു മറുവടി അയച്ചു. ഇനി ഒരു മുട ക്കമേ ഉണ്ടായുള്ളു. അതെന്തെന്നാൽ വിൎത്തമ്പൎഗ്ഗിലേ രാജാവിന്റെ അനുവാദംകൊണ്ടാവശ്യം അതിന്നു തക്കവണ്ണം ബ്ലുംഹൎത്ത് ഹരജി ബോധിപ്പിച്ചപ്പോൾ ബാസലിലേക്കു പോയി പാൎത്തിട്ടു സ്വദേശ ത്തിലേക്കു മടങ്ങിവരുവാൻ അനുവാദമുണ്ടെങ്കിലും വീണ്ടും ബോ ധകസ്ഥാനം പ്രാപിപ്പാൻ ആശിക്കരുതെന്ന രാജാജ്ഞ കേട്ടു കുറേ വ്യസനിച്ചിട്ടും തന്റെ കാൎയ്യം കൎത്താവിൽ തന്നേ സമൎപ്പിച്ചു ധൈ ൎയ്യം കൊള്ളുകയും ചെയ്തു. ആ സമയത്തു ബാസൽപട്ടണത്തിൽ ഒരു റുശ്യനായകിയുടെ മാനസാന്തരഘോഷണത്താൽ അനേകരു ടെ ഹൃദയത്തിൽ യേശുവിങ്കലേ വിശ്വാസവും സ്നേഹവും ഉജ്ജ്വലി ച്ചിട്ടു പലരും സ്വൎണ്ണാഭരണാദികളെ കൎത്തൃകാൎയ്യത്തിന്നായി ഏല്പി

ച്ചതിനാൽ മിശ്യൻസംഘമേധാവികളുടെ പക്കൽ ധാരാളമായി പണം പിരിഞ്ഞു വന്നതല്ലാതെ ഓരോ ഭക്തിയുള്ള യുവാക്കൾ അവൎക്കു ഹരജി ബോധിപ്പിച്ചു കൈക്കൊള്ളേണമെന്നപേക്ഷിച്ചതു കൊണ്ടു ബ്ലുംഹൎത്ത് അഭിപ്രായം പറയും പ്രകാരം ഏഴ പേരെ ചേൎത്തു അഭ്യസിപ്പിച്ചിട്ടു പുറജാതികളിൽ സുവിശേഷത്തെ അറിയിപ്പാൻ അയക്കേണ്ടതിന്നു നിശ്ചയിക്കയും ചെയ്തു. ബ്ലുംഹൎത്തോ സ്വദേശത്തെ വിട്ടു പോകും മുമ്പെ ഓരോ പാഠകശാലകളെയും മറ്റും ചെന്നു കണ്ടു തന്റെ പുതിയ ഉദ്യോഗത്തിന്നായി വിലയേറിയ പരിചയത്തെയും മിശ്യൻസംഘത്തിന്നു അനേകസ്നേഹിതന്മാരെയും സമ്പാദിച്ചതിന്റെ ശേഷം ൧൮൧൬ൽ ഭാൎയ്യയോടും സാമാനങ്ങളോടും കൂടി ബാസലിലേക്കു യാത്രയായി സ്വദേശക്കാരനായ ഒന്നാമത്തേ ശിഷ്യനെയും കൂട്ടിക്കൊണ്ടു വരികയും ചെയ്തു. അനന്തരം വിചാരണായോഗം മേലദ്ധ്യക്ഷന്നും ശാലക്കാൎക്കും പാൎക്കേണ്ടതിന്നു ഒരു ഭവനം വിലെക്കു വാങ്ങി ആ ഏഴ ശിഷ്യരെ ചേൎത്തു ഔഗുസ്ത് ൨൬-ാംനു ചില നല്ല പ്രസംഗങ്ങളെ കഴിച്ചും മിശ്യൻശാലയുടെ ക്രമങ്ങളെ വായിച്ചു കേൾ്പിച്ചും കൊണ്ടു ശാലയെ തുറക്കുന്ന സമയത്തു സഖറിയ 4, 6. "സൈന്യത്താലും ബലത്താലും അല്ല എന്റെ ആത്മാവിനാലത്രെ സാധിക്കും" എന്നു സൈന്യങ്ങളുടെ യഹോവ പറയുന്നു എന്നുള്ള ആധാരവചനം കേട്ടാറേ കൂടിയിരിക്കുന്നവർ ഒക്കയും കുമ്പിട്ടു വീണു ഈ ആത്മാവിനെ തരേണ്ടതിന്നു കൎത്താവിനോടു അപേക്ഷിച്ചു. ബ്ലുംഹൎത്തിന്റെ പ്രവൃത്തിയോ (എന്തെന്നാൽ മിശ്യൻവേലയെ കുറിച്ചുള്ള അറിവിനെയും ഉത്സാഹത്തെയും വൎദ്ധിപ്പിപ്പാൻ വേണ്ടി) ഒരു മിശ്യൻപത്രത്തെ രചിക്കേണ്ടതല്ലാതേ ശാലയിലുള്ള യുവാക്കളെ അഭ്യസിപ്പിച്ചു വളൎത്തിക്കൊണ്ടു സുവിശേഷഘോഷണത്തിന്നായി ഒരുക്കേണ്ടതു തന്നേ. ഈ പ്രവൃത്തിയെ അവൻ ബഹു വിശ്വസ്തതയോടേ ൨൮ സംവത്സരങ്ങളോളം നടത്തിക്കൊണ്ടിരുന്നു. ആദിയിൽ ബാസൽമിശ്യൻസംഘം സ്വന്തമായി ഉപദേഷ്ടാക്കന്മാരെ അയക്കാതേ ശാലയിൽ അഭ്യസിപ്പിച്ചു വളൎത്തിയ ശിഷ്യന്മാരെ ഹൊല്ലന്തിലും ഇംഗ്ലന്തിലും ഉള്ള ചില സംഘങ്ങളിൽ ഏല്പിച്ചതേയുള്ളു. എങ്കിലും ഏറക്കാലം കഴിയും മുമ്പേ ഇതു പോരാ എന്നു വെച്ചു പുറജാതികളുടെ ദേശങ്ങളിൽ ഉപദേഷ്ടാക്കന്മാരെ അയച്ചു മിശ്യൻവേല സ്വന്തമായി ആരംഭിക്കയും ചെയ്തു. അങ്ങിനേ ൧൮൨൧ൽ മേലദ്ധ്യക്ഷൻ ബോധിപ്പിച്ച ആലോചനെക്കു തക്കവണ്ണം വിചാരണായോഗം രണ്ടു പ്രേ

രിതന്മാരെ കൌക്കസപൎവ്വതത്തിൽ റുസ്യ എന്ന ദേശത്തേക്കു നിയോഗിച്ചു. ഈ പ്രവൃത്തി ഏകദേശം ൧൦ സംവത്സരം നടന്നു. ദൈവകരുണയാൽ ശോഭിച്ചു ഫലിപ്പാൻ തുടങ്ങിയപ്പോൾ റുസ്യചക്രവൎത്തി ൧൮൩൫ ഇൽ ഒരു ശാസനാമുഖാന്തരം അതിനെ നിറുത്തി ഒടുക്കിക്കളകയും ചെയ്തു. അതേ പ്രകാരം അഫ്രിക്കാഖണ്ഡത്തിന്റെ പടിഞ്ഞാറേ കടല്പുറത്തുള്ള ഓരോ സ്നേഹിതന്മാർ അപേക്ഷിക്കകൊണ്ടു ബാസലിലേ മേധാവികൾ ൧൮൨൮ ഇൽ അഞ്ചു ഉപദേഷ്ടാക്കന്മാരെ അയച്ചു ആ കറുത്ത ഭൂഖണ്ഡത്തിലും മിശ്യൻവേലയെ തുടങ്ങി എങ്കിലും ആ ദേശത്തിന്റെ ദോഷമായിരിക്കുന്ന പിത്തജ്വരം ഹേതുവാൽ മിക്കപേരും മരിച്ചു. ബ്ലുംഹൎത്ത് മരിച്ചു കൊല്ലമായ ൧൮൩൮ വരേ അയച്ചിട്ടുള്ള പതിമൂന്നു പ്രേരിതന്മാരിൽനിന്നു ഒരുത്തനേ ശേഷിച്ചിരുന്നുള്ളൂ. എന്നിട്ടും "കണ്ണുനീരോടേ വിതെക്കുന്നവർ ആൎപ്പോടേ കൊയ്യും" എന്നു വെച്ചു വിചാരണായോഗം പിൻവാങ്ങാതേ മേലദ്ധ്യക്ഷന്റെ ആലോചനപ്രകാരം പ്രവൃത്തി നടത്തിക്കൊണ്ടിരുന്നു ഇന്നേ വരേ കണ്ണുനീർ വേണ്ടുവോളം വാൎക്കേണ്ടിവന്നിട്ടും അവിടത്തേ മിശ്യൻവേല ശോഭിച്ചു സഫലമായിരിക്കുന്നു. പിന്നേ ൧൮൩൩ ഇൽ ബ്ലുംഹൎത്ത് ഇംഗ്ലന്തിലേ സ്നേഹിതന്മാരോടു കൂടി ചില കാൎയ്യങ്ങളെ ആലോചിച്ചു തീൎക്കേണ്ടതിന്നു ലണ്ടൻനഗരത്തിലേക്കു യാത്രയായി മടങ്ങിവന്നപ്പോൾ ഇന്ത്യാരാജ്യത്തിൽ അധികാരം നടത്തിപ്പോന്ന കുമ്പിഞ്ഞിസ്സൎക്കാർ ഇംഗ്ലന്തിലേ പ്രജാലോചനയുടെ കല്പനപ്രകാരം എല്ലാ വിലാത്തിക്കാൎക്കും ഇന്ത്യാരാജ്യത്തിൽ കുടിയേറി ഇഷ്ടപ്രകാരം വ്യാപരിച്ചു നടക്കേണ്ടതിന്നു സമ്മതം കൊടുക്കേണ്ടിവന്നു എന്ന സദ്വൎത്തമാനത്തെ സംഘമേധാവികളോടു അറിയിപ്പാൻ സംഗതിയായി. എന്നാൽ ഇതു കൎത്താവിൻ ഇംഗിതം എന്നു വിചാരിച്ചു കൊണ്ടിരിക്കുമ്പോൾ ഭക്തിയുള്ള ഒരു ഗമ്മാന്യപ്രഭു മിശ്യൻവേലെക്കായി ഏകദേശം 20,000 ഉറുപ്പിക സമ്മാനിച്ചതുകൊണ്ടു വിചാരണായോഗം ഹെബിക്ക്, ലേനർ, ഗ്രൈനർ എന്ന മൂന്നു ഉപദേഷ്ടാക്കന്മാരെ നിയോഗിച്ചുകൊണ്ടു ഇന്ത്യാരാജ്യത്തിലും കൎത്തുവേലയെ ആരംഭിപ്പാൻ നിശ്ചയിച്ചു. ൧൮൩൪ ഒക്ടോബർ ൧൩-ാംനു ആ മൂന്നു പേരും മംഗലപുരത്തു കപ്പൽ കിഴിഞ്ഞപ്പോൾ അവിടത്തേ ജഡ്ജിസായ്പായ അന്തേസൻ എന്നവർ അവരെ എതിരേറ്റു സന്തോഷത്തോടേ സത്കരിക്കയും ആ പട്ടണത്തിൽ ഒരു മിശ്യൻസ്ഥാനത്തെ സ്ഥാപിപ്പാൻ തക്കവണ്ണം ഔദാൎയ്യമായി സഹായിക്കു

കയും ചെയ്തു. രണ്ടു കൊല്ലം കഴിഞ്ഞിട്ടു മേധാവികൾ പിന്നേയും ൨ പേരെ അയച്ചാറേ ചില ഇംഗ്ലിഷു ചങ്ങാതിമാരുടെ അപേക്ഷ നിമിത്തവും ധനസഹായത്താലും ഹെബിക്ക് മെഗ്ലിങ്ങ് എന്ന രണ്ടു ഉപദേഷ്ടാക്കന്മാർ ധാൎവ്വാടി എന്ന പട്ടണത്തിൽ ഒരു സ്ഥാനത്തെ സ്ഥാപിപ്പാൻ ഇടയായി പിറേറ കൊല്ലത്തിൽ ഹെബിക്ക് ഹുബ്ലി എന്ന നഗരത്തിൽ കൎത്തൃവേലയെ ആരംഭിച്ചു. പിന്നേ ആ സമയം അഞ്ചരക്കണ്ടിയിലേ അടിമകളുടെ ഇടയിൽ മിശ്യൻ വേലയെ നടത്തിയ മീഖാ എന്ന ഉപദേശി അപേക്ഷ ബോധിപ്പിച്ചതുകൊണ്ടും തലശ്ശേരിയിലേ ജഡ്ജിസായ്പു ഇല്ലിക്കുന്നിന്മേൽ പുതുതായി പണിയിച്ച ഭവനത്തെ സമ്മാനിച്ചതുകൊണ്ടും ബാസലിലേ മേധാവികളുടെ സമ്മതത്തോടു കൂടേ ഈ മലയാളരാജ്യത്തിലും പണ്ഡിതരായ ഗുണ്ടത്ത് മുതലായ ഉപദേഷ്ടാക്കന്മാർ വന്നു സുവിശേഷഘോഷണം തുടങ്ങുകയും ചെയ്തു. ഇപ്രകാരം ഇന്ത്യാരാജ്യത്തിൽ കൎത്തൃവേല തഴെച്ചും പൂത്തും മനോഹരമായി ഫലിച്ചും കൊണ്ടിരിക്കേ മേലദ്ധ്യക്ഷനായ ബ്ലുംഹൎത്ത് ബാസലിൽ നിദ്രപ്രാപിച്ചു. അനുഗ്രഹമേറിയ പ്രവൃത്തിയിൽനിന്നു തന്നേ കൎത്താവു തന്റെ വിശ്വസ്തനായ ദാസനെ നിത്യസന്തോഷത്തിലേക്കു വിളിച്ചു.

ബാസൽമിശ്യനിൽ ബ്ലുംഹൎത്തിന്റെ പേർ ഇനിയും മറന്നു പോയിട്ടില്ല. അവന്റെ പ്രവൃത്തികളോ വാടിപ്പോകാതേ മേലിൽനിന്നു അനുഗ്രഹിക്കപ്പെട്ടു വിടൎന്നും വൎദ്ധിച്ചും നല്ല ഫലങ്ങളെ കാച്ചും കൊണ്ടിരിക്കുന്നു. സങ്കീ. 1—3.

## ഒരു കീൎത്തനം.

Safe in the arms of Jesus.

അനാദിയായുള്ള ദൈവം നിന്റെ അഭയസ്ഥാനം ആകുന്നു;
താഴെ നിത്യ ഭുജങ്ങളും ഉണ്ടു. ൫ മോശെ ൩൩, ൨൭.

൧. യേശുവിൻ കയ്യിൽ ചാഞ്ഞും—മാറോടും ചാരീട്ടും
സ്നേഹകടാക്ഷം ആൎന്നും—ഈ മനം ആറീടും;
തേജസ്സിൽ മേലാപ്പൂടെ—തീപ്പളുങ്കാഴിമേൽ
തേമ്പാതലെക്കും നാദം—ദൂതരിൽ ഗാനം—കേൾ. യേശുവിൻ—

൨. യേശു ഭുജത്തിൽ ക്ഷേമം—ആധിവിഹീനവും
ഏശാതു ലോകമോഹം—ലോകപരീക്ഷയും
ചേരാതു മനോവാട്ടം—പേടികലക്കവും
കേഴേണ്ട; ഇങ്ങേതാനും—ശോധന ശേഷിക്കും. യേശുവിൻ—

൩. ആരേലും അസ്സിവാരം—മാറാത്ത പാറയാൻ
വാൎന്ന വിലാവിൽ ഭാരം—പൂകീട്ടൊതുങ്ങും ഞാൻ;
രാത്രിരും നേരത്തോളം—പൊറുത്തു പാൎക്കുവേൻ
ഏറീട്ടും പുത്തൻ പോഴിൽ—പോങ്കരം കാണുവേൻ. യേശുവിൻ—

# ശ രീ ര ചി കി ത്സ.

## ദേഹത്തിൽ മുറിഞ്ഞാൽ (Wounds).

വെട്ടിന്നു വെള്ളിലയും ഈമ്പന തന്റെ കൂമ്പും കൊട്ടക്കുരുന്നു മുറിപൂവ്വകമാം പരുത്തി മത്സ്യാക്ഷിയും വരിയുമെന്നതിലൊന്നു പിഷ്ടപാ കെട്ടീട്ട തോയരഹിതം നവനീതയുക്തം.

രക്തം നിത്തുവാൻ. രക്തം നില്ലായ്കിൽ നിത്തീടുക മുറികിലുടൻ തത്രനീർകൊണ്ടു ധാരാം, അത്യന്തം ചെയ്ക ചണ്ടിത്തളിരു മതിനരെച്ചക്ഷണം വെക്ക പുണ്ണിൽ, പുത്രഞ്ചാരിഞ്ചപത്രം ചെറിയതു വിഹിതം പുള്ളടിം കൊള്ളമാറങ്ങപ്പപ്പത്രത്തോടൊപ്പം രുധിരമിഹ തട്ടപ്പോന്നു നൽ താറുതാവൽ.

## അഗ്നിവ്രണത്തിന്നു (Burns).

തീ തട്ടിപ്പൊള്ളുകീടിലപ്പൊഴുതു മോരാൽ തൈരുകൊണ്ടെങ്കിലും ധാരാ. കിംശുകനീരാൽ പത്രതോവശളയാ നിവ്വ്യാജതോവാചരേൽ. ഓത്തക്കമ്പളപത്രനീർ പിഴികാസ്ഥയാ ധാര ചെയ്കപ്പയേൽ പ്രാത്ഥിച്ചീശ്വരനോടുണങ്ങലരിയെ പേഷിച്ചു തേച്ചീടുക.

അത്ഥം: തീപ്പൊള്ളിയാൽ മോർ തൈർ മുരിക്കിലനീർ വശളനീർ പശുവിൻ നൈ ഇവയിൽ ഓരോന്നു കൊണ്ടു തത്കാലം ധാര ചെയ്യാം കുമ്പളത്തിലനീർ കൊണ്ടും ധാര ചെയ്കയും ഈശ്വരപ്രാത്ഥനയോടേ ഉണങ്ങലരി അരെച്ചു തേക്കുകയും ചെയ്താൽ തീപ്പൊള്ളിയതു ശമിക്കും.

തീപ്പൊള്ളിയാൽ ഉടൻ തന്നേ ഉണങ്ങലരി നേക്കനെ പൊടിച്ചു വ്രണപ്പെട്ട സ്ഥലത്തു കനത്തിൽ വിതറിപ്പിടിപ്പിച്ചു നീരൊലിച്ചുപോകാതിരിപ്പാൻ തക്കവണ്ണം മേല്ക്കുമേൽ പിടിപ്പിക്കേണം. ഇങ്ങിനേ ചെയ്താൽ വ്രണത്തിൽ കാറേല്ക്കാതേ മൂടികൊണ്ടിരിക്കും. ചില ദിവസങ്ങളുടെ ശേഷം ആ പൊററ ഉണങ്ങി വലിയുമ്പോൾ മാവിന്റെ പോല്ടീസ് ഉണ്ടാക്കി കെട്ടിയാൽ ആ പൊററ പതം വെച്ചു അടന്നു പോയ ശേഷം നൂററിന്റെ തെളിഞ്ഞ വെള്ളവും എണ്ണയും തമ്മിൽ ചേത്തുരസി അതിൽ തുണി നനെച്ചു പത്തിയിട്ടാൽ വേഗത്തിൽ സൌഖ്യമാകും.

കോഴിമുട്ടയുടെ മഞ്ഞക്കരുവും വെണ്ണയും സമം ചേത്തു ഉരസി വടിച്ചാലും അഗ്നിവ്രണം ശമിക്കും.

൨ ഔൻസ് മെഴവും ൫ ഔൻസ് വെളിച്ചെണ്ണയും ചേത്തു ഒരു മണ്പാത്രത്തിൽ ആക്കി മൃദഗ്നിയാൽ ഉരുക്കിച്ചേത്ത ശേഷം അ

തിൽനിന്ന കുറേശ്ശ എടുത്തു തുണിയിൽ തേച്ചു അഗ്നിവ്രണ ത്തിൽ പററിച്ചാലും ശമനം വരും.

## വിണ്ടിവീക്കം. മുണ്ടിനീർ (Munups).

വിണ്ടിവീക്കം എന്നതു ചെവിക്കു കീഴുള്ള ഞരമ്പുകളുടെ വീക്ക മാകുന്നു. ബഹു വേദനയും കുത്തലും കടച്ചലും അണ്ണി ഇളക്കേ ണ്ടതിന്നു വളരേ പ്രയാസവും ഉണ്ടാകും. ഇങ്ങിനേ ഒരു ഭാഗം വീങ്ങി പൂൎണ്ണസൌഖ്യമാകുന്നതിന്നു മുമ്പേ മറേറ ഭാഗവും വീ ങ്ങും ഇതോടു കൂടേ ചിലപ്പോൾ പനിയും ഉണ്ടാകും. ഇതു ഒരു പകരുന്ന വ്യാധിയായിട്ടു തണുപ്പുള്ള സമയങ്ങളിൽ സാധാരണ യായുണ്ടായി ഒരാളിൽനിന്നു മററൊരാളിലേക്കു പകരുന്നു.

അതിന്നു ചികിത്സ: ആവിണക്കെണ്ണയോ ചുണ്ണാമക്കിക്കഷാ യമോ കൊടുത്തു വയറിളക്കുക. വീക്കമുള്ള സ്ഥലത്തു ശീതക്കാററു തട്ടാതിരിപ്പാൻ ഒരു കമ്പിളിവസ്ത്രം കെട്ടിക്കൊണ്ടിരിക്കേണം. ചില ദിവസത്തോളം ഭക്ഷണപാനങ്ങളിൽ മിതിയായിരിക്കുകയും വേ ണം. അധികം വേദനയുണ്ടായിരുന്നാൽ അഫീമിന്റെ തൈലം തേക്കേണ്ടതാകുന്നു. (അതുണ്ടാക്കേണ്ടുന്ന വിധമാവിതു: കാലേ യരക്കാൽ ഉറുപ്പികത്തൂക്കം അഫീം കാൽക്കുപ്പി വെളിച്ചെണ്ണയി ലോ എള്ളെണ്ണയിലോ കലക്കി ചേൎക്കുക തന്നേ). പനിയും കൂടേ ഉണ്ടായിരുന്നാൽ അരേയരക്കാൽ ഉറുപ്പികത്തൂക്കം വെടിയുപ്പു പൊടിച്ചു ഒരു കുപ്പി കഞ്ഞിവെള്ളത്തിൽ ചേൎത്തു കുടിക്കേണ്ടതു.

## കൊക്കക്കുര. (Hooping Cough).

ഇതു വിശേഷാൽ കുട്ടികൾക്കു വരുന്ന ഒരു പകരുന്ന വ്യാധി അത്രേ എന്നാൽ ഈ വ്യാധി ഒരിക്കലുണ്ടായാൽ മററൊരു പ്രാവ ശ്യം ഉണ്ടാകയില്ല. കൊക്കക്കുര ശീതം കൊണ്ടോ ജലദോഷം കൊ ണ്ടോ സാധാരണയായി ആരംഭിച്ചു ദേഹത്തെ മുഴുവനും നന്ന വേദനപ്പെടുത്തി തൊണ്ടയിൽ വിള്ളലുണ്ടാക്കി കൂടക്കൂട കുരെച്ചു കൊണ്ടിരിക്കും. ഒരാഴ്ചയോളം ജലദോഷത്തിന്റെയോ പനിയുടെ യോ ലക്ഷണങ്ങൾ ഇല്ലാതേ ചുമ മാത്രം കൂടക്കൂടേ ഉണ്ടായി അതു കഠിനമായും നീണ്ടതായും തീൎന്നു തൊണ്ടയിലും നെഞ്ഞ ത്തും കഫം വൎദ്ധിച്ചും വരും. ഓരോരിക്കൽ ചുമക്കുമ്പോൾ മുഖം ചുവന്നു, ശ്വാസം ദീൎഘിച്ചു ഏകദേശം വീൎപ്പു മുട്ടിപ്പോകുമ്പോലേ ആകും. ഇങ്ങിനേ രണ്ടു മൂന്നു മണിക്കൂറിൽ ഒരിക്കൽ ഉണ്ടാകും. കഠിനസ്ഥിതിയിലും മുഖ്യമായി രാത്രികാലങ്ങളിലും അധികമായിട്ടു കുരെക്കും. ഉണ്ടു ഉടനേ കുര വന്നാൽ ഭക്ഷിച്ചതെല്ലാം ഛൎദ്ദിപ്പിച്ചി ട്ടേ നില്ക്കയുള്ളൂ. അല്ലെങ്കിൽ നൂലു പോലത്തേ കഫം വന്ന ശേഷം അതു സാവധാനമാകുന്നതുമുണ്ടു. ചിലപ്പോൾ കഠിനമാ

യി കുരവന്നാൽ മൂക്കിൽ നിന്നോ വായിൽ നിന്നോ ചെവിയിൽ നിന്നോ രക്തവും കൂടേ വരും. കുട്ടികൾക്കു പല്ലു വരുന്ന സമയത്തിൽ ഈ കുര തുടങ്ങിയാൽ പലപ്പോഴും അപസ്മാരവും കൂടേ ഉണ്ടാകും. കൊക്കക്കുര ചിലപ്പോൾ കരുവൻ വസൂരി കഫക്ഷയം മുതലായതിനോടു ചേൎന്നു വന്നാൽ ചികിത്സിക്കുന്നതു പ്രയാസമായിരിക്കും.

ചികിത്സ: ആരംഭത്തിൽ തന്നേ ആവിണക്കെണ്ണകൊണ്ടു വയറിളക്കി വള്ളിപ്പാല (Country Ipecacuanha) യുടെ ഉണങ്ങിയ ഇലകളെ പൊടിച്ചു ൫ ഗ്രേയിൻ പ്രകാരം ദിവസത്തിൽ മൂന്നു നാലു പ്രാവശ്യം കൊടുക്കേണ്ടതു. അതു തനിച്ചു പൊടിയായിട്ടെങ്കിലും ഇരട്ടിമധുരലേഹ്യത്തിൽ ചേൎത്തിട്ടെങ്കിലും കൊടുക്കാം. (ആ ലേഹ്യം ഉണ്ടാക്കുന്ന വിധം എങ്ങിനേയെന്നാൽ, ൨ ഔൺസു ഇരട്ടിമധുരം ചതെച്ചു ഒരൌൺസു വെണ്ടക്കായും നുറുക്കി രണ്ടും അരക്കുപ്പി വെള്ളത്തിൽ അരമണിക്കൂറോളം വേവിച്ചുണ്ടാകുന്ന കഷായത്തെ അരിച്ചു എടുത്തു അതിൽ ൮ ഔൺസു കല്ക്കണ്ടി എങ്കിലും തേനെങ്കിലും കൂട്ടി പിന്നേയും കുറുക്കി ലേഹ്യമാക്കേണം). ദീൎഘകാലമായ കുരക്കാൎക്കു പ്രത്യേകം പ്രായസ്ഥൎക്കു ഒരു ഡ്രാം നവസാരം ൨ ഔൺസു ഇരട്ടിമധുരലേഹ്യം ൪ ഔൺസു വെള്ളം ഈ മൂന്നും ഒന്നാക്കി ചേൎത്തു ഓരോ ഔൺസു പ്രകാരം ദിവസത്തിൽ അഞ്ചാറുവട്ടം കൊടുത്താൽ വളരേ ഗുണമുണ്ടാകും. കുട്ടികൾക്കായാൽ നവസാരം ഒരു ഗ്രേയിൻ മുതൽ ൫ ഗ്രേയിൻ വരെയും രണ്ടു മൂന്നു ഗ്രേയിൻ കറുപ്പത്തോലിൻ ചൂൎണ്ണവും ചേൎത്തു കൊടുത്താൽ കൊക്കക്കുര ശമിക്കും. പനി കുറഞ്ഞിരിക്കുമ്പോൾ കുരയുടെ ആരംഭത്തിങ്കൽ തന്നേ പടികക്കാരം കൊടുക്കുന്നതു അത്യുത്തമമായിരിക്കും. അതെങ്ങിനേയെന്നാൽ രണ്ടു മൂന്നു വയസ്സുള്ള കുട്ടികൾക്കു മൂന്നു നാലു ഗ്രേയിൻ പടികക്കാരം പൊടിച്ചു വെറും പൊടിയായിട്ടെങ്കിലും വെള്ളത്തിൽ കലക്കീട്ടെങ്കിലും നാലോ ആറോ മണിക്കൂറിന്നുള്ളിൽ ഒരിക്കൽ കൊടുക്കാം. വെള്ളത്തിൽ കലക്കിക്കൊടുക്കും വിധമാവിതു: ൨൫ ഗ്രേയിൻ പടികക്കാരം ൩ ഔൺസു അയമോദകദ്രാവകത്തിൽ കലക്കി ൨ മുതൽ ൪ വരെ വയസ്സുള്ള കുട്ടികൾക്കു ആറു മണിക്കൂറിന്നൊരിക്കൽ രണ്ടു ചായക്കരണ്ടിപ്രമാണം കൊടുത്താൽ സൌഖ്യമാകും. ശ്വാസം മുട്ടുള്ള കൊക്കക്കുരക്കാൎക്കു കടുകരെച്ചു നെഞ്ഞത്തു പത്തിയിട്ടാൽ ഗുണമാകും. അതു തന്നേ പൂണെല്ലിന്മേൽ രണ്ടു കൈപ്പലകകളുടെ നടുവിൽ പത്തിയിട്ടാലും നന്നു. വലിയവൎക്കും ചെറിയവൎക്കും അതിനാലേ തന്നേ കൊക്കക്കുര ശമനമായിട്ടും ഉണ്ടു.

## ചൊറിക്കും ചിരങ്ങിന്നും. (Itches).

ചൊറിക്ക് ഗന്ധകലേപം പ്രസിദ്ധമായൊരൌഷധമാകുന്നു. സാധാരണഗന്ധകമോ ശുദ്ധി ചെയ്ത ഗന്ധകമോ നേൎമ്മ പൊടിച്ചു അതിന്റെ ഒന്നിന്നു ആറിരട്ടി ചെരുബിയെങ്കിലും വെളിച്ചെണ്ണയെങ്കിലും ചേൎത്തു മിശ്രമാക്കേണം. ചൊറിചിരങ്ങുകളുള്ള സ്ഥലം സാബൂൻകൊണ്ടു തേച്ചു ചൂടുവെള്ളത്തിൽ കഴുകി തോൎത്തിയ ശേഷം ഈ ലേപം ആ സ്ഥലത്തു കാൽമണിക്കൂറോളം തേച്ചു ചിരങ്ങെല്ലാം പൊട്ടുന്നതുവരെ ഉരസേണം. രാത്രികാലത്തിലും ഈ ലേപം തേച്ചുരസി പിറേറന്നാൾ രാവിലേ സാബൂൻകൊണ്ടു ചൂടുവെള്ളത്തിൽ കഴുകിയാൽ അല്പദിവസം കൊണ്ടു സൌഖ്യമാകും. ചൊറി ഒരിക്കൽ സൌഖ്യമായ ശേഷം പിന്നേ വരാതിരിക്കേണ്ടതിന്നു ചൊറി ഉള്ളപ്പോൾ പ്രയോഗിച്ച വസ്ത്രങ്ങളെല്ലാം നന്നായി പുഴുങ്ങി അലക്കിയ ശേഷമത്രേ പ്രയോഗിക്കാവു. അല്ലാഞ്ഞാൽ ചൊറിയുടെ പകരുന്ന ഭാവം വസ്ത്രത്തിൽനിന്നു നീങ്ങിപ്പോകയില്ല.

---

## തപ്പാൽക്രമങ്ങൾ.

കത്തു പുസ്തകം ഭാണ്ഡം എന്നിവററിൻ തൂക്കപ്രകാരം കൊടുക്കേണ്ടുന്ന തപ്പാൽനറക്കുവിവരവും മററും.

### ൧. അഞ്ചൽനറുകൾ. (പോസ്റ്റ് കാൎഡ്.)

കത്തിൻ ഉറയുടെ വലിപ്പത്തിലും തകിടുകനത്തിലും ഉള്ള നറുക്കുകൾ ഉണ്ടു. മുദ്രപതിച്ച ഭാഗത്തിൽ മേൽവിലാസമേ എഴുതാവു. മറുപുറത്തു അറിയിപ്പാൻ മനസ്സുള്ളതു എഴുതാം. ഇതു ഉറയിൽ ഇടാതേ വെറുതേ ഇടാം.

### ൨. കത്തു.

| തൂക്കം. | മുദ്രവില. |
|---|---|
| ½ ഉറുപ്പികത്തൂക്കത്തോളം | പൈ ൬ |
| ½ ഉറു. മേലും ൧ ഉറു. യോളവും | അണ ൧ |

ഇങ്ങിനേ ഓരോ ഉറുപ്പികയുടെ വല്ല അംശത്തിന്റെ തൂക്കം കയറുന്നതിന്നു ഓരോ അണയുടെ വില ഏറുകയും ചെയ്യും. ഒരു കത്തിന്നു പററിച്ച മുദ്ര പോരാതേ വന്നാൽ ആ പോരാത്ത മുദ്രയുടെയും നറുക്കിന്റെയും ഭേദത്തെ കത്തു വാങ്ങുന്നവർ ഇരട്ടിപ്പായി കൊടുക്കേണ്ടി വരും. മുദ്ര ഇല്ലാത്ത കത്തിന്നു ഇരട്ടിച്ച കൂലി ഉണ്ടു താനും. ൨൦ ഉറുപ്പികത്തൂക്കത്തിൽ ഏറുന്നവ ഭാണ്ഡത്തപ്പാൽ നടക്കുന്ന കച്ചേരികളിൽ കത്തു എന്നു വെച്ചു എടുക്കയില്ല; ഭാണ്ഡത്തിൽ അത്രേ ചേൎക്കുന്നുള്ളു. ഭാണ്ഡമില്ലാത്ത കച്ചേരികളിൽ എടുക്കയും ചെയ്യും.

### ൩. കെട്ടു.

പുസ്തകം വൎത്തമാനക്കടലാസ്സു മുതലായ എഴുത്തുകൾ "ബുക്ക്പെകെട്ട്" എന്ന തപ്പാലിലും, മാതിരിയായി അയക്കുന്ന ചെറുവകസ്സാമാനങ്ങൾ "പെററൺപെകെട്ട്" എന്ന തപ്പാൽവഴിയായും പോകുന്നു. ഇങ്ങിനേ അയപ്പാൻ വിചാരിച്ചാൽ, അവറെറ

രണ്ടു പുറത്തും തുറന്നിരിക്കുന്ന തടിച്ച കടലാസ്സിലോ മഴക്കാലത്തു മെഴുത്തുണിയിലോ കെട്ടി, "ബുക്‌പെകെട്ട്" അല്ലെങ്കിൽ "പെററൺപെകെട്ട്" എന്ന വാക്കിനെ തലക്കൽ എഴുതേണം. കൂലിയോ: ൧൦ ഉറുപ്പികയിൽ ഏറാത്തതിന്നു ൩ പൈ. പിന്നേ പതുപ്പത്തു ഉറുപ്പികയോ പത്തു ഉറുപ്പികയുടെ വല്ല അംശമോ ഏറുന്ന തൂക്കത്തിന്നു അരയണ തപ്പാൽക്കൂലിയും കയറും. (പത്തു ഉറുപ്പിക ശരിയായ തൂക്കമുള്ള പുസ്തകത്തിന്റെ കൂലി അരയണയെങ്കിലും പത്തുറുപ്പികത്തൂക്കത്തിൽ ഒരു രോമം പോലും ഏറുന്നതിന്നു ഒരണ.) "ബുക്‌പെകെട്ട്" എന്നതു എത്രവരേ അയക്കാം എന്നൊരു നിയമം ഇല്ല. എങ്കിലും "പെററൺപെകെട്ട്" എന്നതു ൪൦ ഉറുപ്പികത്തൂക്കത്തിൽ ഏറുവാൻ പാടില്ല. എന്നാൽ ഈ രണ്ടു വിധം കെട്ടും ൨ അടി നീളത്തിലും ൧ അടി അകലത്തിലും (തടി) ഏറരുതു. മുദ്ര പററിക്കാതേ തപ്പാൽവഴിയായി അയച്ചാൽ കത്തുകൾക്കുള്ളതു പോലേ ഇരട്ടിച്ച കൂലി കൊടുക്കേണ്ടിവരും.

നമ്മുടെ ഇംഗ്ലിഷ്ക്കോയ്മെക്കു അധീനമുള്ള ഭാരതത്തിലേ ഏതു സ്ഥലത്തോളവും മുഞ്ചൊന്ന തൂക്കമുള്ള കത്തുകളും പുസ്തകങ്ങളും മേല്പറഞ്ഞ കൂലിക്കു എത്തും. കോഴിക്കോട്ടുനിന്നു തലശ്ശേരിക്കും കലികാതെക്കും സമത്തൂക്കമുള്ള കത്തു പുസ്തകങ്ങളും തമ്മിൽ ഒക്കുന്ന കൂലിക്കു പോകും.

## ൪. ഭാണ്ഡം.

| | |
|---|---|
| ൨൦ ഉറുപ്പികയോളം | അണ ൪ |
| ൪൦ ,, | ,, ൮ |

നാല്പതിൽ ഏറിയാൽ നാല്പതീതു ഉറുപ്പികത്തൂക്കം ഏറുന്നതിന്നു നന്നാലു അണ കൂലി കൂടേ ഒട്ടിക്കേണം.

അങ്ങനേ അയക്കുന്ന കെട്ടുകളിൽ ഒരു കത്തു മാത്രമേ വെപ്പാൻ പാടുള്ളു; അധികം കത്തുകളെ വെച്ചാൽ ൫൦ ഉറുപ്പികയോളം പിഴ ഉണ്ടാകും. എന്നാൽ കെട്ടിനെ മെഴുത്തുണികൊണ്ടു നല്ലവണ്ണം പൊതിഞ്ഞു ഉറപ്പായി കെട്ടി അരക്കുകൊണ്ടു മുദ്രയിട്ടു ഇതിൽ "റെഗ്യുലേഷന്നു വിപരീതമായിട്ടു ഏതുമില്ല" എന്നു തലെക്കൽ ഒരു എഴുത്തും മേൽവിലാസവും അയക്കുന്നവരുടെ പേരും ഒപ്പും വേണം. മേല്പറഞ്ഞ കൂലി പണമായിട്ടേ കൊടുപ്പാൻ പാടുള്ളു. കൂലി കൊടുക്കാതേ അയച്ചാൽ വാങ്ങുന്നവർ നറുക്കുപ്രകാരം കൂലി കൊടുത്താൽ മതി. ഈരായിരം ഉറുപ്പികത്തൂക്കത്തിൽ ഏറ കനമുള്ള ഭാണ്ഡം അയച്ചുകൂടാ.

☞ പോരാത്ത കൂലിയെ വാങ്ങുന്നവർ കൊടുക്കേണ്ടുന്ന വിധം.

൧. മുദ്ര പററിക്കാത്ത കത്തിന്നു: ഇരട്ടിച്ച കൂലി.
൨. മുദ്ര പോരാത്ത കത്തുകെട്ടുകൾക്കു: ഇരട്ടിച്ച പോരാത്ത കൂലി.
൩. മുദ്ര പററിക്കാത്ത കെട്ടിന്നു: ഇരട്ടിച്ച കൂലി.
൪. കൂലി പോരാത്ത ഭാണ്ഡം: നറുക്കുകൂലി.

## ൫. ടാപ്പുചാൎത്തൽ. (റജിസ്ത്രേഷൻ)

കൂലി കൂടാതേ രണ്ടണ ടാപ്പുകൂലി കത്തിന്മേൽ പററിച്ചാൽ അതിന്നു ഒരു പുക്കവാറുമുറി (രശീതി) കിട്ടും. അതു പോലെ കെട്ടും പോസ്റ്റ് കാൎഡും ടാപ്പിൽ ചാൎത്താം. ഒരണ കൂട കൊടുത്താൽ കത്തുവാങ്ങുന്ന മേൽവിലാസക്കാരൻ കൊടുക്കേണ്ടും പുക്കവാറുമുറിയെ തപ്പാൽക്കാർ അയച്ചവന്നു എത്തിക്കും. അതിന്നു അവരവർ താന്താങ്ങളുടെ പേരും പാൎപ്പിടവും വിവരമായി എഴുതി കൊടുക്കേണം.

## ൬. വീമ. (ഇൻഷ്യുരൻസ്)

അയക്കുന്ന സാമാനങ്ങളുടെ സാക്ഷാൽ വിലെക്കുള്ള വീമ ആവിതു: ഉറു. ൫൦ഇൽ ഏറാത്തതിന്നു വീമ ൨ അണയും ൧൦൦ഇൽ ഏറാത്തതിന്നു ൪ അണയും ഓരോ നൂറീതുറുപ്പികെക്കും അംശത്തിന്നും നാലണപ്രകാരവും അത്രേ. ഇങ്ങനേ വീമ തീൎത്താൽ തപ്പാലിൽ പോയ്പോയ വസ്തുവിന്റെ ശരിയായ വില വീമപ്രകാരം കോയ്മ കൊടുക്കുന്നു. എന്നാൽ വില തീൎത്തിട്ടും കോയ്മ ഏല്ക്കാത്ത സംഗതികൾ ഏവയെന്നാൽ: ൧. കറവും തപ്പ

മുള്ള മേൽവിലാസം ഹേതുവായി തപ്പാൽഭാണ്ഡത്തെ തെററായിട്ടുള്ള ആൾക്കു ഏല്പിക്കയും ൨. കളവായ പ്രസ്താവം (ഡെക്ലരേഷൻ) ഉരെച്ചെഴുതുകയും ൩. മേൽവിലാസക്കാരൻ പുക്കവാറുമുറിക്കു ഒപ്പിട്ട ശേഷം കുറവു പറകയും ൪. മൂന്നു മാസം കഴിയുന്നതിന്നിടേ വന്ന നഷ്ടം അറിയിക്കായ്കയും ൫. അടുക്കി പൊതി കെട്ടുന്ന കുറവുകൊണ്ടു കേടു തട്ടുകയും ൬. ഭാണ്ഡം പുറമേയുള്ള യാതൊരു കുറവു കൂടാതേ എത്തുകയും ചെയ്യുമ്പോൾ തന്നേ. ഇതു വിചാരിച്ചാൽ അയക്കുന്നവർ സാമാനങ്ങളെ കേടുവരാതേ ക്രമമായി അടുക്കി പൊതിഞ്ഞു ഭാണ്ഡം നന്നായി കെട്ടി തുന്നി അരക്കുകൊണ്ടു മുദ്രയിട്ടു സത്യപ്രകാരമുള്ള പ്രസ്താവത്തെ എഴുതേണ്ടതു. വിമതീൎത്ത ഭാണ്ഡത്തെ വാങ്ങുന്നവർ ഒപ്പിടു മുമ്പേ പൊതി മുദ്ര ഇത്യാദികൾക്കു കേടു വന്നുവോ എന്നു സൂക്ഷിച്ചു നോക്കേണ്ടതു.

## ൭. ഭാണ്ഡത്തിൻ വില തപ്പാൽമൂലം കിട്ടുക.

നിങ്ങളിൽ ആരെങ്കിലും കോഴിക്കോട്ടുനിന്നോ മറേറാ ചെന്നപട്ടണത്തും മററുമുള്ളോർ ആൾക്കു വല്ല ചരക്കു തപ്പാൽവഴിയായി അയച്ചാൽ ഭാണ്ഡത്തിന്നു പിടിപ്പതുകൂലി കൊടുത്തു പുറത്തു സാമാനങ്ങളുടെ വില എഴുതി അതു തപ്പാൽമുഖാന്തരമായി കിട്ടേണം എന്നും കുറിച്ചുവെച്ചാൽ കോയ്മ ആ കാൎയ്യം ഏററു ഭാണ്ഡം ചെന്നപട്ടണത്തോ മറേറാ ഏല്പിക്കുമ്പോൾ നിങ്ങൾ എഴുതിയ വിലപ്രകാരം മേൽവിലാസക്കാരനോടു വാങ്ങിയ ശേഷം നിങ്ങൾക്കു ഒരു മാസം കഴിഞ്ഞാൽ തരും. ആ അദ്ധ്വാനത്തിന്നു കോയ്മ നിശ്ചയിച്ച തരകു (കമ്മിഷൻ) ആവിതു:

൧൦ ഉറുപ്പികയോളം ൨ അണയും ൨൫ ഓളം ൪ അണയും ൫൦ ഓളം ൮ അണയും ഓരോ ഇരുപത്തഞ്ചു ഉറുപ്പികെക്കും പങ്കിന്നു കാൽ ഉറുപ്പികവീതവും കൊടുപ്പൂ. സംശയം തോന്നിയാൽ മേൽവിലാസക്കാരൻ തപ്പാൽപ്രമാണിയുടെ (പോസ്റ്റ്മാസ്റ്റർ) മുമ്പിൽ ഭാണ്ഡത്തെ തുറന്നു നോക്കുന്നതു അനുവാദം. അയച്ച ആൾ തപ്പാലിൽനിന്നുണ്ടാകുന്ന പുക്കവാറുമുറിയോടു കൂട ഒരു മാസം കഴിഞ്ഞു ചെന്നാൽ തനിക്കു ഭാണ്ഡം ഏല്പിച്ച തപ്പാൽച്ചാവടിയിൽനിന്നു തന്നേ പണം കിട്ടും.

## ൮. (Money Order) "മണിയാഡർ" എന്ന ഉണ്ടിക അയക്കുന്നതിനെ കുറിച്ചു.

ഒരു പോസ്റ്റ്മാസ്റ്റർ ഹിന്തുസ്ഥാനത്തിൽ തപ്പാലപ്പീസ്സുള്ള ഏതു നാട്ടിലെങ്കിലും ൧൫൦ ഉറുപ്പികയിൽ അധികമല്ലാത്ത പണത്തിന്നു ഉണ്ടിക കൊടുക്കും. ഉണ്ടികമൂലമായി ആർ ആൎക്കു പണമയക്കുന്നുവോ ആ രണ്ടാളുകളുടെ പേരും മേലെഴുത്തും മററും തപ്പാലപ്പീസ്സിൽനിന്നു കിട്ടുന്നതായ അച്ചടിച്ച കടലാസ്സിന്മേൽ വിവരമായിട്ടു

വട്ടം കൊടുക്കേണ്ടും ക്രമം.

| | |
|---|---|
| ഉണ്ടിക ഉറു. ൧൦ഇൽ ഏറാതിരുന്നാൽ, | ൨ ണ. |
| ,, ,, ,, തൊട്ടു ഉറു. ൨൫ഇൽ ഏറാത്തതിന്നു | ൪ ,, |
| ,, ,, ൨൫ ,, ,, ൫൦ ,, | ൮ ,, |
| ,, ,, ൫൦ ,, ,, ൭൫ ,, | ൧൨ ,, |
| ,, ,, ൭൫ ,, ,, ൧൦൦ ,, | ൧ ക. |
| ,, ,, ൧൦൦ ,, ,, ൧൨൫ ,, | ൧ I ,, |
| ,, ,, ൧൨൫ ,, ,, ൧൫൦ ,, | ൧ II ,, |

എഴുതി പണവും വട്ടവും തപ്പാലപ്പീസ്സിൽ കൊടുത്താൽ അതിന്നു അവിടേനിന്നു രശീതി കൊടുത്തു പണം ആൎക്കെത്തിക്കേണമോ അവന്നു അവിടേനിന്നു തന്നേ എത്തിക്കും. പണം ലഭിക്കുന്നവന്നു തപ്പാൽമുഖാന്തരം അച്ചടിച്ച ഉണ്ടികച്ചീട്ട് കിട്ടും. അതിൽ കാണിച്ച തപ്പാലപ്പീസ്സിൽ കിട്ടേണ്ടുന്ന പണത്തിന്നു രശീതിയും കൊടുത്തു പണം വാങ്ങിക്കൊള്ളേണ്ടതു. ഒരിക്കൽ കൊടുത്ത ഉണ്ടിക മൂലമായി പണം എത്താതേ പോയ്പോയാൽ രണ്ടാമതും മേല്പറഞ്ഞ ക്രമത്തിൽ വട്ടം കൊടുക്കുമെങ്കിൽ വീണ്ടും ഉണ്ടികച്ചീട്ടു അയക്കപ്പെടും. ൧൫൦ ഉറുപ്പികയിൽ ഏറ മണിയാഡർ അയക്കുന്നില്ല.

# ൧൮൭൯ലേ ഒന്നാം നമ്പർ മുദ്രപത്രം ആക്റ്റിൽനിന്നു സംക്ഷേപിച്ചതു.

| ആധാരവിവരം | ശരിയായമുദ്രവില |
|---|---|
| **11. മാററുപത്രമോ വാഗ്ദത്തപത്രമോ, ഒരു ചെക്കോ കടംശീട്ടോ ബാങ്ക്നോട്ടോ കറൻസി നോട്ടോ അല്ലാത്തതു.** | |
| (ഏ.) ചോദിക്കുമ്പോൾ പണം അടെപ്പാനുള്ളതും തുക 20 ഉറുപ്പികയിൽ കവിയുന്നതും ആയാൽ . . . . . . . | ഒരണ |

| (ബി.) ചോദിക്കുമ്പോൾ കൊടുപ്പാനുള്ളതല്ലാത്തതും എന്നാൽ പത്രനം കാണ്ടോ കണ്ടനം കോ ശേഷം ഒരു കൊല്ലത്തിൽ അധികം കഴിയേണ്ടതല്ലാത്തതും ആയിരിക്കുമ്പോൾ . | ഒററയായി എഴുതിയാൽ | | ഇരട്ടയായി എഴുതിയാൽ ഓരോന്നിന്നു | | മൂന്നുള്ള തരത്തിൽ എഴുതിയാൽ ഓരോന്നിന്നു | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | ക. | ണ. | ക. | ണ. | ക. | ണ. |
| പത്രത്തിലേ സംഖ്യ 200 കയിൽ കവിയാത്തപ്പോൾ . . . . . . . | — | 2 | — | 1 | — | 1 |
| 200 കയിൽ കവിയുകയും 400 കയിൽ കവിയാതിരിക്കയും ചെയ്താൽ . . . . . . | — | 4 | — | 2 | — | 2 |
| 400 . . . . . 600 . . . . | — | 6 | — | 3 | — | 2 |
| 600 . . . . 1,000 . . . . | — | 10 | — | 5 | — | 4 |
| 1,000 . . . . 1,200 . . . . | — | 12 | — | 6 | — | 4 |
| 1,200 . . . . 1,600 . . . . | 1 | — | — | 8 | — | 6 |
| 1,600 . . . . 2,500 . . . . | 1 | 8 | — | 12 | — | 8 |
| 2,500 ഇന്നു മേൽ 10,000 വരേ ഓരോ 2,500ഇന്നോ അതിൽ വല്ല ഭാഗത്തിന്നോ. . . . | 1 | 8 | — | 12 | — | 8 |
| 10,000ത്തിന്നു മേൽ 30,000 വരേ ഓരോ 50,000ത്തിന്നോ അതിൽ വല്ല ഭാഗത്തിന്നോ . . . | 3 | — | 2 | 8 | 1 | — |
| 30,000ത്തിന്നു മേൽ ഓരോ 10,000ത്തിന്നോ അതിൽ വല്ല ഭാഗത്തിന്നോ . . . . . | 6 | — | 3 | 8 | 2 | — |

| | |
|---|---|
| **13. കടംശീട്ടു, കാൎയ്യം നടത്തുവാനുള്ള കച്ചീട്ടു, ചുങ്കച്ചീട്ടു, നഷ്ടം തീൎപ്പാനുള്ള കച്ചീട്ടു ജാമ്യശ്ശീട്ടു.** | |
| ഉറപ്പിച്ച സംഖ്യയോ വിലയോ 10 കയിൽ കവിയാത്തപ്പോൾ. | രണ്ടണ |
| ഉറപ്പിച്ച സംഖ്യയോ വിലയോ 10 കയിൽ കവിയുകയും 50 ഇൽ കവിയാതിരിക്കയും ചെയ്താൽ . . . . . . . . | നാലണ |
| ആ സംഖ്യയോ വിലയോ 50 ഇൽ കവിയുകയും 100 ഇൽ കവിയാതിരിക്കയും ചെയ്താൽ . . . . . . . . | എട്ടണ |
| 100 ഇൽ കവിഞ്ഞു 1,000-ം വരേ ഓരോ 100 ഇന്നോ അതിൽ വല്ലഭാഗത്തിന്നോ . . . . . . . . . . . | എട്ടണ |
| 1,000കെക്കു മേൽ ഓരോ 500 ഇന്നോ അതിൽ വല്ലഭാഗത്തിന്നോ | 2ക എട്ടണ |

| ആധാരവിവരം. | ശരിയായമുദ്രവില |
|---|---|
| **21. വിക്രയക്കൈമാററാധാരം.** | |
| ആധാരത്തിൽ കാണിച്ച പ്രതിഫലസംഖ്യ 50 കയിൽ കവിയാഞ്ഞാൽ . . . . . . . . . . . . . . . | എട്ടണ |
| 50 ഇൽ കവിയുകയും 100 ഇൽ കവിയാതിരിക്കയും ചെയ്യുമ്പോൾ | ഒരുറുപ്പിക |
| 100 ഇന്നു മേൽ 1000-ം വരേ ഓരോ 100 ഇന്നോ അതിൽ വല്ല ഭാഗത്തിന്നോ . . . . . . . . . . . . | ഒരുറുപ്പിക |
| 100 ഇന്നു മേൽ ഓരോ 500 ഇന്നോ അതിൽ വല്ല ഭാഗത്തിന്നോ | അഞ്ചുറുപ്പിക |
| **32.** കൂട്ടകച്ചവട ആധാരം . . . . . . . . | പത്തുറുപ്പിക |
| **33.** കൂട്ടകച്ചവടപ്പിരിവാധാരം . . . . . . . | അഞ്ചുറുപ്പിക |
| **36.** ദാനപത്രം (ഒരു ധനനിശ്ചയാധാരമോ മരണശാസനമോ അല്ലാത്തത്) ആയാധാരത്തിൽ പറയുന്ന മുതലിന്റെ വിലെക്കു തുല്യമായ ഒരു പ്രതിഫലത്തിന്നുള്ള ഒരു കൈമാററാധാരത്തിന്നു വേണ്ടുന്ന. | [നമ്പർ നോക്കു) മുദ്രവില (21-ാം |
| **37.** ഭാഗപത്രം. ഭാഗിക്കുന്ന മുതലിന്റെ വിലയായി ആധാരത്തിൽ പറയുന്ന സംഖ്യെക്കുള്ള ഒരു കടംശീട്ടിന്നു വേണ്ടും . . . . . . . . . . . . | [നമ്പർ നോക്കു) മുദ്രവില (13-ാം |
| **39.** പാട്ടശ്ശീട്ടു. പാട്ടത്തിന്നു വിടുവാനുള്ള ഉടമ്പടി. | |
| (ഏ.) ആ പാട്ടശ്ശീട്ടിനാൽ പാട്ടം നിശ്ചയിച്ചിരിക്കുകയും സൌജന്യം ഒന്നും അടെച്ചിട്ടില്ലാതിരിക്കുകയും ചെയ്യുമ്പോൾ, പാട്ടശ്ശീട്ടു ഒരു കൊല്ലത്തിൽ കുറഞ്ഞ ഒരു കാലത്തേക്കായിരുന്നാൽ ആ പാട്ടശ്ശീട്ടു പ്രകാരം അടെക്കുകയോ കൊടുക്കുകയോ ചെയ്യേണ്ടുന്ന ഒട്ടുസംഖ്യെക്കുള്ള ഒരു കടംശീട്ടിന്നു വേണ്ടും . . | [നമ്പർ നോക്കു) മുദ്രവില (13-ാം |
| ഒരു കൊല്ലത്തിൽ കുറയാതേയും മൂന്നു കൊല്ലത്തിൽ അധികം അല്ലാതേയും ഇരുന്നാൽ ശരാശരി ഒരു കൊല്ലത്തേ പാട്ടസ്സംഖ്യെക്കുള്ള കടംശീട്ടിന്നു വേണ്ടും . . . . . . . . . . | [നമ്പർ നോക്കു) മുദ്രവില (13-ാം |
| മൂന്നു കൊല്ലത്തിൽ കവിയുമ്പോൾ, ശരാശരി ഒരു കൊല്ലത്തേ പാട്ടസ്സംഖ്യെക്കോ പാട്ടത്തിന്റെ വിലെക്കോ തുല്യമായ ഒരു പ്രതിഫലത്തിന്നുള്ള കൈമാററാധാരത്തിന്നു വേണ്ടും . . . . . | [നമ്പർ നോക്കു) മുദ്രവില (21-ാം |
| (ബി.) ആ പാട്ടശ്ശീട്ടിനാൽ പാട്ടം നിശ്ചയിച്ചിരിക്കുകയും സൌജന്യം അടെക്കുകയോ കൊടുക്കുകയോ ചെയ്കിട്ടില്ലാതിരിക്കുകയും ആ പാട്ടശ്ശീട്ടു ഇത്ര കാലത്തേക്കുള്ളതെന്നു പറയാതിരിക്കുകയും ചെയ്യുമ്പോൾ പാട്ടശ്ശീട്ടു പത്തു കൊല്ലത്തേക്കു നില്ക്കുന്ന പക്ഷം ആദ്യത്തേ പത്തു കൊല്ലത്തേക്കു ശരാശരി അടെപ്പാനുള്ള പാട്ടസ്സംഖ്യെക്കോ പാട്ടവിലെക്കോ തുല്യമായ ഒരു പ്രതിഫലത്തിന്നുള്ള കൈമാററാധാരത്തിന്നു വേണ്ടും . . . | [നമ്പർ നോക്കു) മുദ്രവില (21-ാം |
| (സി.) പാട്ടശ്ശീട്ടു ഒരു സൌജന്യമോ കൈക്കൂലിയോ വാങ്ങിക്കൊടുത്തതായിരിക്കുകയും പാട്ടം വെച്ചിട്ടില്ലാത്തതായിരിക്കുകയും ചെയ്യുമ്പോൾ പാട്ടശ്ശീട്ടിൽ പറയുന്ന പ്രകാരമുള്ള ആ സൌജന്യത്തിന്നോ കൈക്കൂലിക്കോ തുല്യമായ പ്രതിഫലത്തിന്നുള്ള ഒരു കൈമാററാധാരത്തിന്നു വേണ്ടും . . . . . | [നമ്പർ നോക്കു മുദ്രവില (21-ാം) |

| | |
|---|---|
| (ഡി.) നിശ്ചയിച്ച പാട്ടത്തിന്നു പുറമേ ഒരു സൌജന്യമോ കൈക്കൂലിയോ വാങ്ങി പാട്ടത്തിന്നു കൊടുത്തതായിരിക്കുമ്പോൾ, പാട്ടശ്ശീട്ടിൽ പറയുന്ന ആ കൈക്കൂലിയുടെയോ സൌജന്യത്തിൻെറയോ സംഖ്യെക്കോ വിലെക്കോ തുല്യമായ ഒരു പ്രതിഫലത്തിന്നുള്ള ഒരു കൈമാററാധാരത്തിന്നു (21-ാം നമ്പർ) വേണ്ടുന്ന മുദ്രവിലെക്കു പുറമേ കൈക്കൂലിയോ സൌജന്യമോ അടെച്ചിട്ടില്ലെങ്കിൽ ആ പാട്ടശ്ശീട്ടിന്മേൽ അടെക്കേണ്ടിയിരുന്ന . | മുദ്രവിലയും. |
| എന്നാൽ, പാട്ടത്തിന്നു വിടുവാനുള്ള ഒരു ഉടമ്പടിക്കു ഒരു പാട്ടശ്ശീട്ടിന്നു വേണ്ടുന്ന വിലപ്രകാരമുള്ള മുദ്ര പതിച്ചിരിക്കുകയും ആ ഉടമ്പടിപ്രകാരം ഒരു പാട്ടശ്ശീട്ടു പിന്നേ എഴുതിക്കൊടുക്കുകയും ചെയ്യുമ്പോൾ ആ പാട്ടശ്ശീട്ടിന്നു വേണ്ടുന്ന . . . . . . | [കവിയേണ്ടതല്ല മു. വി. 8ണയിൽ |
| **44. പണയാധാരം.** | |
| (ഏ.) എഴുതിക്കൊടുക്കുന്ന സമയം ആ ആധാരത്തിൽ അടങ്ങിയ മുതലോ മുതലിൽ വല്ല ഭാഗമോ പണയംവെക്കുന്നവൻ കയ്യശം കൊടുക്കുകയാകട്ടേ കൊടുക്കാമെന്നു ഒക്കുകയാകട്ടേ ചെയ്യുമ്പോൾ ആ ആധാരത്താൽ ഉറപ്പിക്കപ്പെട്ട സംഖ്യെക്കു തുല്യമായ ഒരു പ്രതിഫലത്തിന്നുള്ള ഒരു കൈമാററാധാരത്തിന്നു | [ണ്ടുന്ന മുദ്ര (നമ്പർ 21) വേ |
| (ബി.) എഴുതിക്കൊടുക്കുന്ന സമയം മേല്പറഞ്ഞ പോലെ കയ്യശം കൊടുക്കുകയാകട്ടേ കൊടുപ്പാൻ ഒക്കുകയാകട്ടേ ചെയ്യാത്തപ്പോൾ, ആയാധാരത്താൽ ഉറപ്പിക്കപ്പെട്ട സംഖ്യെക്കുള്ള ഒരു കടംശീട്ടിന്നു . . . . . . . . . . . | [ണ്ടുന്ന മുദ്ര (നമ്പർ 13) വേ |
| **50. മുക്ത്യാർനാമം (Power of Attorny.)** | |
| (ഏ.) ഒരു ഒററ ഇടവാടിനെ പററിയ ഒന്നോ അധികമോ ആധാരങ്ങൾ റജിസ്റ്ററാക്കുവാൻ ഹാജരാക്കേണ്ടതിന്നു മാത്രമായി എഴുതിക്കൊടുക്കുന്നതായാൽ . . . . . . . | എട്ടണ |
| (ബി.) (ഏ)യിൽ പറഞ്ഞതല്ലാത്ത ഒരു ഒററ ഇടവാടിൽ കാൎയ്യം നടത്തുവാൻ ഒന്നോ അധികമോ ആളുകളെ അധികാരപ്പെടുത്തുമ്പോൾ. . . . . . . . . . . . | ഒരുറുപ്പിക |
| (സി.) ഒന്നിലധികം ഇടവാടുകളിലോ സാധാരണയായോ കൂട്ടായിട്ടും വെവ്വേറെയും പ്രവൃത്തിപ്പാൻ അഞ്ചിലധികമല്ലാതുള്ള ആളുകളെ അധികാരപ്പെടുത്തുമ്പോൾ . . . . . | അഞ്ചുറുപ്പിക |
| (ഡി.) അഞ്ചിലധികവും എന്നാൽ പത്തിലധികവുമല്ലാതേയും ആളുകളെ ഒന്നിലധികം ഇടവാടുകളിലോ സാധാരണയായിട്ടോ കൂട്ടായിട്ടെങ്കിലും വെവ്വേറെ എങ്കിലും പ്രവൃത്തിപ്പാൻ അധികാരപ്പെടുത്തുമ്പോൾ . . . . . . . . . | പത്തുറുപ്പിക |
| (ഇ.) മററുവല്ല സംഗതിയിലും, അധികാരപ്പെട്ട ഓരോ ആൾക്കു. | ഓരോ ഉറുപ്പിക |
| **59. ഒഴിമുറിപ്പാട്ടച്ചാർത്തിൻെറ** | |
| (ഏ.) പാട്ടശ്ശീട്ടിന്നു ചുമത്തേണ്ടുന്ന മുദ്രവില അഞ്ചുറുപ്പികയിൽ കവിയാത്തപ്പോൾ, ആ പാട്ടശ്ശീട്ടിന്നു ചുമത്തേണ്ടുന്ന മുദ്രവില. | |
| (ബി.) മററു യാതൊരു സംഗതിയിലും. . . . . . . | അഞ്ചുറുപ്പിക |
| **60. കൈമാററത്തീർ.** | |
| (ഏ.) ഒരു സംഘത്തിലെയോ സമൂഹത്തിലെയോ ഓഹരികളുടെ<br>(ബി.) ഒരു കടംശീട്ടിനാലോ പാട്ടശ്ശീട്ടിനാലോ പണയാധാരത്താലോ രക്ഷാഭോഗ ഉടമ്പടിയാലോ ഉറപ്പിക്കപ്പെട്ട വല്ല അവകാശത്തിൻെറയും . . . . . . . . . | 21-ാംനമ്പർ കൈമാററാധാരത്തിന്നു വേണ്ടമുദ്രയിൽ നാലിൽ ഒന്നു |

| | |
|---|---|
| 1. ആ കടംശീട്ടിന്നോ പാട്ടശ്ശീട്ടിന്നോ പണയാധാരത്തിന്നോ ഉടമ്പടിക്കോ വേണ്ടും മുദ്രവില അഞ്ചുറുപ്പികയിൽ കവിയാത്ത പക്ഷം, ആ കടംശീട്ടിന്മേലോ പാട്ടശ്ശീട്ടിന്മേലോ പണയാധാരത്തിന്മേലോ രക്ഷാഭോഗ ഉടമ്പടിയിന്മേലോ ചുമത്തേണ്ടുന്ന മുദ്രവില . | |
| 2. മററു യാതൊരു സംഗതിയിലും . . . . . . | അഞ്ചുറുപ്പിക |
| (സി.) 1874 ഇലേ അഡ്മിനിസ്ത്രേററർ ജനരലിൻെറ ആക്ട് 31-ാംവകുപ്പുപ്രകാരം വല്ല മുതലിൻെറയും . . . . . . | പത്തുറുപ്പിക |
| (ഡി.) ത്രസ്റ്റ് വക വല്ല മുതലിൻെറയും, ഒരു ത്രസ്റ്റിയിൽനിന്നു മറെറാരു ത്രസ്റ്റിക്കു പ്രതിഫലം കൂടാതെ . . . . . | അഞ്ചുറുപ്പിക |

## ൧൮൭൦ ഇലേ ൭-ാം നമ്പർ കോർട്ട്ഫീസ് ആക്ട്

### വ്യവഹാരങ്ങൾ ബോധിപ്പിക്കുമ്പോൾ വസൂലാക്കേണ്ടുന്ന സലയുടെ അവസ്ഥപോലേയുള്ള ഫീസിൻെറ നറക്കുവിവരം.

| വസ്തുവിൻെറ സംഖ്യയോ വിലയോ താഴെ കാണിച്ചതിൽ കവിയുകയും | ച്ചതിന്നു താഴെ കാണിച്ചതിൽ കവിയാതിരിക്കയും ചെയ്യുമ്പോൾ | ശരിയായ ഫീസ്സ് | | | വസ്തുവിൻെറ സംഖ്യയോ വിലയോ താഴെ കാണിച്ചതിൽ കവിയുകയും | ച്ചതിന്നു താഴെ കാണിച്ചതിൽ കവിയാതിരിക്കയും ചെയ്യുമ്പോൾ | ശരിയായ ഫീസ്സ് | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ക. | ക. | ക. | ണ. | പൈ. | ക. | ക. | ക. | ണ. | പൈ. |
| ൦ | ൫ | ൦ | ൬ | ൦ | ൭൫ | ൮൦ | ൬ | ൦ | ൦ |
| ൫ | ൧൦ | ൦ | ൧൨ | ൦ | ൮൦ | ൮൫ | ൬ | ൬ | ൦ |
| ൧൦ | ൧൫ | ൧ | ൨ | ൦ | ൮൫ | ൯൦ | ൬ | ൧൨ | ൦ |
| ൧൫ | ൨൦ | ൧ | ൮ | ൦ | ൯൦ | ൯൫ | ൭ | ൨ | ൦ |
| ൨൦ | ൨൫ | ൧ | ൧൪ | ൦ | ൯൫ | ൧൦൦ | ൭ | ൮ | ൦ |
| ൨൫ | ൩൦ | ൨ | ൪ | ൦ | ൧൦൦ | ൧൧൦ | ൮ | ൪ | ൦ |
| ൩൦ | ൩൫ | ൨ | ൧൦ | ൦ | ൧൧൦ | ൧൨൦ | ൯ | ൦ | ൦ |
| ൩൫ | ൪൦ | ൩ | ൦ | ൦ | ൧൨൦ | ൧൩൦ | ൯ | ൧൨ | ൦ |
| ൪൦ | ൪൫ | ൩ | ൬ | ൦ | ൧൩൦ | ൧൪൦ | ൧൦ | ൮ | ൦ |
| ൪൫ | ൫൦ | ൩ | ൧൨ | ൦ | ൧൪൦ | ൧൫൦ | ൧൧ | ൪ | ൦ |
| ൫൦ | ൫൫ | ൪ | ൨ | ൦ | ൧൫൦ | ൧൬൦ | ൧൨ | ൦ | ൦ |
| ൫൫ | ൬൦ | ൪ | ൮ | ൦ | ൧൬൦ | ൧൭൦ | ൧൨ | ൧൨ | ൦ |
| ൬൦ | ൬൫ | ൪ | ൧൪ | ൦ | ൧൭൦ | ൧൮൦ | ൧൩ | ൮ | ൦ |
| ൬൫ | ൭൦ | ൫ | ൪ | ൦ | ൧൮൦ | ൧൯൦ | ൧൪ | ൪ | ൦ |
| ൭൦ | ൭൫ | ൫ | ൧൦ | ൦ | ൧൯൦ | ൨൦൦ | ൧൫ | ൦ | ൦ |

ശേഷം നൂററിന്നു ൭॥ വീതം തന്നേ.

## ൧-ാം പട്ടിക. പുകവണ്ടി.

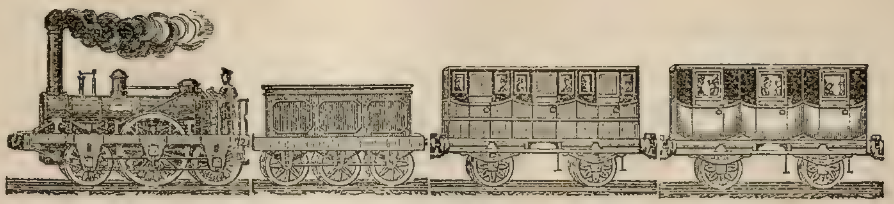

### വേപ്പൂർ തൊട്ടു ചെന്നപട്ടണംവരെക്കും "തെക്കു പടിഞ്ഞാററൻ"

| മൈല്സ് വേപ്പൂരിൽ നിന്നു | പുകവണ്ടി സ്ഥാനങ്ങൾ | നാൾതോറും ൧, ൨, ൩ തരം തപ്പാൽ | ഞായറാഴ്ച ഒഴിച്ചു ൧, ൨, ൩ തരം | ഞായറാഴ്ച ഒഴിച്ചു ൩ തരം | നാൾതോറും ൧, ൨, ൩ തരം തപ്പാൽ | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | ഉ. മു. | | | | |
| | വേപ്പൂർ . . . പു. | 8 0 | — | — | — | |
| $8\frac{3}{4}$ | പരപ്പനങ്ങാടി . | 8 28 | — | — | — | |
| $13\frac{3}{4}$ | താന്നിയൂർ . . . . | 8 46 | — | — | — | |
| $18\frac{3}{4}$ | തിരൂർ . . . . . . | 9 14 | — | — | — | |
| 28 | കററിപ്പുറം . . . | 9 42 | — | — | — | |
| $39\frac{1}{2}$ | പട്ടാമ്പി . . . . . | 10 15 | — | — | — | |
| $46\frac{3}{4}$ | ചൊറുവണ്ണൂർ . . | 10 54 | — | — | — | |
| $54\frac{3}{4}$ | ഒററപ്പാലം . . . | 11 24 | — | — | — | |
| $59\frac{1}{4}$ | ലക്കടി . . . . . . | 11 41 | — | — | — | |
| $68\frac{1}{2}$ | പറളി . . . . . . | 12*12 | — | — | — | |
| $74\frac{1}{2}$ | പാലക്കാട്ടു . . വ. | 12 29 | — | — | — | |
| | പു. | 1 0 | — | — | — | |
| $82\frac{3}{4}$ | കാഞ്ഞിരോട്ടു* . . | 1 30 | — | — | — | |
| $89\frac{3}{4}$ | വാളയാറു . . . . | 2 0 | — | — | — | |
| $98\frac{1}{4}$ | മടിക്കരൈ . . . | 2 45 | — | — | — | |
| $104\frac{1}{2}$ | പോത്തനൂർ വ. | 3 0 | — | — | — | |
| നീലഗിരിയിലേക്കു | | | | | | ഉ. തി. |
| | പോത്തനൂർ . . | ഉ. മു. | ഉ. മു. | ഉ. മു. | ഉ. തി. | ൧, ൨, ൩ |
| | ഏപ്പു . . . . . പു. | 3 23 | 8 5 | 9 29 | 3 30 | 5 * 55 |
| | കോയമ്പത്തൂർ . | 3 42 | 8 20 | 9 43 | 3 45 | 6 10 |
| | മേട്ടുപാളയം വ. | 5 0 | — | 11 0 | — | — |
| നീലഗിരിയിൽനിന്നു | | ഉ. മു. | | ഉ. തി. | | ഉ. തി. |
| | മേട്ടുപാളയം പു. | — | ഉ. മു. | 1*30 | ഉ. തി. | 8 45 |
| | കോയമ്പത്തൂർ . | 6 40 | 8 50 | 2 48 | 4 0 | 10 20 |
| | പോത്തനൂർ . . | | | | | |
| | ഏപ്പു . . . . . വ. | 6 58 | 9 3 | 3 0 | 4 18 | 10 33 |

—— = വണ്ടിയെ നിൎത്തുന്നില്ല.

———— = വണ്ടി താമസിക്കുന്നു.

വ. = വണ്ടി വരവു.

പു. = വണ്ടി പുറപ്പാടു.

ഉ. മു.= ഉച്ചെക്കു മുമ്പേ. (†)

ഉ. തി. = ഉച്ച തിരിഞ്ഞിട്ടു. (*)

(* തമിഴിൽ കാഞ്ചിക്കോട്ടു.)

മനുഷ്യന്റെ അവസ്ഥയോ, അവന്റെ ദിവസങ്ങൾ പുല്ലുപോലെ ആകുന്നു; ൧൰ വയലിലെ പുഷ്പം പോലെ അവൻ പൂക്കുന്നു. സങ്കീ. ൱൩, ൰൫.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | പോത്തനൂർ .. | ഉ. തി. | ഉ. തി. | ഉ. മു. | | |
| | ഏല്പു .....പു. | 3 20 | 10 48 | 7 15 | — | († അവനാശി.) |
| $120\frac{1}{4}$ | സോമനൂർ ... | 4 14 | 11 58 | 8 33 | — | |
| $131\frac{1}{4}$ | തിരുപ്പൂർ†.... | 4 46 | 12 54 | 9 43 | — | |

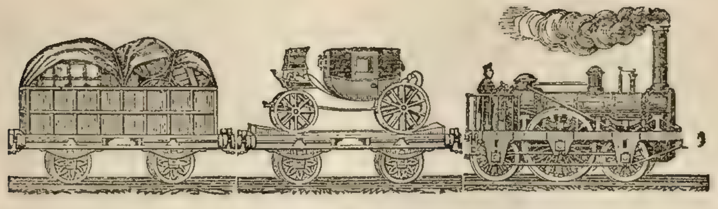

ഇരിമ്പു പാതയിൽ കൂടിയ പുകവണ്ടിവലികൾ കിഴക്കോട്ടു പോയാൽ.

| മൈല്സ് വേപ്പൂരിൽ നിന്നു | പുകവണ്ടി സ്ഥാനങ്ങൾ | നാൾതോറും: ൧, ൨, ൩ തരം തപ്പാൽ | ഞായറാഴ്ച ഒഴിച്ചു: ൧, ൨, ൩ തരം | ഞായറാഴ്ച ഒഴിച്ചു: ൩ തരം |
|---|---|---|---|---|
| $139\frac{3}{4}$ | ഊത്തുകളി ... | 5 13 | 1 29 | 10 19 |
| 154 | പെറന്തുറി.... | 5 50 | 2 17 | 11 10 |
| $163\frac{1}{4}$ | ഈരോട്ട ..വ. | 6 12 | 2 46 | 11 40 |
| | | ഉ. മു. | | |
| | ഈരോട്ട ..പു. | 6 40 | — | — |
| | തിരുച്ചിറാപ്പള്ളി | 11 30 | — | — |
| | നാഗപട്ടണം വ. | 8 25 | — | — |
| | | ഉ. തി. | | |
| | ഈരോട്ട....പു. | 6 27 | 3 6 | 12 30 |
| $199\frac{1}{2}$ | ചേലം ....വ. | 8 7 | 5 42 | 2 51 |
| | പു. | 8 40 | 6 27 | — |
| | ചോലാപ്പേട്ട... | | ഉ. തി. | |
| $274\frac{1}{4}$ | ഏല്പു .....വ. | 12 22 | 12 5 | — |
| | ചോലാപ്പേട്ട പു. | 1† 10 | — | 2*30 |
| 359 | ബെങ്കളൂർ...വ. | 7 0 | — | 8 5 |
| | ചോലാപ്പേട്ട | ഉ. മു. | | |
| | ഏല്പു .....പു. | 12 42 | 12 31 | — |
| $325\frac{3}{4}$ | വേലൂർ....വ. | 3 0 | 2 54 | — |
| | പു. | 3 10 | 3 4 | — |
| 341 | ആർക്കാട്ട ..... | 3 56 | 3 47 | — |
| | അറകോണം .. | | | |
| $363\frac{3}{4}$ | ഏല്പു .....വ. | 4 53 | 4 46 | — |

*ഉ. തി.

 സകല ജഡവും പുല്ലു പോലെയും അതിൻ മഹിമ എല്ലാം പുല്ലിൻ പൂ പോലെയും ആകുന്നു. ൧ പത്രൊസ് ൧, ൨൪.

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | അറകോണം പു. | 9 †45 | 6 *56 | — | †ഉ. മു. |
| 625¾ | ബല്ലാരി . . . വ. | 6 †52 | 10 †20 | — | |
| 670¼ | രായിച്ചൂർ . . വ. | 9 *55 | 11 †30 | — | |
| | അറകോണം | ഉ. മു. | ഉ. തി. | ഉ. മു. | |
| | ഏത്തു . . . . . പു. | 5 5 | 4 *54 | 6 30 | |
| 406¼ | ചെന്നപട്ടണം . | 7 0 | 7 25 | 9 45 | |
| | രായപുരം . . . . | 7 13 | 7 38 | 9 50 | |

* ഉ. തി.

# ൨-ാം പട്ടിക.

## പോത്തനൂരിൽനിന്നു വേപ്പൂരോളം പടിഞ്ഞാറോട്ടുള്ള പുകവണ്ടിവഴികൾ.

| ചെന്നപട്ടണത്തിൽനിന്നുള്ള ദൂരം. അംഗ്ലനാഴിക | പുകവണ്ടിസ്ഥാനങ്ങൾ | നാൾതോറും ൧, ൨, ൩ തരവും തപ്പാലും |
|---|---|---|
| | | ഉ. മു. |
| 301¾ | പോത്തനൂർ . . . . . . . . പു. | 9 40 |
| 308 | മടിക്കരൈ . . . . . . . . | 10 0 |
| 316½ | വാളയാറു . . . . . . . . | 10 36 |
| 323½ | കാഞ്ഞിരോട്ട (കാഞ്ചിക്കോട്ട) . . . | 11 6 |
| 332 | പാലക്കാട്ട . . . . . . . . വ. | 11 25 |
| | പു. | 12 45 |
| 337¾ | പറളി . . . . . . . . . | 12 * 7 |
| 347 | ലക്കടി . . . . . . . . . | 12 37 |
| 351½ | ഒററപ്പാലം . . . . . . . . | 1 1 |
| 359½ | ചെറുവണ്ണൂർ . . . . . . . . | 1 43 |
| 366¾ | പട്ടാമ്പി . . . . . . . . | 2 6 |
| 378¼ | കററിപ്പുറം . . . . . . . . | 2 39 |
| 387½ | തിരൂർ . . . . . . . . | 3 9 |
| 392½ | താന്നിയൂർ . . . . . . . . | 3 27 |
| 397½ | പരപ്പനങ്ങാടി . . . . . . . | 3 46 |
| 406¼ | വേപ്പൂർ . . . . . . . . | 4 10 |

കൎത്താവിൻ വചനമോ, എന്നേക്കും നിലനില്ക്കുന്നു; ആയതു നിങ്ങളോടു സുവി
അറിയിച്ച സുവിശേഷവചനം തന്നേ. ൧ പത്രൊസ് ൧, ൨൫.

*ഉ. തി. †ഉ. മു.

## ൯-ാം പട്ടിക.

### "വടക്കെ പടിഞ്ഞാററൻ" അഥവാ രായിച്ചൂർ ചിനപ്പാത വേപ്പൂരിൽനിന്നും മററും പുറപ്പെട്ടാൽ.

| വേപ്പൂരിൽ നിന്നുള്ള ദൂരം. | പുകവണ്ടിസ്ഥാനങ്ങൾ: തിരുത്തണി, നകരി, പട്ടൂർ, പൂടി, തിരുപ്പതി, കൂട്ടൂർ, രെട്ടിപ്പള്ളി, രാജപ്പേട്ട, ഞാണലൂർ, ഒൻറിമെത്ത, കടപ്പ, കമലപ്പൂർ, ഏറക്കുന്നല, മൂത്തനൂർ മുതലായവ. | നാൽതോറും. | | |
|---|---|---|---|---|
| | | ൧, ൨, ൩ തരവും തപ്പാലും | ൧, ൨, ൩ തരം | ൧, ൨, ൩ തരം |
| | | ഉ. മു. | ഉ. തി. | ഉ. മു. |
| 363¾ | അറകോണം . . . . പു. | 9 45 | 7 30 | — |
| 405 | തിരുപ്പതി . . . . . പു. | 12*42 | 9 36 | — |
| 482¾ | കടപ്പ . . . . . വ. | 5*35 | 1†39 | പു. 6 50 |
| 431¼ | ഗുഡി . . . . . . പു. | — | 6 55 | 2*50 |
| 594¾ | ഗുണ്ടകല്ല . . . . . പു. | — | 7 39 | 3 50 |
| 671¾ | രായിച്ചൂർ . . . . . പു. | — | 11*30 | 9 55 |
| 746¼ | ഷാഹാബാദ് . . . . പു. | — | 2†20 | — |
| 996¼ | പൂണാ . . . . . . പു. | — | 5 15 | — |
| 1082¼ | കല്യാണ . . . . . പു. | — | 9 58 | — |
| 1115¼ | ബൊംബായി . . . . വ. | — | 11 15 | — |

† ഉ. മു. * ഉ. തി.

## ൰-ാം പട്ടിക.

### "തെക്കുള്ള" ചിനപ്പാത ഈരോട്ടിൽനിന്നു തെക്കോട്ടു പോയാൽ.

| ഈരോട്ടിൽ നിന്നുള്ള ദൂരം മൈല്സ്. | പുകവണ്ടിസ്ഥാനങ്ങൾ. | നാൽതോറും ൧, ൨, ൩ തരവും തപ്പാലും. | |
|---|---|---|---|
| | ഈരോട്ടു . . . . . . . പു. | 6†40 | — |
| 42 | കാരൂർ . . . . . . . | 9 0 | — |
| 89¼ | തിരുച്ചിറാപ്പള്ളി (ഏപ്പു) . . | 11 40 | — |
| | തിരുച്ചിറാപ്പള്ളിയിൽനിന്നുള്ള ചിനപ്പാത . . . . . . പു. | 12 15 | — |
| 146¾ | തിണ്ടിക്കല്ല . . . . . | 4*47 | — |
| 176¼ | മധുര . . . . . . . | 17 45 | 5†20 |
| 265¾ | മണിയാച്ചി (ഏപ്പു) . . . | — | 10 37 |
| | മണിയാച്ചിയിൽനിന്നു 2 ചിനപ്പാത | 2*8 | 10 37 |
| 1. 284 | തിരുനെൽവേലിയോളം . . . . | — | 12 5 |
| 2. 283¾ | തൂത്തുക്കുടിയോളം . . . . . | — | 11 55 |

൭൮ ഹേ, ദാഹിക്കുന്ന ഓരോരുത്തനേ, വെള്ളങ്ങളുടെ അടുക്കൽ വരുവിൻ, ദ്രവ്യമില്ലാത്തവനും കൂടെ; നിങ്ങൾ വന്നു വാങ്ങി ഭക്ഷിപ്പിൻ. ഏശാ. ൫൫, ൧.

| | | | |
|---|---|---|---|
| | തിരുച്ചിറാപ്പള്ളിയിൽനിന്നു നാഗപട്ടണത്തോളം . . . . | | |
| | തിരുച്ചിറാപ്പള്ളി . . . . . പു. | 12†15 | |
| 120¼ | തഞ്ചാവൂർ (എത്തു) . . . . . | 4*35 | |
| 168½ | നാഗപട്ടണം . . . . . . | 8†25 | |

## ൭-ാം പട്ടിക.

വേപ്പൂർ തൊട്ടു ചെന്നപട്ടണം വരെക്കും

അതാതു തീവണ്ടിസ്ഥാനത്തോളം ഉള്ള കേവുകൾ.

| | ൧ തരം | | | | ൨ തരം | | | | ൩ തരം | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ഒരു പോക്കിന്നു | | പോയ്വരുന്നതിന്നു | | ഒരു പോക്കിന്നു | | പോയ്വരുന്നതിന്നു | | ഒരു പോക്കിന്നു | | | പോയ്വരുന്നതിന്നു | | |
| | ക. | ണ. | ക. | ണ. | ക. | ണ. | ക. | ണ. | ക. | ണ. | പ. | ക. | ണ. | പ. |
| പരപ്പനങ്ങാടി . . | 0 | 14 | 1 | 8 | 0 | 5 | 0 | 8 | 0 | 1 | 6 | 0 | 2 | 3 |
| താന്നിയൂർ . . . . . | 1 | 0 | 1 | 8 | 0 | 8 | 0 | 12 | 0 | 2 | 4 | 0 | 3 | 6 |
| തിരൂർ . . . . . . . | 2 | 0 | 3 | 0 | 0 | 11 | 1 | 0 | 0 | 3 | 2 | 0 | 4 | 9 |
| കററിപ്പുറം . . . . . | 3 | 0 | 5 | 0 | 1 | 0 | 1 | 8 | 0 | 4 | 8 | 0 | 7 | 0 |
| പട്ടാമ്പി . . . . . . | 4 | 0 | 6 | 0 | 1 | 0 | 1 | 8 | 0 | 6 | 8 | 0 | 10 | 0 |
| ചെറുവണ്ണൂർ . . . . | 4 | 0 | 6 | 0 | 2 | 0 | 3 | 0 | 0 | 7 | 10 | 0 | 11 | 9 |
| ഒററപ്പാലം . . . . . | 5 | 0 | 8 | 0 | 2 | 0 | 3 | 0 | 0 | 9 | 2 | 0 | 13 | 9 |
| ലക്കടി . . . . . . . | 6 | 0 | 9 | 0 | 2 | 0 | 3 | 0 | 0 | 10 | 0 | 0 | 15 | 0 |
| പറളി . . . . . . . | 7 | 0 | 11 | 0 | 3 | 0 | 5 | 0 | 0 | 11 | 6 | 1 | 1 | 3 |
| പാലക്കാടു . . . . . | 7 | 0 | 11 | 0 | 3 | 0 | 5 | 0 | 0 | 12 | 4 | 1 | 2 | 6 |
| കാഞ്ഞിരോടു. . . | 8 | 0 | 12 | 0 | 3 | 0 | 5 | 0 | 0 | 13 | 10 | 1 | 4 | 9 |
| വാളയാറു . . . . . . | 8 | 0 | 12 | 0 | 3 | 0 | 5 | 0 | 0 | 15 | 0 | 1 | 6 | 6 |
| മടിക്കരൈ . . . . . | 9 | 0 | 14 | 0 | 4 | 0 | 6 | 0 | 1 | 0 | 6 | 1 | 8 | 9 |
| പോത്തനൂർ . . . . | 10 | 0 | 15 | 0 | 4 | 0 | 6 | 0 | 1 | 1 | 6 | 1 | 10 | 3 |
| കോയമ്പത്തൂർ. . . | 10 | 0 | 15 | 0 | 4 | 0 | 6 | 0 | 1 | 2 | 0 | 1 | 11 | 0 |
| മേട്ടുപാളയം. . . . | 12 | 0 | 18 | 0 | 5 | 0 | 8 | 0 | 1 | 5 | 8 | 2 | 0 | 6 |
| സോമനൂർ . . . . . | 11 | 0 | 17 | 0 | 4 | 0 | 6 | 0 | 1 | 4 | 2 | 1 | 14 | 3 |
| തിരുപ്പൂർ. . . . . . | 12 | 0 | 18 | 0 | 5 | 0 | 8 | 0 | 1 | 6 | 0 | 2 | 1 | 0 |
| ഊത്തുകളി . . . . . | 13 | 0 | 20 | 0 | 5 | 0 | 8 | 0 | 1 | 7 | 4 | 2 | 3 | 0 |
| പെറന്തുറി . . . . . | 14 | 0 | 21 | 0 | 6 | 0 | 9 | 0 | 1 | 9 | 8 | 2 | 6 | 6 |
| ഠരംരോടു . . . . . . | 15 | 0 | 23 | 0 | 6 | 0 | 9 | 0 | 1 | 11 | 2 | 2 | 8 | 9 |
| ചേലം . . . . . . . . | 19 | 0 | 29 | 0 | 7 | 0 | 11 | 0 | 2 | 1 | 4 | 3 | 2 | 0 |
| ചോലാപ്പേട്ട . . . . | 26 | 0 | 39 | 0 | 10 | 0 | 15 | 0 | 2 | 13 | 10 | 4 | 4 | 9 |
| വെങ്കളൂർ . . . . . . | 34 | 0 | 51 | 0 | 13 | 0 | 20 | 0 | 3 | 12 | 4 | 5 | 10 | 6 |
| വേലൂർ . . . . . . . | 31 | 0 | 47 | 0 | 12 | 0 | 18 | 0 | 3 | 6 | 4 | 5 | 1 | 6 |
| ആക്കാടു . . . . . . | 32 | 0 | 48 | 0 | 12 | 0 | 18 | 0 | 3 | 8 | 10 | 5 | 5 | 3 |
| അറകോണം. . . . | 34 | 0 | 51 | 0 | 13 | 0 | 20 | 0 | 3 | 12 | 8 | 5 | 11 | 0 |
| ചെന്നപട്ടണം. . . | 38 | 0 | 57 | 0 | 15 | 0 | 23 | 0 | 4 | 3 | 10 | 6 | 5 | 9 |

## മലയാളജില്ലയിലെ

# സൎക്കാരുദ്യോഗസ്ഥന്മാരുടെ പട്ടിക.

(Corrected up to 1st July 1884.)

## I. മലയാളംജില്ല.

### 1. റവന്യുഡിപ്പാൎട്ട്മെണ്ട്.

കലക്ടരും മജിസ്ട്രേററും മയ്യഴി എന്ന പരന്ത്രീസ്സ് രാജ്യത്തേക്കു പൊലിത്തിക്കൽ ഏജന്തും
സി. ഏ. ഗാല്ടൻസായ്പ് C. A. Galton Esq. M. A., C. S. (Ag.)

സബ് കലക്ടരും ജൊയിണ്ട് മജിസ്ട്രേററും (തലശ്ശേരി)
എച്ച്. ജെ. റോസ്സ് സായ്പ് H. J. Ross Esq., M. A., C. S.

ഹെഡ് അസിസ്റ്റാണ്ട് കലക്ടരും മജിസ്ട്രേററും (പാലക്കാട്ടു)
വി. എ. ബ്രൊഡിസായ്പ് V. A. Brodie Esq., C. S.

സ്പെഷ്യാൽ അസിസ്റ്റാണ്ട് കലക്ടരും മജിസ്ട്രേററും (മലപ്പുറം)
എ. സി ത്വിഗ് സായ്പ് Twigg Esq., C. S.

ടെമ്പററി ഡിപ്യൂട്ടി കലക്ടരും മജിസ്ട്രേററും (കോഴിക്കോട്ടു)
ബ. എം. ഡിക്രൂസ്സ് സായ്പ് B. M. D'cruz Esq.

ഡിപ്യൂട്ടികലക്ടരും മജിസ്ട്രേററും (വയനാട്ടു)
ഡബ്ലിയു. ഇ. അണ്ടർവുഡ് സായ്പ് W. E. Underwood Esq.

ഖജാന ഡിപ്യൂട്ടികലക്ടർ (കോഴിക്കോട്ടു)
ബി. സി. ലെഗെററ് സായ്പ് B. C. Leggatt Esq.

കണ്ടർമെണ്ട് മജിസ്ട്രേററ് (കണ്ണൂർ)
കപ്തൻ ആർ. എസ്. ശെഫില്ഡ് *Capt.* R. S. Sheffield.

സബ് ജഡ്ജിയും ഡിപ്യൂട്ടി മജിസ്ട്രേററും (കൊച്ചി)
മ. രാ. രാ. എച്ച്. സുബ്രായരവൎകൾ *M. R. Ry.* H. Subrayar Avargal.

ഡിപ്യൂട്ടികലക്ടർ (പൊന്നാനി) { മ. രാ. രാ. ഡി. കുഞ്ഞിക്കണ്ണൻ അവൎകൾ (അ).
*M. R. Ry.* C. Kunni Kannan Avargal.

ശിരസ്തെദാർ—മ. രാ. രാ. വെങ്കടപ്പതി നായഡു അവൎകൾ (അ.)
ഹെഡ് ക്ലാൎക്ക്—മ. ര. ര. വി. ചാപ്പുമേനോൻ ബി. എ. (അ).
ത്രാൻസ്ലേററർ—മൂളിയിൽ രാമൻ.
ഹെഡ് മുൻഷി—എസ്സ്. അനന്തപ്പട്ടർ (അ).
മജിസ്ത്രീരിയൽ മുൻഷി—ചൈയ്യയി കൃഷ്ണൻ (അ).
ഹെഡ് എക്കൌണ്ടന്ത്—വെങ്കടേശ്വര അയ്യൻ.
വെൎണ്ണാക്യുലർ ഹെഡ് എക്കൌണ്ടന്ത്—ബി. കൃഷ്ണമേനോൻ.
അച്ചുക്കൂടം സുപ്രഡെണ്ട്—അൻഡർസൻ.
ഖജാൻജി—മിസ്റ്റർ ജെ. റൊസെറിയൊ.
കരൻസി കാഷ്യർ—എൽ. എ. കൃഷ്ണയ്യൻ.

## 2. താലൂക് ഉദ്യോഗസ്ഥന്മാർ.

### a. ചിറക്കൽ.

താസിൽദാർ— അണ്ണാസ്വാമി അയ്യർ.
ശിരസ്തെദാർ—പി. സി. രാമസ്വാമി അയ്യർ, ബി. എ.
ടൌൻ സബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—കെ. മന്ദൻ
തളിപ്പറമ്പ സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—കെ. രാമുണ്ണി മേനോൻ

### b. കോട്ടയം.

താസിൽദാർ—കെ. അമ്മാനത്ത്. ശിരസ്തെദാർ—എം. ചന്തു.
കുത്തുപറമ്പ സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—ടി. അപ്പാത്തരപട്ടർ.

### c. കുറുമ്പ്രനാട്ടു.

താസിൽദാർ—ഒയററിരാമൻ.
ശിരസ്തെദാർ ശങ്കരമേനോൻ.
കോവില്ക്കണ്ടി സബ് മജിസ്ത്രേറ്റ് പി·—ഗോവിന്ദൻ (അ).

### d. വയനാട്ടു.

താസിൽദാർ—അ. ചാത്തു.
ശിരസ്തെദാർ—എരെശ്ശമേനോൻ.
വൈത്തിരി സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—രാമചന്ദ്ര അയ്യർ

### e. കോഴിക്കോട്ടു.

താസിൽദാർ—മിസ്റ്റർ ജെ. എച്ച്. ഗ്വീൻ (അ.) ശിരസ്തെദാർ—പി. രാമമേനോൻ.
ടൌൻ സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ് — കരുണാകരൻ.

### f. ഏറനാട്ടു.

താസിൽദാർ—കെ. രാമുണ്ണി. ശിരസ്തെദാർ ഉപ്പോട്ടുരാമൻ.
തിരൂരങ്ങാടി സബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—ടി. ഗോവിന്ദൻ (അ).

### g. വള്ളുവനാട്ടു.

താസിൽദാർ—ടി. കുഞ്ഞമ്പു. ശിരസ്തെദാർ—കഞ്ഞികുട്ടൻ നമ്പ്യാർ.
ചെറുപ്പുള്ളശ്ശേരി സബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—ടി. ശങ്കുണ്ണിമേനോൻ. ബി. എ.

### h. പാലക്കാട്ടു.

താസിൽദാർ—പി. രാമയ്യൻ (അ).
ശിരസ്തെദാർ—കെ. ബി. ചാപ്പുണ്ണിനായർ.
ആലത്തൂർ സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—പി. കൃഷ്ണമേനോൻ.

### i. പൊന്നാനി.

താസിൽദാർ—കെ. ശങ്കരമേനോൻ.
ശിരസ്തെദാർ—എം. കോന്തിമേനോൻ.
വെട്ടത്ത് പുതിയങ്ങാടി സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—കോട്ടായിരാമൻ.
ചാവക്കാട്ടു സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—കെ. സ്വാമിനാഥയ്യർ.

### j. കൊച്ചി.

ശിരസ്തെദാർ—ജെ. എച്ച്. ബോയർ.
അഞ്ചിങ്കൽ സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—ഡി. കുറിയൻ.
തങ്കശ്ശേരി സബ്ബ് മജിസ്ത്രേറ്റ്—ബബ്ബ്യോസ.

## II. ജ്യുഡിഷ്യൽ ഡിപ്പാൎട്ടമെണ്ട്.

### 1. തെക്കേ മലയാളം.

ഡിസ്ത്രിക്ട് സെഷ്യൻജഡ്ജി (കോഴിക്കോട്ടു)
ഫ്രങ്ക് വില്ക്കിൻസൻസായ്പ് Frank wilkinson Esq., C. S.
ശിരസ്തെദാർ—എം, വൈത്തിമേനോൻ.
സബ്ബ് ജഡ്ജി—മ. രാ. രാ. ഇ. കെ. കൃഷ്ണൻ. ബി. എൽ.
ശിരസ്തെദാർ—കെ. കരുണാകരൻ നായർ.
പാലക്കാട്ടു സബ്ബ് ജഡ്ജി—വി. വി. രുസാറിയോ.
ശിരസ്തെദാർ—മാത്തു.
കൊച്ചിസബ്ബ് ജഡ്ജി—മ. രാ. രാ. എച്ച് സുബ്രായർ.
ശിരസ്തെദാർ—ജെ. എച്ച്. ബോയർ.

### 2. വടക്കേ മലയാളം.

ഡിസ്ത്രിക്ട് സെഷ്യൻജഡ്ജി (തലശ്ശേരി)
റീഡ് സായ്പ് Reid Esq., C. S.
ശിരസ്തെദാർ—മ. കേളപ്പൻ.
സബ്ബ് ജഡ്ജി—സി. രാമചന്ദ്ര അയ്യർ.
ശിരസ്തെദാർ—ജി· ലെപ്ലോട്ട്.

### 3. ഡിസ്ത്രിക്ട്മുൻസീപ്പുമാർ.

#### a. തെക്കേ മലയാളം.

ഒ. ചന്തുമേനോൻ ആ—കോഴിക്കോട്ടു.
പി. ഗോവിന്ദമേനോൻ—ഏൎണ്ണാട്ടു.
സി. ഗോപാലനായർ—ചേറനാട്ടു.
എൻ. സൎവ്വോത്തമരാവു, ബി. ഏ., ബി. എൽ.—പാലക്കാട്ടു.
(അ.) റൊസാറിയോ—പൊന്നാനി.
എസ്. സുബ്രഹ്മണ്യ അയ്യൻ—ചാവക്കാട്ടു.
യു. അച്യുതൻ നായർ—വെട്ടത്തുനാട്ടു.
വി. രാമശാസ്ത്രി—നെടുങ്ങനാട്ടു.
ബി. കമാരൻനായർ—തെന്മലപ്പുറം.
ഡി. കറിയൻ—അഞ്ചിങ്ങൽ.
പി. ബാപ്പു—വൈത്തിരി.

#### b. വടക്കേ മലയാളം.

ഇട്ട്യെര. ബി. എ—തലശ്ശേരി. അനന്താസ്വാമി അയ്യർ. ബി. എ., ബി. എൽ.—പയ്യനാട്ടു.
എ. കണ്ണൻ നമ്പിയാർ—കവ്വായി. എ. ചാത്തു നമ്പിയാർ—വടകര.
ബി. സി. റൊസാറിയോ—കണ്ണൂർ.

## III. പൊലീസ്സ് ഡിപ്പാൎട്ടമെണ്ട്.

മലയാം പൊലിസ്സ് സുപ്രിൻഡെണ്ട്—മേജർ എഫ് ഹോൾ Major F. Hole.
തലശ്ശേരി അസിസ്റ്റാന്ത് പൊലീസ്സ് സുപ്രിൻഡെണ്ട്
ബ്രൌൻ സായ്പ് .Brown Esq.
മലപ്പുറം അക്ടിങ്ങ് പൊലീസ്സ് സുപ്രിൻഡെണ്ട്
ഹെഡ്ഫീൽഡ് സായ്പ് Hadfield Esq.
പാലക്കാട്ടു പൊലീസ്സ് സുപ്രിൻഡെണ്ട്
എച്ച്. ഡി. റൊബിൻസൻസായ്പ് H. D. Robinson Esq.
പൊലീസ്സ് ഹെഡ്കപാൎട്ടർ ഇൻസ്പെക്ടർ. ഇ. രാമൻ.

ജെ. എൻ. മൊൻക്രുറെയിട്ടു—എക്കൌണ്ട് ഇൻസ്പെക്ടർ.
ചെറുക്കുട്ടിനായർ—അക്ടിങ്ങ് സ്കൂൾ ൟ
അഹമ്മത ഗുരുക്കൾഖാൻ ബഹഡൂർ ഏറനാട്ടു ൟ
ബാപ്പു—ചേർണ്ണാട്ടു ൟ
കെ. പി. അബ്ദുള്ള ഗുരുക്കൾ—അങ്ങാടിപ്പുറം ൟ
രാമൻ നായർ—ചെപ്പുളശ്ശേരി ൟ
പി. ഇ. ഡിക്രൂസ്സ്—പാലക്കാട്ടു ൟ
രാമനുണ്ണിനായർ—ആലത്തൂർ ൟ
സ. ഡി. അബ്ദുൾഖാദർ—കൊച്ചി ൟ
പി. കൃഷ്ണമേനോൻ—പൊന്നാനി ൟ
കെ. കൃഷ്ണമേനോൻ—ചാവക്കാട്ടു ൟ
പി. ഗോപാലമേനോൻ—വെട്ടത്തുപുതിയങ്ങാടി ൟ
മ. ഗൊൻസാൾവിസ്—വൈത്തിരി ൟ
ഇട്ട്യാരിച്ചൻ നായർ—മാനന്തവാടി ൟ
കണ്ണക്കുട്ടി പണിക്കർ—കോട്ടയം ൟ
ടി. കേളപ്പൻ—തലശ്ശേരി ൟ
ടി. ഗ്രിയെർസൻ—കണ്ണൂർ ൟ
യു. രാമുണ്ണി—തളിപ്പറമ്പു ൟ
മുത്തു അയ്യൻ—വടകര ൟ
മഞ്ജുനാഥപ്രഭു—കോവില്ക്കണ്ടി ൟ
ജെ. സി. നീൽ—കോഴിക്കോട്ടുതാലൂക് ൟ
ആർ. എം. ലഫ്രനെസ്സ്—കോഴിക്കോട്ടു പട്ടണം ഇൻസ്പെക്ടർ.

## IV. എഡ്യുക്കേഷൻ ഡിപ്പാർട്ടുമെണ്ട്.

ഇസ്കൂൾഇൻസ്പെക്ടർ മിസ്റ്റർ Monro. M. A., B. C. L.
ഇസ്കൂൾ ഡിപ്യൂട്ടിഇൻസ്പെക്ടർ. സെന്ട്രൽറേഞ്ച്—മിസ്റ്റർ ജെ. പി. ലൂവിസ്സ്.
ൟ സത്തറൻ റേഞ്ച്—ടി. മത്തായി.
ൟ നോർത്തറൻറേഞ്ച് പി. ഒ. പോത്തൻ

ഗവൎമ്മെണ്ട് കോലെജ് ഹെഡ്മാസ്റ്റർ ഡബ്ലിയു. സ്കോൺസ സായ്പ് W. Sconce Esq. B. A.
മിഷൻ ഹൈസ്കൂൾ ഹെഡ്മാസ്റ്റർ—എം. ശങ്കരൻ നായർ ബി. എ.

## V. റജിസ്ട്രേഷൻ ഡിപ്പാർട്ടുമെണ്ട്.

### 1. തെക്കേ മലയാളം.

റജിസ്ത്രാർ—മ. രാ. രാ. വി. കൃഷ്ണസ്വാമി അയ്യൻ, ബി. എ.

| | | |
|---|---|---|
| വൈത്തിരി | സബ്ബ്റജിസ്ത്രാർ— | യു. പി. ദാമോദരൻ.. |
| ചെടവ്വായൂർ | ൟ | പി. രാമുണ്ണിമേനോൻ. |
| മഞ്ചേരി | ൟ | എൻ. കെ. ശാമുമേനോൻ. |
| കണ്ടുവട്ടി | ൟ | കെ. കോമൻനായർ. |
| തിരൂരങ്ങാടി | ൟ | ടി. ആർ. പരമേശ്വരൻപിള്ള. |
| പൊന്നാനി | ൟ | വി. നാരായണമേനോൻ. |
| വെട്ടത്തുപുതിയങ്ങാടി | ൟ | ടി. കെ. കണ്ണൻ, ബി. എ. |
| തൃത്താല | ൟ | പി. കെ. വൈദ്യലിംഗയ്യർ |
| ചാവക്കാട് | ൟ | തോമാസ്സ് |
| തൃപ്രയൂർ | ൟ | ഐ. ഗോപാലമേനോൻ. |

പാലക്കാട്ടു സബ്ബ് റജിസ്ത്രാർ—എം. ശങ്കരമേനോൻ. ഉ.
കൊട്ടമ്പായ്യൂർ ൊ ആർ. വി. സുബ്രഹ്മണ്യ അയ്യർ.
ആലത്തൂർ ൊ ഉണ്ണി ഏറാടി.
മങ്കര ൊ കൃഷ്ണമേനോൻ.
പെരുന്തൽമണ്ണ ൊ ദാമോദരപ്പണിക്കർ.
മണ്ണാറക്കാട്ട ൊ ടി. വി. കൃഷ്ണയ്യൻ, ബി. എ.
ചെറുപ്പുളശ്ശേരി ൊ കെ. നാരായണൻ നായർ.
കൊച്ചി ൊ കെ. സി. തോമാസ്സ്.
അഞ്ചിങ്ങൽ ൊ ടി. കുറിയൻ.
തങ്കശ്ശേരി ൊ ടി. ഡബ്ലിയൂ. ബബ്ബോസ.
താമരശ്ശേരി ൊ ശ്രദ്ധാ ചന്ദ്രൻ.
മലപ്പുറം ൊ പി. സി. ഡി. കൊൻസെസ്സൊ.
വണ്ടൂർ ൊ പി. കുഞ്ഞായൻ.

## 2. വടക്കെമലയാളം.

റജിസ്ത്രാർ—മ. രാ. രാ. ടി. സി. രൈറു കുറുപ്പു.
തളിപ്പറമ്പു സബ്ബ് റജിസ്ത്രാർ—കെ. കൃഷ്ണൻ.
കണ്ണൂർ ൊ ഇ. അമ്പുനായർ.
അഞ്ചരക്കണ്ടി ൊ യു. ചന്തൻ.
കൂത്തുപറമ്പു ൊ ടി. കൃഷ്ണയ്യൻ.
വടകര ൊ നാരായണയ്യർ.
നാദാപുരം ൊ ശങ്കരപ്പണിക്കർ.
കോവില്ക്കണ്ടി ൊ ടി. എസ്. കൃഷ്ണ അയ്യർ, ബി. എ.
പയ്യോളി ൊ സി. രാമുണ്ണിമേനോൻ, ബി. എ.
മാനന്തവാടി ൊ ഡിക്രൂസ്സ്.
പഴയങ്ങാടി ൊ എൻ. കുട്ടിയാലി.

## VI. മെടിക്കൽ ഡിപ്പാർട്ടുമെണ്ട്.

ഡിസ്ത്രിക്ട് സെർജിയൻ (കോഴിക്കോട്ടു)
സെർജൻ മേജർ ഡി. എച്ച്. കുക്, എം. ബി. Surgeon Major D. H. Cook, M. B.
അസ്സിഷ്ടാണ്ട സർജൻ. സി. ഏ. ലഫ്രനേയിസ്സ് എൽ. എം. എസ്സ്. Assistt. Surgeon Lafrenais L. M. S.
സിവിൽസെർജൻ (കൊച്ചി)
സെർജൻമേജർ ഡബ്ലിയു. എച്ച്. മോർഗൻ Surgeon Major W. H. Morgan.
സിവിൽസെർജൻ (തലശ്ശേരി)
സെർജൻ ബ്രൌണിങ്ങ Surgeon Browning
സിവിൽസെർജൻ (കണ്ണൂർ)
സെർജൻ എസ്. സി. സർക്കീസ് Surgeon S. C. Sarkies.

## VII. പോസ്തൽ ഡിപ്പാർട്ടുമെണ്ട്.

കോഴിക്കോട്ടു പോസ്തആപ്പീസ്സ് സുപ്രിൻഡെണ്ട്—ഡബ്ലിയു. ബുഷ് W. Bush (Ag.)
പോസ്തആപ്പീസ്സ് ഇൻസ്പെക്ടർ—പെരെറ. (Ag.)
കോഴിക്കോട്ടു പോസ്തുമാസ്റ്റർ—ഡബ്ലിയു. ജി. റയിററ്.
തലശ്ശേരി ,, പൌൽ.
കൊച്ചി ,, . . . . . മതാമ്മ.
കണ്ണൂർ സബ്ബ്പോസ്തുമാസ്റ്റർ—ടി. അന്തോൻ.
പാലക്കാട് ,, ടി. വീരസ്വാമിപ്പിള്ള.
വൈത്തിരി ,, എ. ബി. മെൻറൊണ്സ്.
മാനന്തവാടി ,, ടി. ഡബ്ലിയു. ബൌട്ട്.

യജമാനന്മാരേ, നിങ്ങൾക്കും സ്വൎഗ്ഗങ്ങളിൽ യജമാനൻ ഉണ്ടു
എന്നറിഞ്ഞു ദാസൎക്കു ന്യായവും സാമ്യവുമായതിനെ
കൊടുപ്പിൻ. കൊലൊ. ൪, ൧.

## 28, 29, 30, 31 ദിവസങ്ങൾ ഉള്ള മാസങ്ങളിൽ 1 ഉറുപ്പിക മുതൽ 500 ഉറുപ്പികവരേ ശമ്പളം ഉള്ളവൎക്കു മാസംപ്രതി ഓരോ ദിവസത്തിന്നു എത്ര ഉറുപ്പിക എത്ര അണ എത്ര പൈ വീഴും എന്നു കാണിക്കുന്ന പട്ടിക.

| മാസത്തിന്റെ ശമ്പളം | 28 ദിവസങ്ങൾ ഉള്ള മാസം | | | 29 ദിവസങ്ങൾ ഉള്ള മാസം | | | 30 ദിവസങ്ങൾ ഉള്ള മാസം | | | 31 ദിവസങ്ങൾ ഉള്ള മാസം | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ഉറുപ്പിക | ഉ. | അ. | പൈ. | ഉ. | അ. | പൈ. | ഉ. | അ. | പൈ. | ഉ. | അ. | പൈ. |
| 1 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 7 | 0 | 0 | 6 | 0 | 0 | 6 |
| 2 | 0 | 1 | 2 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 |
| 3 | 0 | 1 | 9 | 0 | 1 | 8 | 0 | 1 | 7 | 0 | 1 | 7 |
| 4 | 0 | 2 | 3 | 0 | 2 | 2 | 0 | 2 | 2 | 0 | 2 | 1 |
| 5 | 0 | 2 | 10 | 0 | 2 | 9 | 0 | 2 | 8 | 0 | 2 | 7 |
| 6 | 0 | 3 | 5 | 0 | 3 | 4 | 0 | 3 | 2 | 0 | 3 | 1 |
| 7 | 0 | 4 | 0 | 0 | 3 | 10 | 0 | 3 | 9 | 0 | 3 | 7 |
| 8 | 0 | 4 | 7 | 0 | 4 | 5 | 0 | 4 | 3 | 0 | 4 | 2 |
| 9 | 0 | 5 | 2 | 0 | 5 | 0 | 0 | 4 | 10 | 0 | 4 | 8 |
| 10 | 0 | 5 | 9 | 0 | 5 | 6 | 0 | 5 | 4 | 0 | 5 | 2 |
| 11 | 0 | 6 | 3 | 0 | 6 | 1 | 0 | 5 | 10 | 0 | 5 | 8 |
| 12 | 0 | 6 | 10 | 0 | 6 | 7 | 0 | 6 | 5 | 0 | 6 | 2 |
| 13 | 0 | 7 | 5 | 0 | 7 | 2 | 0 | 6 | 11 | 0 | 6 | 9 |
| 14 | 0 | 8 | 0 | 0 | 7 | 9 | 0 | 7 | 6 | 0 | 7 | 3 |
| 15 | 0 | 8 | 7 | 0 | 8 | 3 | 0 | 8 | 0 | 0 | 7 | 9 |
| 16 | 0 | 9 | 2 | 0 | 8 | 10 | 0 | 8 | 6 | 0 | 8 | 3 |
| 17 | 0 | 9 | 9 | 0 | 9 | 5 | 0 | 9 | 1 | 0 | 8 | 9 |
| 18 | 0 | 10 | 3 | 0 | 9 | 11 | 0 | 9 | 7 | 0 | 9 | 3 |
| 19 | 0 | 10 | 10 | 0 | 10 | 6 | 0 | 10 | 2 | 0 | 9 | 10 |
| 20 | 0 | 11 | 5 | 0 | 11 | 0 | 0 | 10 | 8 | 0 | 10 | 4 |
| 21 | 0 | 12 | 0 | 0 | 11 | 7 | 0 | 11 | 2 | 0 | 10 | 10 |
| 22 | 0 | 12 | 7 | 0 | 12 | 2 | 0 | 11 | 9 | 0 | 11 | 4 |
| 23 | 0 | 13 | 2 | 0 | 12 | 8 | 0 | 12 | 3 | 0 | 11 | 10 |
| 24 | 0 | 13 | 9 | 0 | 13 | 3 | 0 | 12 | 10 | 0 | 12 | 5 |
| 25 | 0 | 14 | 3 | 0 | 13 | 10 | 0 | 13 | 4 | 0 | 12 | 11 |
| 26 | 0 | 14 | 10 | 0 | 14 | 4 | 0 | 13 | 10 | 0 | 13 | 5 |
| 27 | 0 | 15 | 5 | 0 | 14 | 11 | 0 | 14 | 5 | 0 | 13 | 11 |
| 28 | 1 | 0 | 0 | 0 | 15 | 5 | 0 | 14 | 11 | 0 | 14 | 5 |
| 29 | 1 | 0 | 7 | 1 | 0 | 0 | 0 | 15 | 6 | 0 | 15 | 0 |
| 30 | 1 | 1 | 2 | 1 | 0 | 7 | 1 | 0 | 0 | 0 | 15 | 6 |
| 35 | 1 | 4 | 0 | 1 | 3 | 4 | 1 | 2 | 8 | 1 | 2 | 1 |
| 40 | 1 | 6 | 10 | 1 | 6 | 1 | 1 | 5 | 4 | 1 | 4 | 7 |
| 45 | 1 | 9 | 9 | 1 | 8 | 10 | 1 | 8 | 0 | 1 | 7 | 8 |
| 50 | 1 | 12 | 7 | 1 | 11 | 7 | 1 | 10 | 8 | 1 | 9 | 10 |
| 100 | 3 | 9 | 2 | 3 | 7 | 2 | 3 | 5 | 4 | 3 | 3 | 7 |
| 200 | 7 | 2 | 3 | 6 | 14 | 4 | 6 | 10 | 8 | 6 | 7 | 3 |
| 300 | 10 | 11 | 5 | 10 | 5 | 6 | 10 | 0 | 0 | 9 | 10 | 10 |
| 400 | 14 | 4 | 7 | 13 | 12 | 8 | 13 | 5 | 4 | 12 | 14 | 5 |
| 500 | 17 | 13 | 9 | 17 | 3 | 10 | 16 | 10 | 3 | 16 | 2 | 1 |

| | ഉ. | അ. | പൈ. |
|---|---|---|---|
| സങ്കീൎത്തനങ്ങൾ........ | 0 | 2 | 0 |
| പവിത്രലേഖകൾ ...... | 0 | 8 | 0 |
| ക്രിസ്തുസഭാചരിത്രം...... | 1 | 0 | 0 |
| മശീഹയെകുറിച്ചുള്ള വാഗ്ദത്തങ്ങളും അതിന്റെ നിവൃത്തിയും .......... | 0 | 4 | 0 |

## ശാലാപുസ്തകങ്ങളും ഇത്യാദി.

| | ഉ. | അ. | പൈ. |
|---|---|---|---|
| മലയാള ഇംഗ്ലിഷ് അകാരാദി | 1 | 4 | 0 |
| ഇംഗ്ലിഷ് മലയാളം ,, | 2 | 0 | 0 |
| മലയാളഭാഷാവ്യാകരണം.. | 1 | 8 | 0 |
| ഗാൎത്തുവേററു സായ്പു ചമെച്ച മലയാള വ്യാകരണസംഗ്രഹം .... ....... | 0 | 0 | 9 |
| മൂന്നാംപാഠപുസ്തകം ..... | 0 | 4 | 0 |
| മലയാള ഇംഗ്ലിഷ് ഭാഷാനിഘണ്ടു ........... | 7 | 0 | 0 |
| കേരളപ്പഴമ .......... | 0 | 6 | 0 |
| കേരളോല്പത്തി ........ | 0 | 4 | 0 |
| മലയാളരാജ്യം ചരിത്രത്തോടു കൂടിയ ഭൂമിശാസ്ത്രം .... | 0 | 4 | 0 |
| ഡങ്കൻസായ്പിന്റെ ഭൂഗോള | 0 | 2 | 0 |
| ശാസ്ത്രസംക്ഷേപം രണ്ടാം ഭാഗം യൂറോപ്പ് ...... | 0 | 2 | 0 |
| പഞ്ചതന്ത്രം .......... | 0 | 8 | 0 |
| വലിയ പാഠാരംഭം ...... | 0 | 2 | 0 |
| മോസ് സംസ്ഥാനം...... | 0 | 3 | 0 |

| | ഉ. | അ. | പൈ. |
|---|---|---|---|
| മലയാള ഇംഗ്ലിഷ് ഭാഷാന്തരകാരി............ | 0 | 4 | 0 |
| ഇന്ത്യാചരിത്രസാരാംശം... | 0 | 3 | 0 |
| ഗോവസൂരി എന്ന വസൂരികീറിവെക്കുന്നതിനെ കുറിച്ചു ചോദ്യോത്തരം...... | 0 | 2 | 0 |
| ഒന്നാം രണ്ടാം പാഠപ്രമാണങ്ങളും സൂചകങ്ങളും കൂടിയ മലയാള പാഠമാല..... | 0 | 0 | 6 |
| മൂന്നാം പാഠപ്രമാണവും സൂചകങ്ങളും കൂടിയ മലയാള പാഠമാല .......... | 0 | 0 | 9 |
| നാലാം പാഠപ്രമാണവും സൂചകങ്ങളും കൂടിയ മലയാള പാഠമാല......... | 0 | 3 | 0 |
| സൂചകങ്ങളോടു കൂടിയ മലയാളപാഠമാല ....... | 0 | 4 | 0 |
| Garthwaite's Translator .. | 0 | 3 | 0 |
| കത്തു മുതലായ രീതികളോടു കൂടിയ ഇംഗ്ലിഷ് മലയാള സംഭാഷണങ്ങൾ ..... | 0 | 10 | 0 |
| രണ്ടാം തരത്തിൽ കെട്ടിയതു | 0 | 12 | 0 |
| പാഠമാല ............ | 0 | 2 | 0 |
| ഭൂഗോളശാസ്ത്രം ........ | 0 | 6 | 0 |
| ഇന്ത്യാചരിത്രം ........ | 0 | 8 | 0 |
| ശിശുപരിപാലനം അമ്മയച്ഛന്മാൎക്കും ഗുരുനാഥന്മാൎക്കും ആയിട്ടുള്ള സൂചകങ്ങൾ. | 0 | 1 | 6 |
| ശരീരശാസ്ത്രം ......... | 0 | 8 | 0 |
| പ്രകൃതിശാസ്ത്രം ........ | 1 | 8 | 0 |

☞ മേൽ കാണിച്ചിരിക്കുന്ന പുസ്തകങ്ങളുടെ വിസ്താരമായ പട്ടികയും അതോടു കൂടെ ഇതുവരേ സൎക്കാർസംബന്ധമായി വിററുവന്ന സകലപുസ്തകങ്ങളുടെ വിവരമായ പട്ടികയും ആവശ്യമുള്ളവർ മംഗലപുരം പുസ്തകശാലയിലേക്കു എഴുതിച്ചോദിച്ചാൽ കിട്ടുന്നതാകുന്നു.

## ബാസൽമിശ്ശൻ അച്ചുക്കൂടത്തിൽനിന്നടിച്ചു പ്രസിദ്ധമാക്കിയ രചനകൾ വിററുവരുന്ന സ്ഥലങ്ങളാവിതു:

മംഗലപുരം—മിശ്ശൻ പുസ്തകഷാപ്പു.
കണ്ണനൂർ—മിശ്ശൻ ഷാപ്പു.
തലശ്ശേരി—മത്തീസൻ ഉപദേഷ്ടാവു.
ചോമ്പാല—ഷ്മാൽ ഉപദേഷ്ടാവു.
കോഴിക്കോടു—ഫീഗ് സായ്പവൎകൾ.
കടക്കൽ—കീൻലെ ഉപദേഷ്ടാവു.
പാലക്കാടു—ബഹ്മൻ ഉപദേഷ്ടാവു.
കോട്ടയം—ചൎച്ച് മിശ്ശൻ പുസ്തകശാല.

# THE

# MALAYALAM ALMANAC

## 1885

# മലയാള

# പഞ്ചാംഗം

## ൧൮൮൫

| | |
|---|---|
| ശാലിവാഹനശകം | ൧൮൦൬—൧൮൦൭ |
| വിക്രമാദിത്യശകം | ൧൯൪൧—൧൯൪൨ |
| കൊല്ലവൎഷം | ൧൦൬൧—൧൦൬൨ |
| മുഹമ്മദീയവൎഷം | ൧൩൦൨—൧൩൦൩ |
| ഫസലിവൎഷം | ൧൨൯൪—൧൨൯൫ |
| യഹൂദവൎഷം | ൫൬൪൫—൫൬൪൬ |
| ചാന്ദ്രമാനവൎഷം | താരണ—പാൎത്ഥിവ |

ക്രിസ്താബ്ദം ൩൬൫ നാൾ

MANGALORE
PRINTED AT THE BASEL MISSION PRESS